

बलि का बकरा

बकरा बलिदान का एक आवश्यक ही नहीं अत्यावश्यक अंग है, पर स्वर्ग जाते समय उसकी क्या परिस्थिति रहती है, इस पर किसी ने सिर खपाने की आवश्यकता नहीं समझी। यदि किसी ने दयार्द्र होकर उसे स्वर्ग का वादा किया, तो वह वस्तुतः स्वर्ग गया या जाता है, ऐसा कोई प्रमाण नहीं। स्वर्ग के बड़े बड़े वर्णन पुराणों में भरे पड़े हैं, पर ऐसा कहीं देखने में नहीं आया कि किसी स्वर्ग-नागरिक के सम्बन्ध में यह कहा गया हो कि वह बकरा था, और बलिपशु के रूप में मारे जाने के कारण वह स्वर्ग में गया था।

जनवादी विप्लव के अतिरिक्त सभी विप्लवों, अर्द्धविप्लवों, अधूरे विप्लवों में जनता ही बलि का बकरा होती है। हजारीलाल उसी जनता का एक व्यक्ति है। इस उपन्यास में उसी की कहानी कही गई है। हजारीलाल एक टाइप इस अर्थ में है कि हजारीलाल की तरह ऐसे सैकड़ों व्यक्ति आज भारत में हैं जिन्होंने देश भक्ति की पुकार पर अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया, पर जिनको आज कोई दो कौड़ी को भी पूछने को तैयार नहीं है, पर साथ ही हजारीलाल एक व्यक्ति भी है। उसका अपना निजी जीवन है और निजी समस्यायें हैं। इस प्रकार के ताने-बाने के द्वारा यह कहानी बनती है।

इस के लेखक के सम्बन्ध में इतना ही इस अवसर पर कहना यथेष्ट है कि वे कुल मिला कर बीस साल ब्रिटिश सरकार की जेलों में रह चुके हैं।

बलि का बकरा

लेखक

मन्मथनाथ गुप्त

१९५३

आशा प्रकाशन

११, तीमारपुर रोड

दिल्ली–८

आवरण का चित्र—श्रीमती माया गुप्त

वितरक—प्रगति प्रकाशन, ७/२१ दरियागंज, दिल्ली-६

प्रथम संस्करण—फरवरी १९५३

द्वितीय संस्करण—जून १९५३

मूल्य डेढ़ रुपया

आशा प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित और जगजीत ईलैक्ट्रिक प्रेस,

बाज़ार सीताराम, दिल्ली में मुद्रित।

१

हजारीलाल की माता का बहुत पहिले ही देहान्त हो गया था। न उस को अपनी माता की याद थी, और न उसके बड़े भाई सोनेलाल को ही उस की कुछ याद थी। उन के पिता को मरे भी पांच साल से अधिक हो गये थे। घर में इस समय केवल तीन ही प्राणी थे, हजारीलाल, उसका बड़ा भाई सोनेलाल और उस की भाभी होमवती या होमी।

यद्यपि जाति से ये सुनार थे, पर कुछ ऐसा संयोग हुआ कह लीजिये या सोनेलाल के पिता रामलागन को किसी बात से यह अजीब झक सवार हो गयी कि अच्छी चलती हुयी खानदानी दुकान होते हुये भी उसने दोनों बेटों को अंग्रेजी स्कूल में भर्ती करा दिया और उन्हें खानदानी पेशा बिल्कुल नहीं सिखलाया।

अपने पिता के जीवन काल में ही सोनेलाल एन्ट्रेंस तक पढ़ कर एक मामूली क्लर्क बन चुका था। बिरादरी वालों ने बहुत समझाया था कि रामलागन, यह तुम क्या कर रहे हो, चली चलायी दुकान है, लड़के को उस में बैठाओ, पर रामलागन के सिर पर किसी बात का भूत सवार था। उसने किसी की एक नहीं सुनी।

छोटा लड़का हजारीलाल अभी बहुत नीचे के दर्जे में पढ़ ही रहा था कि रामलागन चल बसे। सोनेलाल ने अपने भाई की पढ़ाई जारी रक्खी।

पर हज़ारीलाल मन्दबुद्धि न होते हुए भी पढ़ने लिखने में विशेष अच्छा नहीं था, और सोनेलाल ने क्लर्की में अपनी जो हालत देखी, तो पढ़ाई के सम्बन्ध में वह अपने पैतृक मोह को कायम न रख सका, फिर भी ईमानदारी से पिता की इच्छा को निभाता चला जा रहा था।

पर होमवती ने अपने पति की जो कुछ हालत देखी, और उस के साथ अपने भाई हेतराम की हालत की मन ही मन तुलना की, तो शिक्षा के प्रति उसके मन में कोई श्रद्धा उत्पन्न नहीं हुई। हेतराम अपनी दुकान से जो कुछ कमाता था, उस में सोनेलाल ऐसे पांच क्लर्कों की तनख्वाह आ जाती। एक यह बात थी, और दूसरी बात यह थी कि देवर अच्छा तगड़ा नौजवान हो चुका था, इसलिये उस का बैठ कर खाना, और निरंतर मटरगश्ती करते रहना उसे बहुत अखरता था। पर जब जब उसने सोनेलाल को इसके सम्बन्ध में कुछ समझाना चाहा, तब तब वह इसे टाल गया। पर होमवती भी माननेवाली नहीं थी। उसने वर्षों तक अथक रुप से समझाना जारी रक्खा।

जब सोनेलाल बहुत परेशान हो गया, तो वह एक दिन बोल बैठा — पढ़ेगा नहीं तो करेगा क्या ? पिता जी के बाद दुकान तो ठप्प हो गई, न मुझे काम आता है न हजारी को। पढ़ने में लगा हुआ है, तो फिर भी कुछ ढब से है, पढ़ना छुड़ा दिया तो अब जहाँ घंटा दो घंटा आवारागर्दी करता है, वहाँ दिन भर यही करेगा।......

सोनेलाल ने जो कुछ कहा यह समझ कर कहा कि यह राम-बाण है, इस पर होमवती को कुछ कहते नहीं बनेगा, पर उसने फौरन ही कहा मानो पहले से ही सोच रक्खा हो — ऐसी क्या मुसीबत है ? अगर काम सिखाना ही है तो हज़ारी को मेरे भाई के यहाँ भेज दो। वहाँ काम भी सीखेगा, और उस के सिर पर एक तगड़ा आदमी भी होगा। चार दिन में भैया आवारेपन की

उसकी आदत छुड़ा देंगे। भैया की दुकान में बिरादरी के कई लड़के पड़े रहते हैं, काम भी सीखते हैं और रोटियां भी खाते हैं।

सोनेलाल को यह बात बुरी मालूम हुई कि होमी यह समझती है कि इस समय हजारी के सिर पर कोई नहीं है। इस से उसके आत्मसम्मान को कुछ ठेस लगी, और वह कुछ टेढ़ाई के साथ बोला—पिताजी पढ़ाने बिठा गये थे, मैं उसे निभा रहा हूँ। रही घूमने-घामने की बात सो इस उम्र में सभी थोड़ा बहुत घूमते-घामते हैं। पर मैंने यह तो कभी नहीं सुना कि वह किसी कुचाल में है।

होमवती समझ गई कि इस समय कड़वी गोली काम नहीं करेगी, फिर भी कुछ अकड़ के साथ बोली—इस समय कोई कुचाल तो नहीं है, पर जब मटरगश्ती का रोग लग गया, तो कुचाल होते कितनी देर लगती है। भैया के यहां रहेगा तो काम भी सीखेगा और सब अलाय-बलाय से बचा रहेगा।

हेतराम से यों तो सोनेलाल का सम्बन्ध अच्छा था, पर इस प्रसंग में बार बार उस का इस रूप में उल्लेख उसे पसंद नहीं आया, बोला—हजारी नासमझ है, इसलिये मैं जो चाहे सो चला लूं, पर अभी बिगड़ खड़ा हो, तो मकान का आधा हिस्सा और तुम ने जिन गहनों को अपने बक्स में बंद कर रक्खा है, उन का आधा ले ले। अगर वह शाम के समय अखाड़े में जाकर कुश्ती लड़ता है, तो वह किसी और के बाप की कमाई पर नहीं करता, अपने ही बाप की कमाई पर मजे कर रहा है। इस से दूसरे का क्या?

होमवती और सब बातों को सहन कर जाती, पर गहनों के छिन जाने की धमकी से वह बहुत बिगड़ गई। पति पत्नी में इस बात को लेकर बहुत अधिक कहा सुनी हो गई, यहाँ तक कि उस शाम को घर में चूल्हा ही नहीं जला, और

पति पत्नी दोनों बिना खाये ही समय से बहुत पहले ही पड़ रहे।

हजारीलाल को इन बातों का कुछ पता नहीं था और कुछ संयोग ऐसा हुआ कि वह उस दिन रोज़ से एक घंटा देर में आया। आते ही उस ने घर में सन्नाटा देखा, तो सहम गया। उस ने समझा कि भैया या भाभी बीमार होंगे। वह दबे पांव भैया के कमरे के सामने जाकर 'भैया भैया' कर के पुकारने लगा। सोनेलाल भरा तो था ही, निकल आया और उसने क्रोध के आवेश में वह काम कर डाला जो उसने पिता की मृत्यु के बाद कभी नहीं किया था। उसने न आव देखा न ताव, भाई पर एक दम से पिल पड़ा और थप्पड़ घूंसा जो कुछ मारते बना मारा। मारता रहा, मारता रहा और तब तक दम नहीं लिया जब तक कि इस प्रकार के विस्फोट के अन्तिम अंजाम से घबड़ा कर होमवती बीच में नहीं पड़ी। उसके बीच में पड़ने के बाद भी हजारीलाल पर चार छः थप्पड़ और पड़ गये, जिनमें से दो एक होमवती पर भी पड़े। मार से निवृत्त कर दिये जाने के बाद सोनेलाल एक जंगली पशु की तरह चिल्ला चिल्ला कर बोला—निकल जा यहाँ से आवारा कहीं का। मुझे यह ख्याल था कि पिता जी चल बसे तो किसी तरह की सख्ती न करूँ, पर जितनी ही ढील देते गये, उतनी ही बदमाशी बढ़ती गई। अब तू बिल्कुल गुंडा हो गया। आवारा कहीं का।

हजारीलाल पर यह मार इतनी आकस्मिक रूप से पड़ी थी कि उसे आश्चर्य हो रहा था। अभी वह आश्चर्य के सोपान से क्षोभ के सोपान में नहीं पहुंच पाया था। वह अपने भाई को पिता की जगह पर और भाभी को मां की जगह पर मानता था। सच तो यह है कि वह अपनी मां को जानता ही नहीं था, फिर भी वह भाभी को उसी प्रकार मानता था जैसे वह समझता था कि मां को मानना चाहिये। इसी कारण जब सोनेलाल उस पर अकारण टूट पड़ा, तो उसे आश्चर्य ही हुआ। चुपचाप मार खाता गया, चाहता तो

हाथ उठाकर भैया को रोक लेता, पर आश्चर्य के कारण ऐसी शिथिलता आयी कि वह बुत की तरह पिटता रहा। जब सोनेलाल मार से निवृत्त हो कर गुंडा आदि कहने लगा, तब उसे होश हुआ। गुंडा? उसका आश्चर्य और भी बढ़ा, पर उस से कुछ बोला नहीं गया।

होमवती ने ही उत्तर दिया—जो कुछ भी हो, पर है तो वह अपना ही भाई। उसे नेक सलाह दोगे, सुधारोगे, सो नहीं जुट गये मार पीट में। और मार पीट भी इतनी कि खूनख़राबी पर उतर गये। जब तक मैं हूं तब तक मैं यहां यह सब नहीं होने दूंगी, मुझे मायके में छोड़ आओ फिर दोनों भाई आपस में बाली सुग्रीव का युद्ध करो। पहले तो ढील देंगे, और जब काम बिगड़ जायगा, तो उतर आयेंगे खूनख़राबी पर। यह कौनसा तरीका है?

इतने पर भी सोनेलाल का गुस्सा कम नहीं हुआ। पत्नी की बातों को अनसुनी करके उसने अपने भाई से कहा—कल से तुम्हारा स्कूल जाना बंद। कल अपना बिस्तर बांध कर हेतराम के यहां चले जाओ, वहीं पर रहोगे और काम सीखोगे। —कुछ ठहर कर अन्तिमता के लहजे में बोला—मैं तो समझता था कि आप पढ़ रहे हैं, और वहां गुंडई करते फिर रहे हैं। शिकायत सुनते सुनते कान पक गये।

इतना कहने के बाद उसे इच्छा हुई कि गुंडई के कुछ नमूने गिनावे, पर कोई बात याद नहीं आई, बोला—यहां समझते हैं शिक्षा हो रही है, और आप बीड़ी पीते फिरते हैं।

होमवती चाहती तो यही थी कि हजारी लाल हेतराम के यहाँ बिना तनख्वाह की नौकरी करे, पर वह यह नही चाहती थी कि इस प्रसंग में उसका उल्लेख हो। वह पीठ पीछे रहकर पति के कंधे पर से बन्दूक चलाना चाहती थी, और यह नहीं चाहती थी कि हजारीलाल यह समझे कि इस मार धाड़ में

या गाली शुक्ते में उस का भी कुछ हाथ है, इस कारण परिस्थिति को दूसरा रूप देने की दृष्टि से वह बोली—हेतराम क्यों ? यहीं किसी दूकान में काम सीखे तो क्या हर्ज है ? काम सीखने से मतलब है, न कि किसी ख़ास आदमी से।—कह कर कुछ जैसे सोच कर बोली—पर अपना आदमी अपना ही होता है। अपना आदमी जितने प्रेम से किसी काम को करेगा, दूसरा आदमी भला उस प्रेम से क्यों कुछ करने लगा ?

जो कुछ भी हो उसी दिन से हज़ारीलाल का स्कूल जाना छूट गया। पर होमवती की इच्छा के अनुसार वह उसके भाई के यहां काम सीखने नहीं गया। होमवती ने बहुत जोर डाला, पर हज़ारीलाल एक अड़ियल टट्टू की तरह अपनी ज़िद पर अड़ गया, और उस की भाभी ने घास और चाबुक दोनों दिखलाये, फिर भी वह टस से मस नहीं हुआ। सोनेलाल ने भाई का रुख देखकर इस मामले में अधिक ज़ोर नहीं लगाया, कम से कम होमवती का यही ख्याल रहा।

एक स्थानीय सोनार के यहां हज़ारीलाल काम सीखने लगा। पढ़ने लिखने में उसका विशेष जी नहीं लगता था, सोनारी में भी उसे कोई विशेष दिलचस्पी नहीं रही, पर ख़ानदानी सोनार होने के कारण उसे काम जल्दी-जल्दी आ गया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह जल्दी ही एक अच्छे कारीगर की सहायता से अपनी पैतृक दुकान को जारी कर सकेगा। अब पिता के ज़माने के औज़ारों की खोज होने लगी। हज़ारीलाल ने एक दिन उस बड़ी सन्दूक को खोला जिस में दूकान के बचे खुचे औज़ार रक्खे हुये थे। औज़ारों को निकालकर साफ़ कर लिया गया। मालूम हुआ कि दुकान शुरू करने के लिये काफ़ी औज़ार हैं। जब दुकान में काम बढ़ेगा, तो और औज़ार ख़रीद लिये जायेंगे। यों तो अब तक हज़ारीलाल के मन में सोनारी के प्रति कोई विशेष प्रेम नहीं था, पर जब उसने इन पैतृक औज़ारों को देखा और कल्पना नेत्रों से यह देखा कि वह एक दुकान

का मालिक बनकर बठा हुआ है, तो उसे एकाएक अपने काम में बड़ी दिलचस्पी हो गई।

उस दिन से वह मन लगा कर काम सीखने लगा। स्वभाव से वह कुछ घूमने फिरने वाला व्यक्ति था, इस कारण उसे सवेरे से लेकर रात आठ बजे तक ठुक-ठुक करना अखरता था। खैरियत यह थी कि यह दुकान सड़क के किनारे थी, और जिस जगह पर वह बैठता था वहां से वह सड़क पर आने जाने वाले लोगों को मजे से देख सकता था। पर सोनारी का काम ऐसा नहीं होता कि काम भी किया जाय, और सड़क के दृश्य भी देखे जांय। हां जब सड़क पर कोई बरात वगैरह निकलती थी, तो वह सिर उठा कर आंख फाड़-फाड़ कर उस ओर देखता था। फिर ठुक ठुक में लग जाता था।

दुकान पर काम सीखते हुये उसे कई महीने हो गये। जब वह काम बहुत कुछ सीख चुका, तो दुकान के मालिक ने उस की एक तनख्वाह बाँध दी। हजारीलाल ने घर जा कर इस की बात कही, तो होमवती ने इसे अपनी ही विजय समझी। देवर के चले जाते ही उसने सोनेलाल से कहा—देखा? मैंने पहिले ही कहा था कि इसे पढ़ना नहीं आयेगा, काम में लगाओ। सो वही बात ठीक निकली न? पढ़ता होता तो अभी आठवें में ही होता। दो साल और पढ़ता, तब कहीं एन्ट्रेंस में होता।—कह कर गड़े हुये मुर्दे को फिर उखाड़ती हुई बोली—मेरी बात मान कर भैया के यहां जाता, तो कब की तनख्वाह बंध गई होती।

यद्यपि यह प्रसंग पुराना हो चुका था, और सोनेलाल शुरू में इस मत का था कि उसका भाई हेतराम के यहां काम सीखे, पर इस बीच में इस बात को बार-बार याद दिला कर, तथा यह कह कर कि अब भी हेतराम के यहां जाने का समय है होमवती ने इस बातचीत को इतनी कड़वी बना दिया था

कि सोनेलाल ने मुंह बना कर कहा—पर हमें उसके रुपयों से क्या मतलब ? उस की शादी वगैरह में ये रुपये काम आयेंगे।—कह कर वह जैसे सुदूर भूत काल में पहुँच गया। बोला—पिताजी की यह साध थी कि हजारीलाल भी मेरी तरह ऊंची शिक्षा प्राप्त करे।

सोनेलाल एन्ट्रेंस को उच्चशिक्षा समझता था, उसने अपने पिता के निकट यह धारणा प्राप्त की थी। बोला—सोनारी के काम से उन्हें बहुत घृणा हो गई थी। कहते थे कि इस काम में आदमी कितना भी ईमानदार हो चोर ही समझा जाता है।

होमवती को यह बात याद आयी कि हेतराम को लोग अच्छा नही समझते। बोली—दुनियां चाहे जो कुछ कहे, इससे क्या आता जाता है। कौन कैसा है, इसे श्रीरामजी जानते है और उसे फल भी वैसा ही मिलता है। परमात्मा से कौन सी बात छिपी है ?

सोनेलाल ने बीच ही में बात काटते हुये कहा—यह तो खैर है ही। पर स्वर्ग और नरक तो मरने के बाद मिलता है। यहां तो सोनार, ग्वाला, कलवार, दर्जी बेईमान ही समझा जाता है।

बात यहीं तक पहुँची थी कि हजारीलाल उधर से कुयें पर जा रहा था। उसने भाई के अन्तिम वाक्य को सुना, और सोचता हुआ निकल गया। उसके मन में संदेह तो थे ही, अब भाई की बातों से वे पुष्ट हुये। नहाते नहाते उसने सोचा कि लोग जो ऐसा कहते हैं इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, क्यों कि वह रोज ही अपनी आंखों से यह देखता था कि किस प्रकार ग्राहकों की आंखों में धूल झोंकी जाती है। बहुत बड़ा चालाक आदमी भी सोनार की दुकान में आकर बेवकूफ बन जाता है।

नहा धो कर वह चौके में पहुँचा तो सोनेलाल ने पूछा—कितने दिनों में तुम अलग दुकान खोलने लायक हो जाओगे ?

हजारीलाल ने कौर चबाते हुये कहा—अभी भैया कुछ दिन रुको। कुछ काम सीखना अभी बाकी है।

—पर तुम तो कहते थे कि तुम्हें सब काम आ गया है ?

—काम तो सभी आ गये, पर अभी अभ्यास करना बाकी है।

असली बात यह थी कि अभी-अभी जो उसने नहाने जाते समय भाई के मूँह से बात सुनी थी, उससे वह शंकित हो गया था, और अलग दुकान खोलने की बात को जहां तक हो सके टालना चाहता था। बोला—सब काम अच्छी तरह बिना सीखे दुकान खोलूंगा, तो लोग पिता जी को बुरा कहेंगे। वह इस इलाके के सब से अच्छे कारीगर समझे जाते थे, और मैं उनका बेटा हो कर कैसे खराब काम कर सकता हूँ ?

—सो कोई जल्दी थोड़े ही है। चार छः महीने में तुम्हारी तनख्वाह से जो पैसा जमा होगा, उससे दुकान और मज़े में खुलेगी। हमारी इच्छा है कि तुम अपनी दुकान में दो एक शोकेस रक्खो। पिता जी की बड़ी इच्छा थी कि वे अपनी दुकान में शोकेस रक्खें।

दोनो भाई खाना खाते-खाते जैसे बीच में एक क्षण के लिये रुक गये।

—हां—हजारीलाल ने कहा। फिर वह कौर तोड़ने लगा। उसके चेचक के दागवाले चेहरे में लगी हुई छोटी आंखें जैसे किसी समस्या को सुलझा रही थीं। उसके कानों में एक तरफ़ तो भाई की बातें गूंज रही थीं कि सोनार, ग्वाला, कलवार, दर्जी ईमानदार भी हो तो भी बेईमान समझा जाता है, दूसरी

तरफ़ शोकेस से सजी हुई सोनारी की दुकान उसके कल्पना नेत्रों के सामने नाच रही थी। वह बहुत असमंजस में पड़ गया, और जैसा कि असमंजस में होता है, उसने शुतुरमुर्ग की तरह सोनारी की अप्रेंटिसी में अपने को दबा रखना ही उचित समझा।

पर दो महीने भी बीत नहीं पाये थे कि सारा असमंजस दूर हो गया।

एक दिन दुकान के मालिक से हज़ारीलाल की चख़चख़ हो गई। हज़ारीलाल को दो भर का एक काम दिया गया था। उसने उसे बहुत अच्छी तरह करके मालिक के हाथ में रख दिया। पहिली ही बार उसे सोने का इतना बड़ा काम दिया गया था। वह आशा करता था कि मालिक उस की प्रशंसा करेगा पर जब मालिक ने कुछ नहीं कहा, तो वह अपनी खूंटी पर वापस जाने लगा।

दूकान के मालिक ने पीछे से बुला कर कहा—दो भर का काम था न ?

—हां,—ठिठक कर खड़े होते हुये हजारीलाल ने कहा, फिर बोला—तौल लीजिये।

मालिक ने कुछ हिचकिचाते हुये कहा—हां सो तो ठीक है, पर इतने बड़े काम में से कुछ बचाया नहीं ?

हज़ारीलाल ने आश्चर्य के साथ कहा—बचाने की तो कोई बात नहीं थी। मुझे तो ऐसा करने के लिये किसी ने नहीं कहा।

दुकान में अन्य छः सात कारीगर थे। इस समय तक सब के कान खड़े हो चुके थे। सब टकटकी बांध कर कान खड़े कर के उधर ही देखने तथा सुनने लगे। मालिक ने एक साथ इतनी आंखें अपने ऊपर लगी हुई देखीं तो वह

एक बार सिटपिटा गया पर ऐसा केवल एक क्षण के लिये हुआ। इन में से सभी उसके आश्रित तथा नौकर थे। ये कर ही क्या सकते थे। ये सभी उस चोरी के साझेदार थे। उनसे कौन सी बात छिपी हुई थी। इस लिये उसने फौरन ही आखें दिखलाते हुये तेवर बदल कर कहा--कोई दुध मुंहे बच्चे हो कि नहीं जानते हो कि कैसे क्या होता है? जिस का जितना हक होता है, वह उतना ले लेता है। इस में कोई छिपी बात नहीं थी। यहां हम किसी ग्राहक को ठगते नहीं हैं, अपना हक तोले में रत्ती से ज्यादा लेने को गौ का मास समझते हैं। कई तो चौथाई उड़ा देते हैं, पर यहां तो परलोक का भय है, ईश्वर से डरते हैं। मेहनत बहुत पड़ती है, और लोग बनवाई बहुत कम देते हैं। फिर हम क्या करें?—कह कर उसने ऐसा मुंह बनाया मानो उस पर बड़ी मजबूरी हो, और उसके साथ बहुत अन्याय हुआ करता है।

हज़ारीलाल को जैसे काठ मार गया। वह ऐसी बात की आशा नहीं करता था। अगले ही क्षण वह बोला—मुझसे यह न होगा।—कहकर वह पहिले से कुछ अकड़ कर खड़ा हो गया।

—क्या नहीं होगा? सोनारी?—यह प्रश्न कुछ हेकड़ी में पूछा गया था। भला मालिक को किस का डर था? एक हजारीलाल जायगा तो उसे दो मिल जायेंगे।

—सोनारी नही, चोरी—आंख उठाकर अकड़ के साथ हजारीलाल ने कहा।

दुकान में पूरा सन्नाटा था। हथौड़ियां, धौंकनियां सब चुप थीं। एक सोनार की दूकान में एक सोनार के मुंह से ऐसी बात सुनी नहीं गई थी। थोड़ी देर तक मालिक भी सन्नाटे में रहा। सब की सांसों की आवाज़ सुनाई पड़ रही थीं। मालिक को एक अकाट्य युक्ति सूझ गई। बोला—बड़े ईमानदार

के दुम बनते हो। कभी यह भी किसी से पूछा कि तुम्हार बाप कैसे मकान बनवा गये।——कहकर वह अपनी बातों को जोर पहुँचाने के लिये ठहाका मार कर हंसा, उस हंसी में व्यंग कूट-कूट कर भरा था।

यह बात हजारीलाल को बहुत बुरी लगी, बोला——वे तो अपने बेटों को इसे से अलग रखना चाहते थे। मैंने ही अपनी इच्छा से यह काम सीखना शुरू किया।

——हां, हां सब जानता हूं। जब काम बुरा है तो फिर इस में आये क्यों? तुम्हारे भाई जो तनख्वाह पाते हैं, हमारे यहां के हरीराम और नारायण उससे अधिक पाते हैं।

दुकान का मालिक गण्यमान्य व्यक्ति था, और सोनारों में तो वह सरपंच था, इसलिये हजारीलाल ने झगड़े को अधिक नहीं बढ़ाया। वह वहां से चुपचाप घर चला आया, घर जाने का समय भी हो गया था। वह घर जाकर नहाने में जुट गया।

खाते समय रोज की तरह दोनों भाइयों में भेंट हुई। बात यह है कि दफ्तर करीब होने के कारण सोनेलाल प्रतिदिन दोपहर के समय खाना खाने आता था। खाते समय एकाएक हजारीलाल ने भैया से कहा——अब मैं अपनी दुकान खोलूंगा।

——पर तू तो कहता था कि अभी सीखने में कई महीने लगेंगे——आश्चर्य के साथ सोनेलाल ने कहा।

दुकान में जो-जो बातें हुई थीं हजारीलाल ने उसे कह सुनायीं। होमवती भी देवर की बातें ध्यान से सुन रही थी। सब बातें सुन चुकी तो उसे बड़ी निराशा हुई। वह तो मन में कुछ और ही उमंग रखती थी। पर यहां तो देवर की बातों से सारी आशाओं पर पानी फिर गया। एकाएक

बोल उठी—अपना हक तो लेना ही चाहिये। इस में कौन बुराई है ? सभी ऐसा करते हैं।—कहकर उसने झम से कलछुल को एक थाली पर पटक दिया, और बोली—जो कोई इतना धर्मात्मा बने, तो उसे चाहिये कि वह साधू फ़कीर हो जाय। गृहस्थों के लिये यह सम्भव नहीं कि वे अपना वाजिब हक छोड़ दें।

पर सोनेलाल ने इस सम्बन्ध में हाँ ना कुछ नहीं कहा। इस से निरुत्साह न हो कर होमवती अपनी बात बार बार कहती रही। दुकान तो खुलनी ही थी, अब उस में जल्दी होने लगी। एक हफ्ते के अन्दर हजारीलाल की दुकान खुल गई। दुकान पहले ही से अच्छी चलने लगी, क्योंकि इस बीच में कस्बेवालों को ही नहीं, दूर दूर तक आस पास के देहातों में भी यह ख़बर फैल चुकी थी कि हजारीलाल ने किस कारण उस दुकान से नौकरी छोड़ दी।

यद्यपि सोनेलाल ने हजारीलाल द्वारा इतनी जल्दी दुकान खोले जाने पर कुछ नहीं कहा था, फिर भी वह एक हद तक हजारीलाल की तनख्वाह पर निर्भर था। इस कारण मन में कुछ दुखी था। पर जब उसने अपने मकान के नीचे के हिस्से में अति परिचित ठुक ठुक की आवाज़ सुनी, तो उसे अपने पिता के युग की याद हो गई। उसकी आँखें भर आयीं, और उसे अच्छा मालूम हुआ। पढ़ा लिखा होने के कारण वह अपने को कुल का गौरव समझता था, पर इस समय ऐसा मालूम दिया कि जैसे वह उस कुल का है ही नहीं, और उसका छोटा भाई ही कुल की परम्परा की रक्षा कर रहा है। वह अपने को छोटा अनुभव करने लगा, पर इस से उसे दुःख नहीं सुख ही हुआ। बात यह है कि हजारीलाल ने सब से कह दिया था कि दुकान उस की नहीं सोने लाल की है। इस के अतिरिक्त उसने देखा कि दुकान शुरू से ही खूब चलने लगी, यहां तक कि हजारीलाल को जल्दी ही दो कारीगर रखने पड़े, फिर तो उस के मन में किसी प्रकार का कोई पछतावा नहीं रहा।

जब दुकान साल भर से अधिक समय चल चुकी, तो हजारीलाल ने अपने बड़े भाई से एक दिन कहा—भैया अब अपनी दुकान आप संभाल लो। अपनी नौकरी छोड़ दो। मुझ से अकेले अब दुकान नहीं संभलती।

—मुझे तो कुछ काम भी नहीं आता, मैं क्या करूंगा ?

हजारीलाल ने कहा—काम तो सब मैं ही करूंगा, पर तुम कुछ हिसाब वगैरह लिख दिया करो। पढ़े लिखे आदमी हो, बैठने से जरा रोब पड़ेगा।

पर होमवती ने इस प्रस्ताव को उचित नहीं समझा। उसके मन में कोई और ही बात थी। खबर मिली थी कि हेतराम की दुकान बंद हो गई। उसे यह तो पता नहीं लगा था कि उसकी दुकान इस कारण बंद हो गई थी कि उस ने एक ग्राहक का सोना मार दिया था, और वह ग्राहक इस मामले को पुलिस तक ले गया था। होमवती चाहती थी कि हेतराम आकर यहीं रहे। सोनेलाल अपने काम में बना रहा।

सात दिन के अन्दर ही हेतराम अपने बहनोई के यहां आ गया। किसी को यह पता नहीं लगा कि वह बहन का जरूरी पत्र पा कर आया है। आते ही दो दिनों के अन्दर ही वह समझ गया कि हजारीलाल की दुकान बहुत अच्छी चल रही है। बहिन की कृपा से दुकान कैसे खुली इस का भी सारा किस्सा हेतराम को मालूम हो गया। सब कुछ देख सुन कर वह बोला—मालूम होता है कि हजारीलाल बड़ा चघड़ है। जब इसने दुकान के सारे काम सीख लिये तो अपनी नामवरी और ईमानदारी का ढिंढोरा पिटवाने के लिये बिरादरी के सरपंच से लड़ पड़ा।—कहकर कुछ देर रुक कर बोला—देखने में बड़ा भोला लगता है, पर है बड़ा घुटा हुआ। कहता क्या है कि दुकान भैया की है। बहनोई साहब सीधे सादे हैं। वे इस की बातों को क्या समझें। कहीं यह चकमा

देकर सारी जायदाद हथिया न ले। ऐसे भोले भाले दिखने वाले लोग बड़े ही खतरनाक होते हैं।

होमवती यह नहीं दिखाना चाहती थी कि वह भाई से कम होशियार नहीं है। बोली—मैं तो इसे हमेशा से जानती हूं। पर तुम्हारे बहनोई साहब भाई पर जान देते हैं। बड़ी मुश्किलों से इसका स्कूल छुड़ाया, नहीं तो उन की तो इच्छा थी कि यह और आगे पढ़े।

हेतराम ने घृणा के साथ कहा—पढ़ने लिखने से क्या होता है ? जितना पढ़े लिखे लोग महीने दो महीने में कमायेंगे, उतना तो यहां अपने हुनर से एक दिन में कमा सकते हैं। बस ईश्वर की इच्छा से दांव लगना चाहिये। —कह कर उसे याद आया कि वह जिन बातों को कह गया, वे सोनेलाल के लिये अच्छी नहीं हैं, क्योंकि वह भी पढ़े लिखों की श्रेणी में आता है। इसलिये सुधार कर बोला—बस पढ़ने लिखने से एक बात होती है, वह यह कि लोग इज्जत करते हैं।

इस के बाद भाई और बहिन में बड़ी देर तक बात चीत होती रही। हेतराम ने अंत में यह कहा—बहनोई साहब जैसे भोले भाले हैं, इसे देखते हुये मेरा जी चाहता है कि साल छः महीना यहीं रहूं, और फिर बहनोई साहब का काम संभाल कर चला जाऊंगा। पास रहेगा तो लाख चालाक बने, हजारी की एक नहीं चलेगी—कहकर वह कुछ रुक कर बोला—मैं हजारी की दुकान में ही क्यों न जम जाऊं ? तुम कहोगी तो वह मना थोड़े ही कर देगा।

—मना कैसे करगा ? दुकान इनकी है, सारी पूंजी तो इनकी लगी हुई है।

—यही तो मैं भी कह रहा था।

होमवती और भी जोश में आकर बोली—अभी उस की उम्र ही क्या है ? उस के कहने पर या उसके विश्वास पर लोग थोड़े ही दस दस भर सोना और सेरों चांदी उसके पास छोड़ जाते हैं। यह तो तुम्हारे बहनोई साहब का इकबाल है। जो कहूंगी उन्हें उसको मानना पड़ेगा, उसे वे मानेंगे कैसे नहीं ? दुकान तो अपनी ही है।

नतीजा यह हुआ कि हेतराम वहीं टिक गया, और अनिच्छा होते हुये भी हजारीलाल ने उसे दुकान में काम करने दिया। कुछ दिनों के बाद हेतराम अपने बाल बच्चे भी ले आया, और ऐसे जम गया मानो वही घर का मालिक हो, और बाकी सब मेहमान हों।

२

१९३० का युग था। हज़ारीलाल के कानों में भी कुछ भनक पड़ जाती थी। आन्दोलन की तैयारी थी। इस क़स्बे में भी लोगों में जोश फैल रहा था। हज़ारीलाल का मन कभी कभी उचट जाता था, पर दुकान में इतना काम रहता था कि बाहरी बातें उस के मन के अन्तःपुर में दूर तक प्रवेश नहीं कर पाती थीं।

हेतराम घर में तो मालिक बन गया था, पर दुकान में उस की एक नहीं चलती थी। हज़ारीलाल उसे दो एक काम देकर ही अच्छी तरह जान गया था। उसे कभी कोई क़ीमती काम नहीं देता था। अधिकतर समय तो उसे वह दुकान में बैठा रखता था। हेतराम ने बहुतेरे पैंतरे बदले, पर हज़ारीलाल ने उसके सारे पेंच काट दिये।

एक दिन हेतराम ने उस से कहा—मुझे तुम निरे नौसिखिये समझते हो क्या? यह तो तुम्हें मालूम ही होगा कि मैं अपनी दुकान चलाता था। कोई बड़ा काम देकर तो देखो। तबीयत खुश कर दूंगा।

हज़ारीलाल ने हंसते हुये कहा—मैं तुम्हें नौसिखिया कब समझता हूं? मैं तो जानबूझ कर तुम्हें सख्त काम नहीं देता कि कहीं भाभी को मालूम हो कि मेरा भाई चार दिन के लिये आया, और उसके साथ ज्यादती हो रही है।

हेतराम को यह हंसी अच्छी नहीं लगी। वह उस हंसी में भाग न ले सका। बोला—मैं कोई मेहमान थोड़े ही हूं जो इस तरह तकल्लुफ करते हो।

एक दिन मेहमानी होती है, दो दिन मेहमानी होती है, और यहाँ महीनों से डटे हैं, फिर भी मेहमान ही बने हुये हैं।

हज़ारीलाल ने हंसते हुये, और दुकान भर के कारीगरों को सुनाते हुये कहा—यह तो अपने अपने मन पर है। तुम महीनों नहीं सालों तक यहाँ पड़े रहो, तो भी मैं तुम को मेहमान ही समझूंगा। काम करने आ जाते हो यह तुम्हारी मेहरबानी है, नहीं तो मैं तो कहता हूं कान तक न हिलाओ, और खूब खाओ पियो मौज करो। भैया के राज्य में किसी बात की कमी नहीं है।

इसी प्रकार हेतराम ने कई बार चेष्टा की, पर वह हज़ारीलाल को राज़ी न कर सका। वह घर का मालिक बन चुका था, पर उससे कुछ काम नहीं बनता था। असल में वह जिस मतलब से यहां टिका हुआ था, वह इस प्रकार व्यर्थ हो गया। हेतराम ने अंत में सोनेलाल के कान में बात पहुँचायी। सोनेलाल ने भाई को बुलाकर पूछा कि यह क्या मामला है ? उस पर हज़ारीलाल ने कोई लगाव छिपाव बिना रक्खे साफ़ साफ़ कह दिया—भैया दो एक दिन में ही मैं हेतराम महाशय की आदत जान गया। यहां तो ग्राहक की चीज़ को गौ का मास समझते हैं। जो कुछ ईमानदारी से मिल जाये, उसी को उचित समझते हैं। पर...........

हज़ारीलाल इतना ही कह पाया था कि उधर से होमवती, जो शायद खड़ी खड़ी सब बातें सुन रही थी, एकाएक सामने आ गयी, और बिना कुछ समझे बूझे एक दम चिल्ला कर बोली—हां, तुम बड़े दूध के धुले हुये हो और मेरे मायकेवाले सब बदमाश हैं। जैसे तुम्हारी करनी किसी से छिपी है ? शरम के मारे कुछ नहीं कहती कि देवर के खिलाफ़ क्या कहूं, पर तुम ने ईमानदारी का जामा पहिन कर कितना लूटा है, इसे तुम अपने दिल पर हाथ धर कर सोचो। हर समय भैया की दुकान इसलिये कहते रहते हो कि कहीं हिस्सा न देना पड़े। भैया हेतराम को क्या है ? उन्हें किसी बात की

कमी थोड़े ही थी ? मेरे ही कहने पर सब कुछ छोड़ छाड़ कर यहां रुक गये। वे यह चाहते हैं कि उनके बहनोई को कोई ठग न ले। मेरे भैया तुम्हारे पैसे पर थूक देते हैं—कह कर थू थू करके थूकने की आवाज की। फिर वह और भी अनाप शनाप बकने लगी।

दोनों भाई उसकी बातें सुन कर दंग रह गये। दोनों में से किसी ने उसका इतना उग्र रूप कभी नहीं देखा था। अभी यह बक झक हो ही रही थी कि स्वयं हेतराम आ गया। उसे देखकर होमवती और भी शेर हो गई। बोली—भैया ये लोग तुम्हें बेईमान समझते हैं। अगर तुममें रत्ती भर भी शरम है, तो फौरन यहां से चले जाओ, और मुझे भी अपने साथ लेते चलो।

सोनेलाल बड़े असमंजस में पड़ गया। किसे क्या कहे समझ में नहीं आ रहा था। वह कभी इसके मुँह की तरफ़ देख रहा था, कभी उसके मुँह की ओर। हेतराम बहिन के गुस्से को इस प्रकार खतरनाक धार में बहते देख कर बोला—बहिन पहिले समझ तो लो कि बात क्या है। मैं तो यह कभी नहीं मान सकता कि सोनेलाल जी मुझे बेईमान समझते हैं। रहे हज़ारीलाल सो उन की बातचीत भले ही अप्रिय हो, पर उनका दिल बहुत साफ़ है। जाने को तो मैं हर वक्त तैयार हूँ पर झगड़ा करके जाना नहीं चाहता। इसी लिये कह रहा हूं कि समझ लो।

असली बात यह थी कि हेतराम यहां से टलना नहीं चाहता था। उसे यहां आराम भी था और बेफ़िक्री भी थी। बहनोई का कोई बच्चा न होने के कारण होमवती अपने भतीजे भतीजियों की बड़ी सेवा करती थी। यहाँ सब का स्वास्थ्य सुधर गया था। काम कुछ नहीं था और खाना बढ़िया था।

होमवती और नाराज़ होती हुई बोली — समझो तुम जो कि अभी तीन महीने से आये हो। यहां तो समझते समझते उम्र बीत गई। असली बात

यह है कि जो बेईमान होता है, वह दूसरों को भी बेईमान समझता है।—कह कर उस ने एकाएक देवर को सम्बोधित करके कहना शुरू किया— तुम को तुम्हारे भाई ने सिर पर चढ़ा रक्खा है, तभी बढ़ बढ़ कर बातें करते हो। कोई और भाई होता, तो निकाल बाहर करता। मैंने अब तक बताया नहीं कि क्यों घर को फोडूं, पर अब बताती हूं कि जिस दिन से इस घर में आयी हूं, उसी दिन से ये हज़रत मेरे पीछे पड़े रहते हैं। पर मैं कहती रही कि लड़क-बुद्धि है, जाने दो। पर अब रहा नहीं जाता। मैंने भाई और भौजाई को इसी लिये बुलाकर घर पर रक्खा कि ये तो कुछ देखते सुनते नहीं, मेरी रक्षा ये लोग करेंगे—इतना कहने पर जब वांछित परिणाम होते नहीं देखा, तो हाथ मटकाती हुई बोली—या तो यह घर में रहे या मैं रहूं।

सोनेलाल फिर भी चुप रहा। यह देख कर वह भाई का हाथ पकड़ कर बोली—चलो यही लोग यहां रहें। हम बेईमान लोग यहां से चले जांय—कह कर उस ने भाई का हाथ पकड़ कर दो तीन इंच घसीट लिया।

सोनेलाल अजीब असमंजस में था। यद्यपि उसने केवल एन्ट्रेंस ही पास किया था, पर इतने ही से अपने समाज में उसे इतनी मर्यादा प्राप्त हुई थी कि उसका जन्मतः दार्शनिक स्वभाव और भी गंभीर हो गया था। वह अपनी मर्यादा के अनुसार चलने की चेष्टा करता था। उस के स्वभाव में जल्दबाज़ी या जल्दी किसी निर्णय पर पहुंचना बिल्कुल नहीं था। एक के बाद एक उसे इस समय इतनी बातें सुनने को मिलीं कि वह घबड़ा गया। उस के मुंह से कोई बात नही निकली। जब उसने देखा कि होमवती अपने भाई का हाथ पकड़ कर घसीट रही है, हेतराम की स्त्री तथा बच्चे तमाशा देखने सामने आ गये हैं, भाई सकपकाया हुआ खड़ा है, तो उस ने यह अनुभव किया कि उसी के इर्द गिर्द ये सारी घटनायें हो रही हैं, और उसे अब कुछ करना ही

चाहिये। पर क्या कहे, क्या करे यह फिर भी उस की समझ में नहीं आ रहा था। उसके मुंह से केवल एक अस्फुट चीत्कार निकल पड़ा।

पर हज़ारीलाल ने उसे इस असमंजस से बचा लिया। बोला—भाभी क्यों जायेंगी? मैं ही जाता हूं। घर उन्हीं का है, वे रहें, मैं तो बदमाश हूं मैं चला जाता हूं।—कह कर वह उठा और चलने लगा। पर दो क़दम जा कर लौटते हुये भाई से बोला—भैया मैं नीचे दुकान में दो एक दिन रहूँगा, क्योंकि जिन लोगों से सोना चांदी ली है, उन्हें लौटाये बग़ैर ईश्वर को कैसे मुंह दिखाऊंगा। लोग कहेंगे कि लेकर भाग गया।

पर अब की बार हेतराम ने लपक कर उसका हाथ पकड़ लिया, बोला—न तुम जाओ, न बहिन जायें। मैं ही सारी आफ़त की जड़ हूं, सो मैं ही चला जाता हूं।

इतनी देर बाद सोनेलाल का मुंह खुला। वह जैसे नींद से जागा था। उसने बहुत ही स्पष्ट स्वर में कहा—कोई नहीं जायेगा। जो जायेगा वह मुझे मरा हुआ देखेगा।

सोनेलाल की इस बात से सब लोग सन्नाटे में आ गये। होमवती ठिठक कर अलग खड़ी हो गई। हज़ारीलाल भी एक क्षण के लिये किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गया। पर अगले ही क्षण भाई के क़दमों पर गिर कर बोला—भैया तुम ऐसा कठिन प्रण न करो। मुझे जाने दो। मैंने तुम्हारा छोटा भाई हो कर मां के समान भौजाई पर बुरी निगाह डाली। मुझे जाने दो।

सोनेलाल ने नर्मी से अपने पैरों को छुड़ा लिया, पर वह पहले की तरह मौन की दशा में लौट गया।

हेतराम ने बीच में पड़ते हुये कहा—अच्छी बात है, अभी सब लोग अपने

अपने काम पर जांय, बाद को देखा जायगा, पर मैं यही चाहूंगा कि सोनेलाल जी मुझे अपने प्रण से मुक्त कर दें। मेरे जाने से सब ठीक हो जायगा।

होमवती पति पर क्रुद्ध थी, बोली—तो साथ ही में मुझे भी जानें दें। मेरा यहाँ कोई काम नहीं है। जब यहां देवर की ताबेदारी करनी है, तो इससे अच्छा है कि भाई भौजाई की खुशामद करूंगी। वहां कम से कम और बातों से तो बची रहूंगी।

सोनेलाल ने बार बार इस ब्रह्मास्त्र के प्रयोग पर भी कुछ नहीं कहा। वह एकाएक वहां से चल पड़ा और घर से बाहर चला गया। हेतराम ने कनखी से बहिन की ओर देखा, तो उस ने आश्वासन सा देते हुये कहा—नहीं वे अभी लौट आयेंगे।

हज़ारीलाल दुकान में चला गया।

हेतराम बहुत चलता पुर्जा, व्यवहारकुशल आदमी था। उसने इस झगड़े के बावजूद, और यह जानते हुये भी कि हज़ारीलाल उसे चोर तथा बेईमान समझता है, उससे ऐसा व्यवहार जारी रक्खा मानो कोई बात ही नहीं हुई। सोनेलाल ने भी दो चार दिनों में दार्शनिकता के साथ सारी बात भुला दी। पर होमवती के अन्दर बदले की प्यास बुझी नहीं थी। वह हर समय इसी ताक में रहती थी कि देवर को नीचा दिखाये। पर कोई मौक़ा नहीं लगता था, क्योंकि अब हज़ारीलाल खाने के समय के अतिरिक्त और किसी समय भीतर आता ही नहीं था। खाने के समय सब के साथ आता था, और मुंह नीचा किये खाना खा कर चल देता था। अब वह दुकान में ही सोता था। उस दिन से उसकी और होमवती की बात चीत जो बंद हुई, सो बंद ही रही।

हज़ारीलाल मन में दुःखी था। उसे इस बात का बहुत अफ़सोस था कि भौजाई ने अपने भाई को मदद पहुंचाने के लिये उस के चरित्र पर झूठा लांछन लगाया था। इस अफ़सोस में वह घुल घुल कर काला पड़ गया। न अन्न रुचता था, न काम में जी लगता था। वह जल्दी जल्दी दुकान बंद करके भजन मंडली में दिल बहलाने जाता था।

जब झांझ और करताल बजा कर महात्मा रामदास के अखाड़े में भजन होता था, तब वह सारे दुःख भूल जाता था। पर अखाड़े में हर समय भजन ही होता हो, ऐसी बात नहीं थी। बाहर के कई भक्त आते थे, और उनके साथ साथ सांसारिक बातें भी वहां आ जाती थीं।

एक दिन भजन मंडली में बैठे हुये एक व्यक्ति ने चिलम की प्रतीक्षा करते हुये कहा—अब फिर असहयोग होनेवाला है।

एक अन्य व्यक्ति ने पूछा—असहयोग क्या ?

पहले व्यक्ति ने सर्वज्ञता के लहजे में कहा—

वाह यह भी नही जानते ? यही जय बोलना, सभा करना, जेल जाना और क्या ?

और उसे कुछ मालूम तो था ही नहीं, तो क्या कहता ? फिर भी वह चूकने वाला नहीं था, बोला—अब की बार बड़े मज़े आयेंगे।

हज़ारीलाल को इन दिनों घर की बातों के अलावा सभी बातों में रस आता था। वह फट से पूछ बैठा—कैसा मज़ा आयेगा ? कुछ तमाशा होगा क्या ?

उस व्यक्ति ने कहा—हां तमाशा ही समझो, घर फूंक कर तमाशा देखे जाओ। यहां तो मुंह बंद है, कुछ कह नहीं सकता।

महात्मा रामदास लाल लाल आंखे किये बीच में भभूत लगाये करीब करीब नंग धड़ंग बैठे थे। भरसक वह यही चेष्टा करते थे कि विरक्त, संसारत्यागी का व्यवहार करें। देखते सुनते वे सब कुछ थे, पर ऐसा रूप बनाये रहते थे, मानो वे न कुछ देख रहे हैं न सुन रहे हैं। अपने अखाड़े की प्रत्येक वस्तु पर उनकी कड़ी निगाह रहती थी। अखाड़े से लगी हुई कुछ जमीन और कुछ गायें आदि थीं। इन पर वे बड़ी सावधानी से देख रेख रखते थे। किसी की क्या मजाल थी कि अखाड़े के पेड़ों का एक फल या उनकी गायों का एक छटांक दूध ले ले।

रामदास राजनीति से सम्पूर्ण रूप से अलग होते हुये भी देश की अवस्था से बिल्कुल अपरिचित नहीं थे। इस संबन्ध में उनके ज्ञान का आधार सुनी सुनायी बातें ही होती थी। सच तो यह है कि उन के सारे ज्ञान का आधार ही यही था। उन्होंने न तो कभी किसी पाठशाला की चौखट पार की थी, और न उन्होंने कोई पोथी ही पढ़ी थी। फिर भी वे अपने को महाज्ञानी समझते थे, और तमाशा तो यह है कि दूर दूर तक बहुत से लोग उन्हें एक पहुँचा हुआ महात्मा समझते थे।

वे अपनी बातचीत में म्लेच्छ शब्द का बहुत व्यवहार करते थे। म्लेच्छ शब्द में वे केवल ईसाइयों, मुसलमानों को ही लेते थे, ऐसी बात नहीं। जिस किसी को वे नीचा दिखाना चाहते थे, उसी के लिये निष्पक्ष रूप से म्लेच्छ शब्द का व्यवहार करते थे। म्लेच्छों के प्रति सर्वदा घृणा का प्रचार करने पर भी उनमें इतनी साधारण बुद्धि थी कि वे अंग्रेजों को बुरा नहीं बताते थे।

ब्रिटिश सरकार के प्रति उनमें कोई श्रद्धा न होने पर भी वे शुरू से ही गांधी जी का विरोध करते आ रहे थे, इस विरोध का प्रधान कारण यह था कि वे

यह समझते थे कि उन के ऐसे भभूत लगाये हुये, अर्द्ध नग्न, अर्द्ध पागल लोगों का ही महात्मा शब्द पर अधिकार है। गांधी जी के पहिले इस शब्द पर ऐसे ही लोगों का मुख्यतः अधिकार भी था। इस लिये गांधी जी और राजनीति पर चिढ़ होना उनके लिए स्वाभाविक था। महात्मा रामदास थे तो निपट मूर्ख, पर लोगों पर उनका दबदबा इस प्रकार छाया हुआ था कि बड़े बड़े विद्वानों से उनका सम्मान अधिक होता था। इस कारण उन्हे अपनी मूर्खता पर भी गर्व था।

चेले आनेवाले आन्दोलन के सम्बन्ध में बातचीत करते जाते थे, और वे उसे सुनते जाते थे। अंत में वे बार बार महात्मा गांधी, महात्मा गांधी सुन कर उकता गये, और एकाएक गरज कर बोल उठे—अरे उसकी इच्छा के बगैर एक पत्ती भी नहीं हिल सकती, राज लेना तो दूर रहा। ऐसे जय जय करने से राज थोड़े ही मिला जाता हैं। सियार भी जंगल में हू हू करते रहते हैं, पर इससे क्या होता है ? जब तक उस की इच्छा नहीं, कुछ भी नहीं होगा।

एक चेला इस बीच में पीतल की चिलम फिर से भर चुका था। वह खूब सुलग रही थी। महात्मा रामदास ने हाथ बढ़ा कर उसे ले ली, और बड़े जोर का दम लगाया। चिलम भक से जल उठी। भक्तों ने प्रशंसा भरी दृष्टि और शायद कुछ लोलुप दृष्टि से चिलम की ओर देखा। महात्मा ने दो तीन फूंक जल्दी जल्दी लगाई और चिलम को एक भक्त के हाथ में थमाते हुये अपना प्रवचन फिर से जारी किया—अरे गांधी वांधी क्या हैं, सैकड़ों आये और दो दिन चमक कर काल के गाल में चले गये। अंग्रेज ऐसे ही राज थोड़े कर रहे हैं। उन लोगों ने हजारों वर्ष तपस्या की है, तब इतना बड़ा राज पाया है। कोई हंसी खेल है ? दैत्यों ने तपस्या की तो उन्होने देवताओं पर राज किया। राम जी किसी के सगे थोड़े ही हैं, वे न देवता जाने न दैत्य।

हरि का भजै सो हरि का होई। गांधी उतने वर्षों तक तपस्या करलें, जितनी अंग्रेज़ों ने की, तब वे उन से लड़ने लायक होंगे। गिटपिट करने से क्या होता है? गिटपिट से, और सियार की तरह हू हू करने से राज नहीं मिलता।

चिलम का दौर जारी था। महात्मा रामदास की इन बातों को सुन कर सभी लोग धन्य धन्य करने लगे। जहां लोग धन्य धन्य करने पर तुले हुये हैं, वहां किसी तरह की बात भी हो, वह सफल रहती है। लोगों के कान तो रामदास के बचनों को सुन रहे थे, पर उन की आंखें चिलम की ओर लगी हुई थी।

जिस व्यक्ति ने अन्दोलन की बात चलायी थी, केवल उसी ने महात्मा की बातों को पसन्द नहीं किया। उसने इसमें हेठी समझी कि रामदास ने इस प्रकार गांधी जी की निन्दा की। बोला—पर हमने तो सुना है कि गांधी जी भी बड़े तपस्वी हैं। वे रोज़ छः पैसे खाते हैं—कह कर उसने यह अनुभव किया कि कोई बात नही बनी, तो बोला—हमने तो सुना है कि जब गांधी जी रात को सोते हैं तो उनकी चारपाई जमीन से चार अंगुल ऊपर उठ जाती है।—कह कर अपने वक्तव्य को जोर पहुँचाने के लिये उसने कहा—कई अंग्रेजों ने अपनी आंखों से उन की चारपाई को जमीन से ऊंची उठते हुये देखा है।

इन बातों को सुन कर महात्मा रामदास बहुत खीझ गये। बोले—अरे ऐसा बहुत देखा हैं। यह सब हठयोग है। जब मैं हठयोग करता था, तब मैं जमीन से गज भर ऊपर उठ जाता था। पर गुरुने कहा कि यह सब बुरा है, तो छोड़ दिया। छः छः महीने तक मैंने कुछ नहीं खाया। तब तो महात्मा कहलाता हूं।

वह व्यक्ति झेंप सा गया। पर एक दम चुप रहना भी उसने उचित नहीं समझा। बोला—आप की शक्ति को वह नहीं पहुंचे हैं, और न वे आप की तरह बड़े महात्मा हैं। पर वे भी एक छोटे मोटे महात्मा हैं। सैकड़ों अंग्रेज उन के चेले हैं। सब अख़बारों में उनका फोटो छपता है। और.........

महात्मा से अब रुका नहीं गया। बोले—हमारी भक्ति को कोई साला क्या पहुंचेगा। मैं तीन साल तक एकटांग पर खड़ा हो कर तपस्या करता रहा। सब ऋतुयें आ आ कर चली गयी, पर इंच भर भी नहीं हटा। करे न कोई साला वैसा। छठी का दूध याद आ जायगा।

बात अब आगे बढ़ेगी, तो झगड़े का रूप धारण करेगी, यह सोच कर एक बूढ़े भक्त ने कहा—अब भजन होना चाहिये। हमें इन सांसारिक बातों से क्या मतलब ? जिसे इन बातों से मतलब हो वह और कहीं जाय। यहां तो बस भजन करने के लिये जिसे आना हो, वह रहे।

झांझ वगैरह तैयार तो थी ही। महात्मा रामदास यों तो क्रोध में थे पर क्रोध में भी वे व्यवहार बुद्धि खोते नहीं थे। उन्होने भजन शुरू किया -

तुरकन की तुरकाई देखी हिंदुवन की हिंदुवाई।
अरे इन दोउन राह न पाई ॥

महात्मा रामदास में और कोई गुण भले ही न हो, पर वे गाते बहुत सुन्दर थे। आवाज़ बहुत ही सुरीली थी, और बुलन्द इतनी थी कि सब गाने वालों की आवाज़ एक तरफ, और उनकी आवाज़ एक तरफ रहती थी। गाते गाते वे सचमुच अपने आप को भूल जाते थे, केवल यही नहीं, उनमें यह सामर्थ्य थी कि संगीत को इस ऊंचाई पर पहुँचा देते थे कि साथ में

बैठे हुये लोग भी आत्मविस्मृत हो जाते थे। उन्हें सैकड़ों भजन याद थे। यह एक क्षेत्र था जहां उन के मुख्य चेले भी उन से हार खा जाते थे, और उन के साथ उन का कोई मुकाबिला ही नहीं था।

आज वे राह नहीं पाई, राह नहीं पाई पर अधिक जोर देकर गा रहे थे। यद्यपि इस भजन से गांधी जी या उनके द्वारा चलाये जाने वाले आन्दोलन का सम्बन्ध नहीं था, फिर भी जहां तक राह न पाने का सम्बन्ध है, गांधी जी पर वे इसे अपने मन में लागू करके गाते रहे। साथ में गाने वाले भी इस बात को समझ गये। और भजन में एक दूसरा ही मजा आ गया। जनमत का इतना प्रबल प्रभाव होता है कि वह व्यक्ति जिसने समय काटने के लिये ही सही, उस बात का सूत्रपात किया था, वह भी सिर नीचे किये हुये भजन गा रहा था।

हजारीलाल की जब बारी आयी, तो उसके पड़ोसी ने उस के हाथ में चिलम दी, पर उसने उसे तुरन्त अगले आदमी को बढ़ा दिया। इस पर सब लोगों ने आपस में अर्थपूर्ण दृष्टि विनिमय किया, मानो कोई विचित्र जीव यहाँ आकर फंसा हो। यों तो हजारीलाल न तो गांधी जी का ही भक्त था और न रामदास के प्रति ही उस के मन में कोई विशेष श्रद्धा थी, फिर भी चिलम न लेने पर उस की तरफ लोगों ने जिस प्रकार से घूरा उस से उस पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। अब तक वह भजन गा रहा था, अब उसने भजन गाना बंद कर दिया।

एक के बाद एक एक भजन होते रहे। पर हजारीलाल का मन जो उचट गया सो उचट गया। ज्योंही पहिला व्यक्ति उठा, त्योंही वह चुपके से वहाँ से खिसक गया। घर जाकर खाना खाया तो उसे छः पैसा खाने वाले गांधी जी की बात याद आयी। उसने भी उस दिन एक रोटी कम खायी।

अगले दिन वह दुकान से छुट्टी पा कर भजन मंडली की ओर नहीं गया बाज़ार की ओर निकल पड़ा। वहां एक जगह एक तस्वीर की दुकान पर भीड़ लगी हुई थी। यह तस्वीर वाला राष्ट्रीय तस्वीरें बेच रहा था। एक तस्वीर में गांधी जी मोर पंख लगाये श्री कृष्ण बने बांसुरी बजा रहे थे, और देशबँधु दास, पंडित मोतीलाल नेहरू, राजेन्द्र बाबू, मौलाना आज़ाद, हकीम अजमल-खां गोपियां बने हुये थे। एक दूसरी तस्वीर में अंग्रेज़ों को तोप चलाते हुये दिखलाया गया था, दूसरी ओर गांधी जी चर्खे को सुदर्शन चक्र बना कर चला रहे थे, अंग्रेज़ भागते हुये दिखायी दे रहे थे। एक अन्य तस्वीर में गांधी जी क्षमा के अवतार के रूप में दिखाये गये थे। जलियानवाला में हज़ारों व्यक्ति मरे पड़े थे, पर गांधी जी उत्तेजित जनता से कह रहे थे—शान्ति : शान्ति :।

ये तस्वीरें हज़ारीलाल को इतनी अच्छी मालूम हुई कि उसने दो तीन तस्वीरें खरीद लीं, और उसी समय उन्हें कांच में गढ़वा कर दुकान में टांग दीं।

अब वह चौकन्ना रहने लगा, और जो भी अफ़वाह सुनाई देती, उन्हें कान खड़ा करके सुनता। एक दिन एक ग्राहक उस की दुकान में अख़बार लेकर आया। इस के पहिले भी उसने अख़बार देखे थे, पर उसे इन में कोई दिलचस्पी मालूम नहीं हुई थी। पर अब जो उसने देखा कि अख़बार में गांधी जी की ख़बरें हैं, तो उसने उसी दिन से अख़बार ख़रीदना शुरू किया। उसे इसका इतना चस्का लग गया कि बिना अख़बार पढ़े उसका खाना हजम नहीं होता था। यदि किसी दिन अख़बारवाला देर से आता, तो वह एक कारीगर को दौड़ा कर चौक से अख़बार मंगवा लेता। स्वयं बाज़ार घूमने निकलता, तो कोई न कोई मासिक या साप्ताहिक लेकर लौटता। उसे अब जीवन में एक नई दिलचस्पी मालूम होने लगी। महात्मा रामदास की झांझ तथा करताल जिस

दु:ख की आवाज़ को डुबा देने में असमर्थ सिद्ध हुई थी, ये नीरव अखबार उसे निश्चिन्त करने में समर्थ हुये।

अब उसका दिन मज़े में कट जाता था, क्योंकि दुकान के काम के अलावा अब उसे अख़बार पढ़ने की लत भी लग गई थी। देश में इन दिनों एक के बाद एक सनसनीपूर्ण घटनायें हो रही थीं। अब आसपास के लोगों ने देखा कि हज़ारी को राजनैतिक बातचीत में दिलचस्पी है, तो इस विषय में दिलचस्पी रखने वाले लोग उसकी दुकान के सामने यदा कदा एकत्र होने लगे। दुकान बंद करने के बाद किसी किसी दिन उस के सामने के बरामदे में अच्छी खासी चहल पहल रहती थी। पड़ोस के एक सनातनी पंडित को भी हज़ारीलाल की तरह राजनीति का नया नया चस्का लगा था। वे ख़ुद इतने ग़रीब थे कि अख़बार आदि ख़रीद नहीं सकते थे, इसलिये वे हज़ारीलाल के यहां आ कर अख़बार आदि पढ़ते थे। पंडित जी गांधी जी को एक राजनैतिक नेता मानते थे, पर ये उन्हें अवतार मानने से इनकार करते थे। इसी पर वहाँ के लोगों में दो पार्टियां हो गई थीं। एक के नेता पंडित जी स्वंय थे, और दूसरी का नेता स्वंय हज़ारीलाल था। काफ़ी चख़ चख़ रहती थी।

पंडित जी कहते—दस तो कुल अवतार हैं, उस में से नौ हो चुके। और अब एक होना बाक़ी है। एक अवतार जो होनेवाला है, उनसे गांधी जी का कोई लक्षण नहीं मिलता।

हज़ारी ने शास्त्र आदि नहीं पढ़े थे, फिर भी वह पंडित जी के सामने बराबर बहस करता था। वह इसके उत्तर में कहता—जो बात प्रत्यक्ष है, उस में प्रमाण की क्या ज़रूरत है। गांधी जी अवतार हैं, यह तो उन तस्वीरों से साबित है, जो मेरी दुकान में टंगी हैं।

इस पर पंडित जी कहते—तस्वीर से क्या होता है ? जो जैसी चाहे खींच दे। चर्खा को सुदर्शन चक्र बनाने से न तो चर्खा सुदर्शन चक्र हुआ जाता है, और न तो गांधी जी कृष्ण हुये जाते हैं। वे कृष्ण हैं, तो उन की गोपियां कहाँ हैं ?

इस पर हज़ारीलाल फिर चित्र का हवाला देकर कहता—सब ज़मानों में गोपियां एक सी नहीं हुआ करतीं। इस अवतार में दूसरे नेता उन की गोपियां हैं।

इस तरह की बातचीत में हज़ारीलाल का समय बड़े मज़े में कटता था। वह जो कुछ कमाता था, उसकी एक एक पाई सोनेलाल के हवाले कर देता था। हेतराम ने दो एक बार और पैर फटफटाये, पर वह जल्दी ही समझ गया कि हज़ारीलाल के सामने उसकी एक नहीं चलेगी। इसलिये उसने दुकान में कोई दिलचस्पी लेना ही छोड़ दिया था। वह समझ गया था कि जब सारी आमदनी सोनेलाल अर्थात होमवती के ही हाथ में जाती हैं, तो उसी तरफ़ अपनी कर्म शक्ति को केन्द्रित करना चाहिये।

एक दिन सोनेलाल को हैज़ा हो गया। हज़ारीलाल को कुछ देर में ख़बर मिली, और वह दौड़ा भागा घर के अंदर पहुंचा। यद्यपि हज़ारीलाल ने इलाज में कुछ उठा नहीं रक्खा, पर सोनेलाल तीस घंटे के अन्दर ही चल बसा। यह घटना गांधी जी की डांडी यात्रा के ऐन पहिले की है।

हज़ारीलाल तो पागल सा होगया। यद्यपि हेतराम के आने के बाद से भाई के साथ उसका सम्बन्ध कम से कम रह गया था, फिर भी वही एक व्यक्ति था जिस की वह दिल से इज्ज़त करता था। अब तो उसकी तबीयत दुकान में भी नहीं लगती थी। घर के अन्दर तो अब हेतराम का ही राज्य हो गया था। यों पहले भी उसी का राज्य था, पर ऊपर से दिखावा कुछ और रक्खा जाता था।

अब तो वह दिखावा भी जाता रहा। हज़ारीलाल कई बार रात को खाना दुकान में ही मंगवा कर खा लेता था।

भाई की मृत्यु के बाद से उसने दुकान की आमदनी का एक पैसा भी घर में नहीं दिया। वह इसी उधेड़बुन में पड़ा था कि यदि रुपये दें, तो किसे दें। इसी में देना रह गया। नियमित समय के बाद एक दिन हो गया, दो दिन हो गये, एक हफ्ता हो गया। जब हज़ारीलाल ने फिर भी कुछ नहीं दिया, तो एक दिन हेतराम ने उसे अकेले में पाकर पूछा—अब की बार तुम ने घर में कुछ खर्चा नहीं दिया?

उसके पूछने में कुछ जवाब तलब करने का सा ढंग था। हज़ारीलाल की इच्छा तो हुई कि इस के उत्तर में कहे 'नहीं दिया तो क्या हुआ? तू कौन होता है दाल भात में मूसरचंद'। पर कुछ सोच कर उसने कहा—भाई के इलाज में बहुत खर्च हो गया। फिर और भी खर्च आये, उन्ही को भर रहा हूं।

इस के उत्तर में हेतराम ने पहिले से अधिक नाराज़गी से कहा—तो घर का काम कैसे चले?

हज़ारीलाल के तेवर बदल गये, बोला—तुम मेहमान हो, तुम्हें इन बातों से क्या मतलब? जब तक भैया थे, तब तक वे इन बातों की फिक्र करते थे। अब वे नहीं रहे, तो या तो भाभी फिक्र करेंगी, या मैं। तुम नाहक को क़ाज़ी जी दुबले क्यों कि शहर के अन्देशे से कहावत को चरितार्थ क्यों कर रहे हो? तुम तो बिल्कुल अंग्रेज़ों की तरह हो रहे हो कि मेहमान बनकर आये थे, और अब मकान के मालिक बन कर डटे हो। जाओ अपने काम से काम रक्खो।

हेतराम हज़ारीलाल को बहुत सीधा नहीं तो इतना अक्खड़ भी नहीं समझता था। वह चाहता नहीं था कि अभी झगड़ा हो। वह तो शान्ति के साथ अपना उल्लू सीधा करना चाहता था। जब झगड़ा हो ही गया, तो उसने पीछे रहना मुनासिब नहीं समझा। वह भी अकड़ गया। बोला—जब मैं मेहमान था पर अब मैं मेहमान नहीं हूँ। बहनोई का स्वर्गवास हो गया, अब मैं किसका मेहमान हूँ? अब तो मैं अपनी बेवा बहिन के हितों की रक्षा के लिये यहां डटा हूं। मेरा यह फर्ज़ है कि मैं यह देखूं कि बहिन के साथ कोई अन्याय तो नहीं होता, और उस को सम्पत्ति का ठीक हिस्सा मिलता है या नहीं।

हज़ारीलाल ने इस बात को अपनी ईमानदारी पर लांछन समझा। बोला—जी हां। इसी बहाने आप उसे खुद हथियाना चाहते हैं। तभी तो आप यहां डटे हुये हैं।

—जी नहीं, मैं इसलिये यहां पर डटा हुआ हूँ कि आप अपनी भौजाई पर जो बुरे इरादे रखते हैं, उन्हें अब मौक़ा पाकर पूरे न कर लें। अब तो आप के रास्ते का कांटा दूर हुआ, अब आप उसे अकेली पा जांय तो शायद जिस अरमान को अब तक पूरा न कर सके उसे पूरा कर लें।

इसके बाद दोनों में खासा झगड़ा हो गया। हज़ारीलाल ने क्रोध में आकर हेतराम पर यह अभियोग लगाया कि उसने कोई चीज खिला कर सोनेलाल को मार डाला। दोनों झगड़ ही रहे थे कि होमवती भी आ गयी। उसने भाई की तरफ़ बोलना शुरू किया। झगड़ा इतना बढ़ा कि मोहल्ले वाले खिड़कियां खोल कर इसका रस लेने लगे। जब झगड़ा करनेवालों को यह मालूम हो गया, तो जैसा कि अधिक क्रोध में होता है, वे और भी बहकी बहकी बातें करने लगे। होमवती ने यह कहा कि जिस दिन सोनेलाल बीमार

पड़ा उस दिन हज़ारीलाल ने उन्हें कोई मिठाई खिलाई थी। यद्यपि यह बात सम्पूर्ण रूप से झूठी थी, पर क्रोध के आवेश में उसे ऐसा कहने में कोई भी हिच-किचाहट नहीं हुई। हज़ारीलाल ने उसका प्रतिवाद किया, और कहा—हेतराम ने जो बात की वह मुझ पर मढ़ रही हो।

हेतराम ने कहा—यह तो मेरे सामने की बात है। यह खैर मनाओ कि लाश जल गई, नहीं तो तुम फांसी पर चढ़ते। मैंने सोचा कि यह हज़रत बाज़ार से कभी एक छदाम का सौदा नहीं लाते, और आज घर भर के लिये मिठाई कैसे लाये हैं।—कह कर हेतराम ने खिड़की की तरफ़ मुंह करके कहा—मुझे तो उसी वक्त शक हो गया था पर मैंने कहा कि मुझसे इन से बनती नहीं इसलिये शायद शक ग़लत है। मैं तो यही समझता था कि जैसे हम भाई बहिन में प्रेम है, उसी प्रकार न हो इनमें कुछ प्रेम होगा। पर मिठाई का खाना था कि फौरन उनको दस्त शुरू हो गये। तब भी मुझे ख्याल नहीं आया। यह नहीं एहसान मानते कि जेलख़ाने से बचे हुये हैं, अब यह चाहते हैं कि मैं यहां से टलूँ तो यह अपनी भाभी पर हाथ सफ़ा करें।

यद्यपि हज़ारीलाल भी क्रोध में था पर एक साथ इतने अभियोगों की मार से वह तिलमिला गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया। प्रतिवाद करके बोला—मिठाई वाली बात बिल्कुल मन गढ़न्त है। यदि यह बात सच है, तो खाओ गंगा जी की कसम। हां, खाओ न कसम—कह कर उसने हेतराम को ललकारा।

अब कुछ लोग घर के अन्दर भी आ गये थे। हेतराम इस ललकार के कारण एक सेकेण्ड के दसवें हिस्से के लिये झेंपा, पर फौरन संभल कर बोला—वाह सांच को आंच नहीं। जो बात हुई, उस पर कसम खाने में क्या डर है? एक बार नहीं सौ बार गंगा जी की कसम खा सकता हूं।

हजारीलाल को अब भी यह आशा थी कि यद्यपि हेतराम अपने ग्राहकों का सोना-चांदी चुराता है, फिर भी वह एक बिल्कुल झूठी बात की क़सम नहीं खायेगा। इसलिये उसने ललकार को डपट का रूप देते हुये कहा—तो खाओ न क़सम। इधर उधर बगलें क्यों झांक रहे हो? मैदान में आओ।

होमवती दुष्ट होने पर भी यह नहीं समझती थी कि कोई व्यक्ति बिल्कुल झूठी बात पर गंगा जी की क़सम खा सकता है, पर वह यह भी समझ रही थी कि अब कसम नहीं खाई, तो बड़ी भद्द होगी। इसलिये उसने परिस्थिति को बचाने के लिये कहा—जो इतने आदमियों के सामने कहा, तो यह कसम खाने से क्या कम है? वैसे हट्टे कट्टे आदमी को हैजा ऐसे थोड़े ही हो आया था।—कहकर वह रोने लगी।

हजारीलाल ने उपस्थित लोगों की ओर देखा, तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे कुछ कहते रहना चाहिये। ऐसे झगड़ों में जो चुप हो गया, वही मरा। लोग उसी को हारा हुआ समझते हैं। हजारीलाल ने पहले की चुनौती की पुनरावृत्ति करते हुये कहा—तो फिर खाओ न कसम। इस तरह बगलें क्यों झांक रहे हो अभी दूध का दूध और पानी का पानी हुआ जाता है।—कह कर उसने उपस्थित लोगों के साथ ही हेतराम की ओर चुनौती भरी दृष्टि से देखा।

अब सब लोग हेतराम के चेहरे की ओर देखने लगे। मानो वे भी हेतराम को चुनौती दे रहे हों।

हेतराम ने बिना कुछ झेंपे हुये कहा—मैं सौ बार गंगा जी की कसम खाकर कहता हूं कि तुमने मिठाई खिलाकर अपने भाई को बीमार किया।

उपस्थित लोग अब हजारीलाल की तरफ़ देखने लगे कि वह क्या कहता है। वे तो तमाशा देखने आये थे, सत्य से उन्हें कोई वास्ता नहीं था। सवाल-

जवाब में मज़ा आता है, इसलिये वे चाहते थे कि सवाल जवाब और चले। बहुत दिनों में इस प्रकार का तमाशा देखने का मौका लगता है, इसलिये वे उसका पूर्ण उपयोग करना चाहते थे।

उधर हज़ारीलाल की यह हालत थी कि काटो तो लहू नहीं। उस के मुंह पर कालिख पुत गई। उसके पैर क्षण भर के लिये लड़खड़ा गये। पता नहीं आगे क्या होता, इतने में वे पंडित जी सामने आये, जिनके साथ गांधी जी अवतार हैं या नहीं, इस सम्बन्ध में हज़ारीलाल की कभी न ख़तम होने वाली बहसें हुआ करती थीं।

पंडित जी ने आगे बढ़ कर कहा—मैं क़सम खाने को बिल्कुल प्रमाण नहीं मानता। कलियुग के प्रभाव से गंगा जी उस प्रकार से तुरंत सजा देने वाली नहीं रहीं, नहीं तो लोग चार-चार पैसे के लिये झूठी क़समें न खाया करते—कह कर उन्होंने हेतराम को क्रुद्ध दृष्टि से घूरा, फिर उसी से बोले—तुम कहते हो कि हज़ारीलाल ज़हर मिली हुई मिठाई ले आया, और उसी को खाने के कारण श्री सोनेलाल जी का स्वर्गवास हो गया। यही कह रहे हो न?

हेतराम ताड़ गया कि अब कि पाला विकट आदमी से है। इसलिये एक क्षण तक वह सोचता रहा कि हां कहे या न कहे, पर वह अपनी क़सम से बंध चुका था, बोला—हां.........

पंडित जी ने जेब से सुंघनी की डिबिया निकाली, और चट से एक चुटकी सुंघनी नाक में चढ़ाकर बोले—अच्छी बात है। अब यह बताओ कि मिठाई खाते ही दस्त शुरू हो गये, या कुछ देर लगी?

हेतराम ने सकपकाते हुये कहा—तुरंत दस्त नहीं हुआ। दो तीन घंटे बाद असर शुरू हुआ।

पंडित जी ने कंधे पर रक्खे हुये अंगोछे से नाक पोंछी फिर बोले—सोनेलाल सब मिठाई अकेले खा गये ? तुम तो कह चुके हो कि ढेर-सी मिठाई आई थी।

हेतराम समझ नहीं पाया कि क्या कहना चाहिये। बोला—हां, मिठाई सेर भर होगी। हम सब लोगों ने मिठाई खाई।

—हज़ारीलाल ने भी खाई ?

हेतराम समझ गया कि उसने ग़लती की है, बोला—मुझे ठीक ठीक याद नहीं। मेरी बहिन को याद होगा। मैंने ही इनको दी थी। होमवती ने खुद ही कहा—हां, इसने भी खाई।

पंडित जी अब ठहरा कर हंस पड़े। बोले—हेतराम तुम बहुत चालाक आदमी हो, पर मैं यह मानने के लिये तैयार नहीं हूं कि तुम भगवान नीलकंठ की तरह जहर के असर से बरी हो। अगर हजारीलाल ने मिठाई खुद बांटी होती, तो यह हो सकता था कि कुछ मिठाइयां जहरीली थीं, और कुछ मिठाइयां साफ़ थीं, और उसने चुन चुन कर जहरीली मिठाई भाई को दी। पर जैसा कि तुम लोग खुद ही बता रहे हो, उस ने मिठाई लाकर दे दी और उसकी भाभी ने उस को बांटा।

हेतराम समझ गया कि उसका झूठ पकड़ा गया है, फिर भी एक पुराने पापी कि तरह बोला—मैं सीधा सादा आदमी हूं, इतनी बात नहीं जानता, पर मरे वे जहर से ही हैं। इतने हट्टे कट्टे आदमी को ऐसे हैजा थोड़े ही हो जाता है ?

पंडित जी ने उसकी बातों की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया बोले—सत्य सब खुल चुका, लोगों ने, क्या सत्य है क्या झूठ है, जान लिया। पर सवाल यह

नहीं है कि कौन सच्चा है और कौन झूठा है। सोनेलाल जी अब वापस नहीं आते। दूसरी बात वह भी उतनी ही सत्य है कि जब भौजाई की तरफ़ से देवर पर इतना अविश्वास है, तब बंटवारा हो जाना चाहिये, जिस से कि हमेशा के लिये इस कांव कांव से छुट्टी मिले। सोनेलाल और हज़ारीलाल को हम सब मोहल्ले वाले जानते हैं। वे यहीं पैदा हुये और यहीं पले। अब हम श्रीमान हेतराम जी को भी जान गये। दोनों का साथ रहना नहीं हो सकता, और यह तो जगत व्यवहार है, बंटवारा हो जाना चाहिये।

यह सुन कर हज़ारीलाल एक बच्चे की तरह रो पड़ा। गिड़गिड़ाते हुये बोला—मुझे बंटवारा नहीं चाहिये। जो कुछ जायदाद है, उसे भाभी रक्खें। मेरे लिये अगर दुकान छोड़ दें तो अच्छी बात है, सो उसके लिये भी मैं किराया देने को तैयार हूं।

हेतराम ने बंटवारे पर अधिक जोर नहीं दिया। उसकी आंख तो दुकान पर लगी हुई थी, और वह यह भी समझता था कि हज़ारीलाल अलग हुआ कि दुकानें भी खतम हुईं। बहन बेवा थी, और उसके कोई बच्चा नहीं था, इसलिये आधी जायदाद को तो वह अपनी ही समझ रहा था। अगर इतनी ही मिली तो इस में कौनसी बात थी। बहादुरी तो तब थी, जब कि हज़ारीलाल के हिस्से पर भी हाथ लगता। बंटवारा होने से इसकी सम्भावना समाप्त हो जाती थी। इस कारण उस ने फौरन हज़ारीलाल के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। होमवती तो एक कठपुतली मात्र थी वह चुप रही।

उस दिन से हज़ारीलाल घर के अन्दर बिल्कुल नहीं जाता था। काम बढ़ने के साथ साथ कारीगरों के लिये एक टट्टी बना दी गई थी, अब उसी से उसका भी काम चलने लगा। वह जाकर पास के एक भोजनालय में खाना खाता, कभी खाता कभी नहीं खाता। अक्सर भूखा ही सो रहता। कभी खोंचे वाले

से कुछ खा लेता। अपने घर में ही वह एक अनजान की तरह रहने लगा। भाई की मृत्यु पर उसके लिये जितना शोक उसे हुआ था, अब उसके लिये कहीं अधिक शोक हुआ। अब तो उसे अपने पिता की मृत्यु पर भी नये सिरे से शोक हुआ। यहां तक कि जिस माता के सम्बन्ध में उसे कुछ भी स्मरण नहीं था, उनके लिये भी उसे शोक हुआ। दिन बदिन उसका शरीर सूखने लगा।

बस उसे अख़बार ही से तसल्ली मिलती थी। अख़बार पढ़ते समय वह भूल जाता था कि वह दुःखी है। भारतीय जनता की जागृति की ख़बरें पढ़ते पढ़ते उसका छोटा-सा स्व जनता के विराट स्व में खो जाता था। भारतीय महा जाति अंगड़ाई लेकर उठ खड़ी हो रही थी। कहां तक वह ऐसी ख़बरों को पढ़ कर केवल अपने ही संकीर्ण छिलके के अंदर बैठा रहता? उस की आत्मा में व्याप्ति का जो प्रबल स्फुरण हो रहा था, उसके सामने उसका निजी दुःख बहुत तुच्छ हो जाता था।

अब भी उसके यहां लोगों का जमघट हुआ करता था। अब वह पंडित जी से बहस नहीं करता था। पंडित जी इसके कारण को समझ गये। पर उन्होंने हज़ारीलाल को जोश दिलाने की बहुतेरी चेष्टा की पर वे सफल नहीं हुये। हज़ारीलाल तो अपने को उनके एहसान से इतना दबा हुआ समझता था कि वह अब उनके सामने निरंतर हाथ जोड़ता हुआ ही दृष्टिगोचर होता था।

अब पंडित जी उसे बहुत छेड़ते तो कह देता—अगर गांधी जी अवतार हैं, तो तुम्हारे हमारे मानने न मानने से कुछ आता जाता नहीं है। जादू वह है, जो सर पर चढ़ कर बोले।

इस से आगे वह नहीं बढ़ता था। इस पर पंडित जी को खुद ही तरस आ गया, और बोले—यों तो साधारण लोग यही जानते हैं कि अवतार दस हैं,

पर कई अन्य मतों के अनुसार अवतार पचीस तक माने गये हैं। सो उस में गांधी जी के लिये भी गुंजाइश निकल सकती है।

इतना कहने पर भी हज़ारीलाल सनका नहीं और मंद मंद मुस्कराता रहा। दुकान अच्छी चल रही थी पर हज़ारीलाल को अब उसमें उतनी दिलचस्पी नहीं रह गई थी। फिर भी यांत्रिक रूप से वह अपना काम करता जाता था।

अब कांग्रेस के नेतृत्व में भारतीय जनता बातों से कार्य के क्षेत्र में उतर पड़ी थी। अक्सर सभा होती थी, और जुलूस भी निकलते थे। अब हज़ारीलाल अक्सर जल्दी जल्दी दुकान बंदकर सभा तथा जुलूस देखने चला जाता था। अब वह आमदनी का एक पैसा भी किसी को नहीं देता था। इस कारण वह मजे में कांग्रेसियों को खूब चंदा देता था।

गांधी जी डांडी पहुंच चुके थे। फिर भी जब उनकी गिरफ्तारी नहीं हुई, तो उन्होंने दूसरा कार्यक्रम निकाला। सारे भारत बल्कि सारे जगत् की आंख उनकी तरफ़ लगी हुई थी। विश्ववासी टकटकी बांध कर इस ढाई हड्डी के आदमी की तरफ़ देख रहे थे। उन के हृदय की धड़कन में भारतवासी अपने हृदय की धड़कन सुनने के आदी थे ही, अब वह धड़कन बहुत द्रुत हो रही थी। वे जिस मार्ग में जा रहे थे, जनता उस मार्ग में जाने के लिये लालायित थी। हज़ारीलाल का हृदय भी इसी सार्वजनिक धड़कन में अपनी धड़कन का अर्घ्य पहुंचाने के लिये व्यग्र हो रहा था।

पर जब स्वयंसेवकों में नाम लिखाने का प्रश्न आया, तो हज़ारीलाल ने केवल यह सोच कर नाम नहीं लिखाया कि यदि वह जेल में चला गया तो जिन लोगों ने उसके पास अपना सोना चांदी रक्खा था, उन को वह कैसे मुंह दिखायेगा। इसलिये उसने मन में यह तय कर लिया कि पहले दुकान की कुछ व्यवस्था करे फिर निश्चिन्त हो कर इस महायज्ञ में कूद पड़े।

अंत में सरकार ने विवश होकर गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया। बात यह थी कि गांधी जी ने जब देखा कि समुद्र के पानी से नमक बनाने पर भी सरकार उन्हें गिरफ्तार नहीं कर रही है, और उस समय ऐसा ख्याल था कि गिरफ्तार न होने पर उद्देश्य व्यर्थ हो जायगा तो उन्होंने नमक के सरकारी कारखानों पर धावा करके नमक ले लेने का कार्यक्रम चलाया। पन्द्रह हजार लोग एक साथ नमक के कारखाने पर धावा करने लगे। जिसके हाथ में जितना भी नमक लगता, वह उतना ले कर चम्पत होने लगा। कुछ लोग तो बोरे साथ लेकर इन धावों में शामिल होने लगे।

यह महात्मा गांधी की ही महिमा थी कि नमक की लूट को उन्होंने अहिंसा का रूप दिया। सार्वजनिक रूप से इस आन्दोलन को जो भी रूप मिला हो, पर ब्रिटिश सरकार इसकी क्रान्तिकारी सम्भावनाओं को समझ गई। उसके लिये यह जीवन और मृत्यु का सवाल था।

ब्रिटिश सरकार ने गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया, और निर्दयता के साथ आन्दोलन को दबाने के लिये उठ खड़ी हुई। पर इसमें लाखों लोग भाग ले रहे थे, इस कारण सरकार के सामने कठिन समस्या थी। जेलों में इन सब के लिये जगह नहीं थी। सरकार ने कैम्प जेलों की स्थापना की, सैकड़ों मामूली अपराधी छोड़ दिये गये, जिस से कि जेलें कुछ खाली हों। फिर भी समस्या हल नहीं हुई। इसलिये ब्रिटिश पालिसी के बनाने वालों ने लोगों को बेरहमी के साथ मारपीट कर छोड़ देने का कार्यक्रम चलाया। इस में न तो मुकदमा चलाने की आफ़त थी, आर न जेल में रखकर खिलाने पिलाने की समस्या थी। उन्हीं दिनों भारतीय पत्र जगत में एक नया शब्द चला—लाठी चार्ज। यह शब्द न तो अंग्रेजी का ही था, और न भारतीय ही था। ब्रिटिश भारतीय राजनीति की यह एक अपूर्व देन थी। दुःख है कि तब से जो यह शब्द चला, सो यह बराबर चला ही जा रहा है।

रोज़ लाठी चार्ज होने लगे।

हज़ारीलाल के कस्बे में भी नमक बनाने का आन्दोलन चला। पर इस जिले का मजिस्ट्रेट बड़ा खुर्राट था। उसकी विशेषता यह थी कि वह प्रत्येक क्षेत्र में कुछ न कुछ मौलिक करने के लिये कटिबद्ध रहता था। उसने पुलिस वालों को हिदायत दी कि जिस समय लोग धूम-धाम के साथ सड़क पर कड़ाही चढ़ा कर नमक बनावें, तो वे न तो किसी से छेड़-छाड़ करें, और न किसी को गिरफ्तार करें।

इस नीति का नतीजा यह हुआ कि दो हफ्तों के अन्दर ही आन्दोलन शिथिल पड़ गया। नमक तो फिर भी बनता रहा, पर जैसे शुरू के दिनों में इन कड़ाहियों के इर्द गिर्द विराट जन समूह एकत्र हो जाता था, अब वैसा नहीं होता था। कुछ बेकार आदमी तथा सड़क के लड़के भले ही इन कड़ाहियों के पास खड़े हो जांय, पर कोई विशेष भीड़ नहीं होती थी। ऐसे तो सांप वाले भी मजमा लगा लेते हैं, पर अब कांग्रेस के मजमों में जोश का कोई उपादान नहीं था। जयकारे में भी न वह उच्छ्वास था, और न वे जल्दी जल्दी लगाये जाते थे। अब तो ऐसा हो गया था, जैसे विधवा की दिवाली हो।

हज़ारीलाल फ़ुर्सत पाते ही नमक बनाना देखने चला जाता था। कस्बे के लोगों में जो शिथिलता आ गई थी, हज़ारीलाल उसका शिकार नहीं हुआ था, क्योंकि वह अख़बार पढ़ा करता था, और ये अख़बार अन्य स्थानों की गिरफ्तारियों तथा लाठी चार्जों की खबरों से भरे रहते थे।

कस्बे के पूर्व में एक झील सी थी, जिस का पानी कुछ अधिक खारा था। अब तक इस झील को कोई महत्व नहीं देता था, क्योंकि न वह पीने के काम का था, और न खेती के काम का था। अब एकाएक उसका महत्व बढ़ गया। इसी का पानी बैलगाड़ियों पर बड़े बड़े घड़ों में भर कर लाया जाता

था, और कड़ाही में डाल कर नीचे से लकड़ी जलाकर नमक निकाला जाता था। जो नमक निकाला जाता था वह बहुत ही घटिया दर्जे का होता था, और इसका रंग सफ़ेद होने के बजाय मटमैला होता था। खाने में इसका स्वाद कुछ नमकीन अवश्य होता था, पर साथ ही उसमें कई बुरे स्वाद भी होते थे। फिर भी इस प्रकार तैयार किया हुआ नमक पुड़ियों में बंध कर क़स्बे भर में बिकता था, और लोग बड़ी श्रद्धा से इसे करीब ४० रुपया सेर के भाव से खरीदते थे।

लोग इस नमक को नमक समझ कर नहीं, बल्कि एक तरह का प्रसाद समझ कर लेते थे। लोग जब इस नमक को लेते, तो दोनों हाथ पसार कर बाईं हथेली पर दाहिनी हथेली को रख कर लेते थे जैसे प्रसाद लिया जाता है। फिर वे उसे सिर से छुआकर मुंह में जरा सा डाल देते थे। नमक मुंह में डालते ही पहले तो कुछ नमकीन मालूम होता, पर तुरन्त ही बुरा स्वाद लगता। कोई अन्य चीज होती तो मुंह में जाने पर ही लोग इसे थूक देते, पर इसे खाकर लोग मुंह तक नहीं बनाते थे, और फौरन भक्ति भाव से निगल जाते थे। बच्चों को यह नमक इसलिये नहीं देते थे कि कहीं वे थूक कर इस की बेकद्री न करें, पर बच्चे भी ऐसे शैतान थे कि वे गांधी के इस नमक को चख कर ही मानते थे।

हजारीलाल ने नमक की एक एक रुपये वाली कई पुड़िया खरीदीं, और दूसरों से ख़रिदवाईं। बात यह है कि इन पुड़ियों को ख़रीदना कांग्रेस को चंदा देने का एक तरीका था। दूसरे तरीके से न दिया, इस रूप में ही दे दिया।

हज़ारीलाल ने तो इस नमक को दाल में डाल कर खाने की चेष्टा की। दाल खराब हो गई, पर उसने उसका एक दाना भी नहीं छोड़ा। कहीं कटोरी में उस पवित्र नमक का कुछ हिस्सा रह न जाय, इसलिये उसने उस कटोरी को धो कर पी लिया, फिर एक एक कर के उंगलियों को अच्छी तरह चाटा।

इसके बाद और कोई बात उसे नहीं सूझी, नहीं तो वह उसे भी कर के दम लेता।

इतनी भक्ति होते हुये भी, और मन में सचमुच चाह होते हुये भी वह स्वयं आन्दोलन में शरीक न हो सका। दुकान का कोई बंदोबस्त न हो सका। एक ही उपाय था कि हाथ के जितने काम हैं, इन्हें समाप्त कर दुकान बंद कर दी जाय, पर ऐसा करने के लिये वह अपने को तैयार नहीं कर पा रहा था। भूत-काल के साथ यही एक सम्बन्ध था, जिसे तोड़ते हुये उसे दुःख होता था।

जब इस जिले में कोई गिरफ्तारी नहीं हुई तो आन्दोलन एक तरह से दब गया। इस पर सरकार को खुश ही होना चाहिये था, पर असली बात तो यह थी कि केवल एक जिले में आन्दोलन के दबने से काम नहीं बनता था। जिला मजिस्ट्रेट मि. विल्सन प्रान्त की राजधानी में बुलाये गये। वे अंग्रेज़ थे, फिर भी धड़कता हुआ हृदय ले कर वहां पहुँचे। वहां उन्हें हुक्म मिला कि वे इस समय राजधानी में मौजूदा अपने डिवीज़न के कमिशनर से मिलें।

कमिशनर मि. डेविड बहुत पुराने तजर्बेकार व्यक्ति थे। वे जैसा कि सभी पुराने अंग्रेज अफ़सर विश्वास करते थे, यह समझते थे कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद सभ्यता तथा संस्कृति के प्रसार का एक साधन है। उन्होंने मि. विल्सन से पूछा —सभी जिलों में गिरफ्तारियां हुईं, पर आप के यहां नहीं हुईं। इस का कारण?

विल्सन ने कहा—मैंने जानबूझ कर कोई गिरफ्तारी नहीं की।

—यह तो ज़ाहिर ही है। पर नमक बनाने का कार्यक्रम जारी है न?

विल्सन ने कहा—जी हां। पर वे बीस रुपये की लकड़ी जला कर बीस

पैसे का नमक नहीं बना पाते। यह कब तक चलेगा? आर्थिक रूप से यह कार्यक्रम बिल्कुल बेबुनियाद है, और यह ठहर नहीं सकता।

—आप जो कह रहे हैं वह तो साधारण बुद्धि की बात हुई, पर हो क्या रहा है? यही बीस पैसे का घटिया नमक दो सौ रुपये में बिक रहा है, यह तो आप जानते ही हैं।—कहकर उन्होंने सिगरेट के बक्स से एक सिगरेट खुद ली, और एक मि० विल्सन को दी, उन्हें सुलगा ली, और फिर बोले—रुपये पैसे का सवाल नहीं है। सवाल है सरकार की प्रेस्टिज का। नमक बनाना गैर कानूनी है। इस का बनाना जारी रहने से सरकार की शान में बट्टा लगता है और आप जानते हैं कि इसी की बदौलत हम राज्य करते हैं। प्रेस्टिज नहीं रहेगी, तो राज्य नहीं रहेगा। सरकार की यह इच्छा है कि आप किसी भी दाम पर नमक बनाना बंद करवा दें।—कहकर उन्होंने मुंह फेर लिया, और अन्य बातें करने लगे।

अब विल्सन क्या करते? वे समझ गये कि सरकार ने इस सम्बन्ध में एक नीति तय कर ली है, और अब उन्हें उस नीति को कार्य रूप में परिणत करना है।

वे अपने जिले में लौटे, तो उन्होंने गिरफ्तारी और लाठी चार्ज का हुक्म दे दिया। पुलिस वाले तो मानो इसी के लिये तैयार बैठे थे, और दमनचक्र तेज़ी से घूमने लगा। ज़ुल्मों का बाज़ार गरम हो गया।

हजारीलाल अपनी दुकान में दोपहर के समय कुछ काम देख रहा था। अभी खाना खा कर लौटा था। इतने में खबर आयी कि चौक के सामने जहां नमक बना करता था, वहां पुलिस वालों ने सवेरे से कब्ज़ा कर लिया। जब नमक बनाने वाले कड़ाही आदि लेकर आये, तो उन्होंने यह तमाशा देखा। तब

उन्होंने पास ही एक दूसरी जगह पर नमक बनाने की तैयारी की। इस पर पुलिस वालों ने लाठी चार्ज कर दिया। कुछ कांग्रेसी गिरफ्तार भी हो गये।

जब यह ख़बर क़स्बे में फैली, तो बात की बात में हजारों की भीड़ हो गई। हज़ारीलाल ने भी झटपट अपनी दुकान बंद की, और वह भीड़ में जाकर शामिल हो गया। वहां पहुँच कर उस ने देखा कि सारा क़स्बा वहीं पर इकट्ठा है। आज एकाएक इस क़स्बे की मुरझाई हुई शाखाओं पर जल की वर्षा हो गई थी। सभी के चेहरों पर जोश था। सभी मानो इस बात का अनुभव कर रहे थे कि वे इतिहास निर्माण में सक्रिय भाग ले रहे हैं। एक या दो व्यक्तियों का इतिहास नहीं, सारे भारत का इतिहास, एशिया का इतिहास, विश्व इतिहास।

चारों तरफ पुलिस खचाखच भरी हुई थी। यत्र तत्र हिंसक जानवरों की ऊपर उठी हुई नाकों की तरह संगीन चढ़ी हुई बन्दूकों के अग्र भाग दिखाई पड़ते थे। उस चिर परिचित स्थान पर जहां एक महीने से अधिक समय से आग जला करती थी, और नमक बना करता था, आज केवल पुलिस वालों की संगीनें थीं। यह देख कर हजारीलाल का हृदय न मालूम क्यों हाहाकार से भर उठा। जैसे उस स्थान की शून्यता उसके हृदय की शून्यता का प्रतीक थी। वह कई दिन से नमक बनाना देखने नहीं आया था। पर इससे क्या? उसकी आत्मा का तो इस कार्यक्रम के साथ सम्बन्ध स्थापित हो चुका था। इसके लिये यह ज़रूरी नहीं था कि वह हर समय वहां डटा ही रहे। जैसे हम हर समय सांस लेते हैं, इस की प्रक्रिया को अनुभव नहीं करते, उसी प्रकार से नमक बनना भी उसके लिये एक प्रक्रिया हो गई थी।

हज़ारीलाल इधर उधर देखने लगा। उसने देखा कि एक तरफ़ भीड़ अधिक घनी है। वह भीड़ में पड़े हुये आदमी के नियमानुसार उधर ही पहुँच गया।

वहां पहुँच कर उसने देखा कि खारे पानी के घड़े भी रक्खे हुये हैं, और कड़ाहियां भा रक्खी हुई हैं। कुछ कांग्रेसी चिन्तित मुद्रा लिये इधर से उधर जाते हुये भी दीख पड़े। प्रथम दृष्टि में ही वह समझ गया कि ये किस उधेड़-बुन में पड़े हुये हैं। जनता बार बार 'भारत माता की जय' तथा 'महात्मा गांधी की जय' लगा रही थी। यदा कदा 'अल्ला हो अकबर' के नारे भी लग जाते थे। सारी जनता सब नारों में भाग लेती थी। उन दिनों कुल नारे इतने ही थे। अभी आर्थिक नारों का रिवाज नहीं पड़ा था। हां, जो नेता गिरफ्तार हो गये थे, उन के नाम ले ले कर जनता नारे लगा रही थी।

पुलिसवाले पास ही लाठी तथा बन्दूकों से लैस खड़े थे। वे भी कौतूहल से जनता की ओर देख रहे थे। हां उनके कौतूहल के साथ कुछ भय और इस कारण गुस्ताखी की भावना थी। लाठी और बन्दूकों के कारण भय को गुस्ताखी का रूप मिला हुआ था।

इतने में भीड़ के अन्दर एकाएक कोई सनसनी पैदा हुई। जैसे एक अजगर में एकाएक गति पैदा हो गई हो। न मालूम कहां से १५-२० स्त्रियां भीड़ को चीरती हुई उधर आईं। सब ने बड़े अदब से उनको रास्ता दिया। चारों तरफ़ की भीड़ अब चौकन्नी हो कर उसी तरफ उमड़ पड़ी। वातावरण में एक अजीब प्रतीक्षा की भावना पैदा हो गई, जैसे कोई अनहोनी बात होने जा रही हो। भीड़ के सब लोग यही चाहते थे कि वे ही उस आने वाली घटना का सब से पहले अभिनन्दन कर सकें। जो भीड़ अब तक एक अस्पष्ट परि-भाषाहीन अज्ञात घटना की प्रतीक्षा कर रही थी, अब उनकी प्रतीक्षा इन स्त्रियों के इर्द गिर्द सीमित हो गई।

पुलिस वाले भी तन कर खड़े हो गये। लाठियों और बन्दूकों की पकड़ मजबूत हो गई। उनके चेहरे पहले तो कड़े पड़ गये, पर फौरन ही उन पर

कोमलता की छाप आगई । आखिर ये स्त्रियां क्या कर सकती हैं ? कौतूहल ने वर्षों की गुलामी के अनुशासन पर विजय पाय । कुछ ही क्षण के लिये सही, वे भूल गये कि वे दर्शक के सिवा कुछ और भी हैं ।

वे स्त्रियां करीब करीब हजारीलाल को छू कर निकल गईं । हजारीलाल ने चाहा कि वह भी उनके पीछे पीछे आगे बढ़े । कुछ दूर तक वह आगे बढ़ भी गया, पर बाद को रोक दिया गया ।

फिर भी वह पहले से कहीं आगे बढ़ चुका था । जहां पर वह जाकर रुक गया था, वहां से आगे की सारी कार्रवाइयां बहुत अच्छी तरह दिखाई पड़ती थीं ।

स्त्रियां आगे बढ़ती ही चली गईं । वे वहां पर जा कर रुक गईं, जहां नमक बनाने की कड़ाहियां जमीन पर लावारिस सी पड़ी हुई थीं कड़ाहियों के सामने रुक कर उन्होंने जैसे आपस में कोई सलाह मशविरा किया । फिर उनमें से कुछ उन चूल्हों की तरफ बढ़ीं, जिन पर पुलिस वालों का कब्जा था । वे बढ़ती ही गईं, बढ़ती ही गईं । पुलिसवाले उन्हें रोकते भी रहे, पर रोकने की प्रक्रिया में ही वे साथ साथ पीछे हटते गये । स्त्रियों ने इसका पूरा फायदा उठाया, और पुलिस वाले बहुत पीछे हट गये । पुलिस वाले ऐसा केवल स्त्रियों के प्रति सम्मान की भावना से अनुप्रेरित होकर कर रहे थे, ऐसा कहना सत्य का अपलाप करना होगा । वे जानते थे कि यदि उन्होंने किसी प्रकार इन स्त्रियों का असम्मान किया, तो ये लाठियां और बन्दूकें विशेष काम नहीं आयेंगी, क्योंकि पुलिसवाले चारों तरफ से भीड़ के द्वारा घिरे हुये थे और भीड़ इतनी बड़ी थी कि दस बीस आदमी गोलियों के शिकार हो जाते, तो उससे भीड़ का कुछ नहीं बिगड़ता ।

लोगों में जोश प्रबल रूप धारण करता जा रहा था। सभी लोग यह चाहते थे कि स्त्रियों के पास आवें और देखें कि क्या हो रहा है। इस कारण भीड़ में खूब धक्कम धक्का हो रहा था। इतनी भीड़ के बावजूद कुछ खद्दरपोश व्यक्ति बहुत आसानी से इधर से उधर सन्देश ले जाते हुये अथवा ले आते हुये घूम रहे थे। यद्यपि लोग आपस में एक दूसरे को धक्का दे रहे थे, पर ये इस नियम से बरी थे। सभी समझते थे कि ये ही आन्दोलन चला रहे हैं, इसलिये इन को रास्ता छोड़ देते थे।

आपस में एक दूसरे को धक्का देकर अपने जोश के एक अंश को भाप बना कर उड़ा देने पर भी उनके पास नारों के लिये काफ़ी जोश बच रहता था। वे बार बार गगनभेदी नारे लगा रहे थे। सारा आकाश 'भारत माता की जय', 'महात्मा गांधी की जय', 'अल्ला हो अकबर', तथा राष्ट्रीय और स्थानीय नेताओं की जय के नारों से गूंज रहा था। हज़ारीलाल भी सुध-बुधहीन होकर पागलों की तरह अपनी सारी ताक़त लगा कर चिल्ला रहा था।

स्त्रियां आगे बढ़ती गईं, और पुलिसवाले पीछे हटते गये। वे समझ नहीं पा रहे थे कि वे इन स्त्रियों के विरुद्ध क्या करें। पुरुषों पर तो वे लाठी चार्ज करते, पर इन स्त्रियों के विरुद्ध वे क्या करें? उन की बुद्धि इस अवसर पर काम नहीं कर रही थी। वहां उस समय कोई अफ़सर भी मौजूद नहीं था। सब सिपाही ही सिपाही थे। जब स्त्रियां बहुत आगे बढ़ आईं, और क़रीब क़रीब उन के शरीर से शरीर सट गये, तब वे पीछे हट गये। बड़े घरों की स्त्रियां थीं वे, इस कारण वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें।

जब स्त्रियों ने चूल्हों पर कब्जा कर लिया, तो न मालूम कहां से लकड़ी के छोटे छोटे गट्ठर आ गये। अभी गट्ठर उतारे ही गये थे कि दिखाई पड़ा कि चूल्हे जल रहे हैं और उन पर कड़ाहियां चढ़ी हुई हैं। आग, धुंआ

और कड़ाहियों को देख कर जनता में खुशी की एक लहर सी बह गई, जो गगनभेदी नारों के रूप में आकाश तक व्याप्त हो गई। नमक बनना शुरू हो गया। उन कड़ाहियों में जो खारा पानी उबल रहा था, वह मानो उपस्थित जनता के हृदय के रुधिर के साथ ताल रख कर उबल रहा था। नारों के मारे ऐसा मालूम हो रहा था जैसे धरती कांप रही है।

उस समय हजारीलाल का चेहरा देखने लायक था। ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे कुबेर की सारी सम्पत्ति मिल गई हो। अब तक दूसरे नारे देते थे, और वह जय बोलता था, पर अब वह खुद ही पहले तो हिचकते हिचकते, और फिर खुल कर नारे लगाने लगा।

जब उसने पहली बार नारा लगवाया, तो उसे यह डर था कि वह नारा दे, और कहीं ऐसा न हो कि कोई उसके नारे में साथ न दे, तो वह हास्यास्पद बन जायगा। अब तक वह इसी डर के मारे नारा नहीं लगा रहा था। पर अब भीतर से जोश आया, तो उसने चिल्ला दिया अरे यह क्या। पास वाले सब लोग उसके नारे पर बोलने लगे। फिर क्या था, उस की हिम्मत बढ़ गई, और वह बार बार नारे लगाने लगा।

वह अपने इर्द गिर्द वालों का नेता सा बन गया, नारे लगाने का न्यारा ही मजा होता है। एक आदमी बोले और सब उसकी आवाज पर नारे लगावें, इस में एक नशा होता है और हजारीलाल को यह नशा मालूम हो गया था।

उसकी आंखें उन कड़ाहियों की ओर लगी हुई थीं मानो उन कड़ाहियों में जो खारा पानी उबल रहा था, उसी पर भारत का भाग्य निर्भर था। उसके मुंह से बराबर नारे निकल रहे थे। इस यज्ञ में ये नारे मानो मंत्र थे और हजारीलाल होताओं में से एक।

खुद बखुद स्त्रियों के इर्द गिर्द जनता का एक घेरा सा बन गया था। अब इन स्त्रियों और पुलिसवालो के बीच एक मोटी परत जम चुकी थी। जनता का प्रत्येक व्यक्ति इस समय अपने को इन स्त्रियों का संरक्षक समझ रहा था। पुलिसवाले इस गड़बड़ में इतने पीछे चले गये थे, यह किसी ने नहीं देखा। यदि वे पीछे चले गये थे, तो इस में किसी को क्या दिलचस्पी हो सकती थी।

पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद इन चंद सिपाहियों पर अपने भाग्य को छोड़ कर सोने नहीं चला गया था। थोड़ी देर में पुलिस का नया जत्था भीड़ को चीरता हुआ इधर आता दिखाई पड़ा। जनता में जोश और भी बढ़ गया। लोग गला फाड़ फाड़ कर नारे लगाने लगे। कड़ाही के पास की प्रत्येक स्त्री इस समय जनता की आंखों में साक्षात् भारत माता हो रही थी।

पुलिस का जत्था जनता के द्वारा बनाये हुये घेरे के सामने रुक गया। पुलिस की कोशिश के बावजूद जनता स्त्रियों के घेरे को तोड़ने के लिये तयार नहीं हुई। इस पर कुछ सलाह मशविरा हुआ। पुलिसवालों ने लाठियां संभालीं, और वे जनता पर पिल पड़े। कई व्यक्ति वहीं पर चोटें खा कर गिर पड़े। कुछ हट भी गये, पर जहां एक गिरता था या हटता था वहां दस आकर खड़े हो जाते थे। यदि जनता चाहती, तो इस समय कस्बे के सारे पुलिसवालों को चटनी कर के उनके थाने में आग लगा देती। पर यहां तो जनता को बराबर किसी और ही बात के लिये सचेत किया जा रहा था।

लोग पिट कर गिरते गये, पर उन्होंने घेरा नहीं टूटने दिया। कड़ाहियों से निकली हुई भाप सीधे आसमान में जा रही थी, मानो इस प्रकार वे स्वतंत्र-ता की सीढ़ी की रचना कर रही हों।

पुलिस के इस जत्थे को स्पष्ट निर्देश था कि आग बुझा दो, कड़ाहियां छीन लो, लाठी चार्ज करके भीड़ को तितर बितर कर दो। पर जनता उन्हें आगे बढ़ने देती तब न ! पर काम तो होना ही था। जब यह जत्था अपने कार्य में असफल रहा, तो न मालूम कहां से किसने पुलिसवालों का एक दूसरा जत्था भेजा।

फिर तीसरा।

फिर चौथा।

फिर पांचवां।

लारियों में पुलिसवाले चले आ रहे थे। शायद टेलीफ़ोन से सूचना पाकर सदर से आ रहे थे।

सन्ध्या समय तक जिधर देखो उधर पुलिसवाले हो गये। बन्दूकों की संगीनों से सारी जगह छा गई। अंत में पुलिस कप्तान स्वयं आये। इस समय दो बार नमक बन चुका था। अब तीसरा घान तैयार हो रहा था।

कप्तान साहब स्वयं घोड़े पर घेरे के पास आये। लोगों के गले बैठ चुके थे। फिर भी जोर का जयकारा हुआ। किसी ने ढेला मारा या क्या हुआ, घोड़े पर बैठे हुये कप्तान साहब का टोप ज़मीन पर गिरा। इस समय तक जनता के ४०—५० आदमी घायल हो चुके थे। जो वह टोप जमीन पर गिरा, तो जनता में पता नहीं फ़ुटबाल खेलने की प्रवृत्ति पैदा हुई या क्या बात हुई, टोप को कुचल कर लोगों ने चपटा कर दिया। यह जनता के क्रोध का द्योतक था। यदि महात्मा गांधी का स्पष्ट आदेश न होता, तो जो हालत टोप की हुई, वह सब नहीं तो कुछ पुलिसवालों की हो सकती थी।

टोप गिरते ही साहब बहादुर आपे से बाहर हो गये, और सीटी बजा दी। बात की बात में घुड़सवारों का एक जत्था जनता पर टूट पड़ा, और घेरे के पास आ गया। फिर तो जनता पर घोड़े दौड़े, लाठियां बरसीं, संगीन की मार हुई। चारों तरफ से चिल्लाने, कराहने की आवाज़ आ रही थी। हज़ारीलाल के सिर पर भी एक लाठी लगी। फिर दूसरी लगी, तो खून निकल आया, पर वह चिल्लाता ही रहा—भारत माता की जय।

लाठी और संगीन की मार के आगे घेरा टिक न सका। साम्राज्यवाद की सुसंगठित प्रशिक्षित शक्ति के सामने निहत्थी जनता कब तक डटी रहती? भीड़ में सैकड़ों व्यक्तियों को चोट लगी थी। बहुत से गिर कर कराह रहे थे। ५–६ आदमी शहीद भी हो चुके थे।

हज़ारीलाल के माथे पर जो चोट आई थी, उस से बराबर खून जारी था। पर जोश के मारे उस ने इस का ख्याल नहीं किया, और बराबर जयकारे लगा रहा था। माथे का कुछ खून बहकर उसकी आंख में गिरा था, जिस से वह अब केवल एक ही आंख से देख पा रहा था। अपनी जान में वह यह समझता रहा कि शायद उस की एक आंख जाती रही, पर उसे इस समय इस की बिल्कुल परवाह नहीं थी। वह हटा नहीं, डटा ही रहा।

किसी समय वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। जब उसे होश आया, तो सन्ध्या हो रही थी। उसकी धुंधली रोशनी में सउने देखा कि चारों तरफ़ सन्नाटा है। जिस तरफ़ स्त्रियां नमक बना रही थीं, उधर देखा तो चूल्हे बुझे हुये थे, एक से कुछ धुंआं निकल रहा था। कड़ाहियां उलटी पड़ी थीं। हज़ारी का हृदय धक से रह गया। स्त्रियाँ कहाँ गईं? उन पर कोई विपत्ति तो नहीं आई। उसे यह पता नहीं था कि स्थानीय नेता रामचरित्र बाबू परिस्थिति को बिगड़ते देख कर स्त्रियों को हटा ले गये थे। इसी बहाने से वे खुद भी सरक गये थे।

स्त्रियों ने रामचरित्र बाबू की सलाह मान कर वहां से जाने की आनाकानी की थी, पर जब रामचरित्र बाबू ने यह कहा कि 'मैं यहां की कांग्रेस का सभापति हूँ, इस नाते मेरा यह हुक्म है,' तब स्त्रियों को उन की बात माननी ही पड़ी। अधिकारीगण भी यही चाहते थे, क्योंकि मि. विल्सन ने यह हुकम दिया था कि स्त्रियों पर किसी भी हालत में कोई ज्यादती न की जाय। इस कारण रामचरित्र बाबू के कार्य में पुलिस के अधिकारियों ने बाधा तो दी ही नहीं, इस के विपरीत स्त्रियों को घर पहुंचाने के लिये एक लारी दे दी। पीछे सब स्त्रियां बैठीं और रामचरित्र बाबू ड्राइवर के साथ बैठे।

अपनी बेहोशी के कारण हजारीलाल को यह सब मालूम नहीं हुआ था। अधजली लकड़ियां ना मालूम क्यों श्मशान घाट की याद दिला रही थीं। हजारी लाल के अतिरिक्त और भी कई आदमी पड़े हुये थे। शायद वे मर चुके हों। हजारीलाल के दिमाग में यह विचार आया कि लोग शायद उसे भी मरा समझ कर छोड़ गये हैं। यह सोचते ही उसने उठने का प्रयास किया।

इतने में उधर से कोई आता हुआ दिखाई पड़ा। अब कुछ कुछ अंधेरा हो चला था। एक नहीं दो आदमी थे। हजारीलाल उठ कर भी रुका रहा कि उन से पूछे कि इस बीच में कैसे क्या हुआ। उसके सिर में एक अजीब दर्द मालूम हो रहा था, पर वाह रे कौतूहल! वह रुका ही रहा। जब वे आदमी पास आये, तो उस ने कहा—ऐ भैया!

उधर से रूखी आवाज आयी—कौन?

वे पास आये तो मालूम हुआ कि दोनों पुलिस के सिपाही थे। ये लोग जमीन पर पड़े हुये मृत तथा जख्मी लोगों की जेबें टटोलते फिर रहे थे। हजारीलाल ने जब इन्हें अच्छी तरह पहिचान लिया कि ये पुलिसवाले हैं, तो

वह चलने लगा। पर उन लोगों ने उसे रोक कर कहा—अबे कहां जाता है? इधर आ।

—कहीं नहीं, घर जा रहा हूं—कह कर हजारीलाल ने अपनी गति बढ़ायी।

पर पुलिसवाले उसके सामने आ कर खड़े हो गये। एक ने उसका हाथ पकड़ लिया, और कहा—अरे इसके सर पर तो चोट है। तलाशी दो।

हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुये हजारीलाल ने कहा—कैसी तलाशी? —उसके तेवर चढ़ गये।

—ऐसी!—कहकर दूसरे पुलिस वाले ने उसकी जेबों में हाथ डालकर जो कुछ भी मिला, उसे निकालना शुरू किया। हजारीलाल की जेब में १२ रुपये और कुछ पैसे पड़े थे। पुलिसवाले ने रुपये पैसे अपनी जेब में रख लिये, और इसके अलावा कांग्रेस की जो नोटिस, थोड़ा सा बना हुआ नमक और अन्य चीजें पड़ी हुई थीं, उन्हें निकाल कर बाहर फेंक दिया। फिर कहा—जाओ।....

हजारीलाल यों तो बहुत कमजोर हो चुका था, पर पुलिसवालों का सामना होते ही वह कुछ संभल गया था। पुलिसवालों की इस ज्यादती के सम्बन्ध में वह कुछ कहने ही जा रहा था कि उधर से कोई और आता हुआ दिखाई पड़ा। हजारीलाल को कुछ साहस मिला, बोला—मैं नहीं जाता—फिर पहले से कुछ अकड़ कर बोला—मारोगे न? मारो। मैं नहीं जाता। मैं सत्याग्रही हूं।

दूर से उस आदमी को आते हुये देख कर पुलिसवालों ने सोचा कि यह नया आदमी आ रहा है, एक और चिड़िया फंसी, इस की भी तलाशी ले लें तो

चलें। अब तक इन दो पुलिसवालों ने मैदान में पड़े हुये मृतों और आहतों की तलाशी लेकर सौ से अधिक रुपये बनाये थे, इन के अलावा घड़ियां, अंगूठी इत्यादि मिली थीं। वे हज़ारीलाल से बोले—जा, जा, बड़ा आया है। लाठियों के सामने तो एक भी सत्याग्रही नहीं टिका।

इतने में वह आदमी पास आ गया, पर यह व्यक्ति दोनों की आशाओं के विरुद्ध चौक थाने के छोटे दारोगा निकले। हज़ारीलाल को इस बात से कोई परेशानी नहीं हुई, पर सिपाहियों के होश उड़ गये। वे इस बात का क्या जवाब देंगे कि वे अंधेरे में इस आदमी के साथ यहाँ क्या कर रहे हैं। वे डरे कि कहीं हज़ारीलाल ने छोटे दारोगा से यह शिकायत कर दी कि वे उसे लूट रहे थे, तो लेने के देने पड़ जायेंगे। रुपयों का तो वे जवाब दे लेंगे, पर घड़ियों और अंगूठियों के सम्बन्ध में वे क्या कहेंगे। सिपाही इस बात को भली भांति समझते थे कि एक साधारण आदमी भले ही उन्हें ईमानदार समझे, पर छोटे दारोगा स्वयं घूसख़ोर होने के कारण उनका एतबार कभी नहीं कर सकते। करने को तो यह कुछ भी नहीं करेगा, क्योंकि वह कोई जनता का मित्र नहीं है, पर वह जेब टटोल कर सिपाहियों की सारी लूट की रक़म अवश्य ले लेगा।

छोटे दारोगा ने सिपाहियों को पहिचान कर संदेह की दृष्टि से देखते हुये कहा—तुम लोग यहां कैसे फिर रहे हो?—फिर हज़ारीलाल को देखते हुये उस पर टार्च की रोशनी डाल कर कहा—यह कौन है!

पुलिसवालों को झूठ बोलने की अच्छी तालीम होती है, पर उनकी भी जी में अटक गई। दो क्षण के बाद एक पुलिस वाला किसी तरह बोला—हुजूर इसे गिरफ्तार किया है। यह कांग्रेस की तरफ़ से कड़ाही चुराने के लिये आया था। हम लोगों ने इस को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया।

हजारीलाल ने कुछ कहना चाहा, पर उसके कुछ कह सकने के पहले ही न्यायावतार छोटे दारोगा ने कहा—अच्छा यह बात ! ले जाओ, इसे फौरन हवालात में दाखिल करो। इसकी तलाशी तो ले ली है न ?

—नहीं हुजूर, इसके पास क्या होगा ?

अच्छी बात है, तुम लोग जाओ—कहकर छोटे दारोगा ने सिपाहियों को एक आज्ञामूलक इंगित दिया।

सिपाही तो यही चाहते थे। दोनों तरफ़ से पुलिसवालों ने हजारीलाल के हाथ पकड़ लिये, और उसे घसीटते हुये हवालात ले गये। इस प्रकार हजारीलाल जेल पहुँच गया।

हजारीलाल को पहले तो कुछ अफ़सोस हुआ कि दुकान का क्या होगा। फिर वह कभी थाने तक नहीं गया था, जेल के सम्बन्ध में भी उसने अजीब बातें सुन रक्खी थीं, इसलिये मन में कुछ आतंक भी था। पर उसने जब जेल में जा कर देखा कि क़स्बे के करीब पचास आदमी वहां मौजूद हैं, तो उस को ढाढ़स बंध गया।

उसे ग़ैर कानूनी संस्था का सदस्य होने के अभियोग में दो साल की सज़ा हुई।

जब हेतराम को हजारीलाल की गिरफ्तारी की ख़बर मिली, तो उसे यह ख़बर इतनी अच्छी मालूम हुई कि उसने उसपर सहसा विश्वास नहीं किया। उसने जाकर रात ही में ख़बर की तसदीक करायी, और फिर रुआंसा चेहरा बनाकर होमवती के पास पहुंचा। सहसा बोला—हजारी गिरफ्तार हो गया।

होमवती चौंक पड़ी। बोली—क्यों, क्यों ? गिरफ्तार कैसे हो गया ?

हेतराम ने कहा—कुछ पता नहीं। एक पुलिस वाले से पूछा, तो बताया कि कांग्रेस की कड़ाही चुराते हुये पकड़ा गया।

होमवती को बड़ा आश्चर्य हुआ। उस के मन में कई विचार एक साथ आये। एक तो उस की समझ में नहीं आया कि कांग्रेस कोई मिठाई की दुकान तो है नहीं, फिर उसकी कड़ाही कहां से आई? फिर हज़ारीलाल को कड़ाही को क्या ज़रूरत पड़ी कि वह यह काम करने गया, पर सब से बड़ी बात तो यह थी कि अब क्या हो। बोली—भैया! मेरा तो सिर घूम रहा है।

हेतराम ने चेहरे को पहले से अधिक रुआंसा बनाते हुये कहा—होना क्या है बहन? जाको प्रभु दारुण दुख देहीं, ताकी मति पहिले हरि लेहीं। जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा। ईश्वर के यहां देर है, अन्धेर नहीं। चिंता है तो बस यही है कि खानदान के मुंह पर कालिख लग जायेगी। और सब बातें तो फिर हो जाती हैं, पर यदि खान्दान की बदनामी हुई, तो वह फिर मिट नहीं सकती।

होमवती ने आश्चर्य के साथ कहा—कैसी कालिख, और कैसी बदनामी?

—कालिख ऐसी कि हज़ारी की दुकान में पचास ग्राहकों का सोना, चांदी आदि है। अब तुम समझ रही हो न कि क्यों वह कहा करता था कि यह दुकान सोनेलाल की है। कहीं सब ग्राहक आकर तुम्हें न तंग करें।

होमवती चिंतित होकर बोली—तो क्या हो?

हेतराम ने कुछ उदासीनता दिखलाते हुये कहा—भई, मैं ऐसी बातों में पड़ना नहीं चाहता। मेरी राय तो यह है कि आगे आप और पीछे बाप। अपने को तो बदनामी से बचना है ही।

होमवती डरकर बोली—ऐसे वक्त में तुम काम नहीं आओगे, तो कौन

आयेगा।—कह कर आकाश की तरफ़ हाथ दिखाते हुये बोली—वे तो चले गये, नहीं तो आज वे ही मदद देते।

हेतराम ने कहा—तो फिर जो तरकीब है, उसे काम में लाओ।

—क्या ?

हेतराम ने कहा—दुकान का सारा माल घर पर ले आओ और उसे सहेज कर अपने पास रक्खो।

—पर दुकान में तो ताला पड़ा होगा ?

—एक नहीं, सौ ताले लगे हों। तुम घर की मालकिन हो, दुकान तुम्हारी है, जो चाहे सो कर सकती हो।

सो अगले दिन ताला तोड़ कर दुकान में जो कुछ भी था, सब हेतराम ने बहन के हवाले किया। शाम तक घूम घुमा कर वापस आया, तो बोला—बहन बड़ा संगीन मामला है। पता नहीं हज़ारी ने कैसी कड़ाही चुराई, अब घर भर बंध कर ही रहेंगे।

—क्यों, क्यों, क्या हुआ, कुछ सुना ?

हेतराम ने कहा—उसी सिपाही ने कहा कि घर की तलाशी होनेवाली है। उसने कहा कि अगर भलाई चाहते हो, तो घर पर कुछ मत रखना।

होमवती तलाशी के नाम से घबड़ा गई। बोली—तो फिर क्या हो ? अब तो भैया तुम्हीं पार लगाओगे, तो काम बनेगा। उनके मरने के बाद से बस मुसीबत ही मुसीबत रही है। पता नहीं हज़ारीलाल को सब कुछ रहते हुये कांग्रेस की कड़ाही चुराने की क्यों सूझी!

हेतराम जल्दी में था। बोला—अब यह रोना धोना फिर होगा। जल्दी करो, नहीं तो पुलिसवाले सब गहने उठा ले जायेंगे।

होमवती घबड़ा कर बोली—कहीं दुकान के धोखे में मेरे गहनों को भी उठा न ले जांय।

हेतराम इसी की प्रतीक्षा में था। बोला—अगर उनका मोह है, तो उन्हें भी बांध दो। मैं तुम्हारे लिये इतना कर सकता हूं कि इन सब चीज़ों को अपने घर ले जाऊं, और जब तुम आदमी भेजो, तो वापस ले आऊं।

बस यही तय रहा। हेतराम दुकान के सारे गहने तो लेता ही गया, साथ ही साथ होमवती के भी सब गहने, रुपये लेता गया। उसका परिवार भी दो तीन दिनों के बाद वहां से कोई बहाना बनाकर चला गया। हेतराम गहने लेकर जाते समय चुपके से अपनी स्त्री से कह गया था—मैं जाता हूं, तुम भी बहाना बनाकर चली आना। अब हज़ारीलाल गया, यही मौका है।

हेतराम की स्त्री बोली—लेकिन हां कहीं सारे गहनों को न बेच लेना, इन में से कुछ को मैं रक्खुंगी।

हेतराम बोला—हां हां, सो तो है ही, मेरी प्यारी यह सारी बात तुम्हारे लिये ही तो हो रही है।

३

आन्दोलन ने इतना जोर पकड़ा कि सरकार को झुकना पड़ा। लार्ड इरविन ने गांधी जी से समझौता किया, सब राजनैतिक कैदी छोड़ दिये गये। सत्याग्रह बंद कर दिया गया। हजारीलाल भी छूट कर घर आया।

छूटे हुये राजनैतिक कैदियों का कस्बे में बड़े जोर का स्वागत हुआ। हजारी लाल के गले में भी मालायें पहिनाई गयीं। पर वह खुश नहीं था। छूटते ही उसने आकर दुकान की खबर ली थी, तो मालूम हुआ था कि उस में कुछ भी नहीं रह गया था। उधर जिन जिन का सोना चांदी उसके पास था, वे उसके पास पहुँचने लगे। पर उसके पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं थी। देता तो क्या देता? पर उसने सब से कह दिया 'गुलामी करूंगा, पर किसी का एक पैसा बाकीनहीं रक्खूंगा। एक एक पैसा चुकता कर दूंगा'।

पड़ोसियों से उसे सारी बात मालूम हो गई। होमवती ने भी पूरी कहानी ज्यों की त्यों बता दी, बोली—तब से कई आदमी भेज चुकी, पर वहां से कोई जवाब नहीं मिलता। तंग होकर संदेशा भेजा कि खुद आ रही हूँ, तो उसके जवाब में खबर आई, मत आना। सब गहने, रुपये उसी के पास हैं। चीज़ों को एक एक करके बेच कर गुजारा कर रही हूं—कहकर होमवती रो पड़ी।

इस पर हजारीलाल ने कहा—कुछ परवाह मत करो। भाभी हो, मां की जगह पर हो। जैसे मेरा गुजारा होगा, वैसे ही तुम्हारा भी होगा। काम करूं तो रोटी क्यों नहीं मिलेगी?

होमवती और भी अधिक रोने लगी। यह तय हुआ कि हजारीलाल स्वयं हेतराम से मिलेगा।

हजारीलाल हेतराम के घर गया, तो वह उससे उठ कर मिला। जब मामूली मेहमानी के बाद हजारीलाल ने गहनों की बात उठायी, तो हेतराम बिल्कुल अनजान बन गया। उसने साफ़ कह दिया कि उसने कोई गहना या रुपया नहीं लिया। जब उसने वह रुख लिया, तो फिर क्या बात होती?

हजारीलाल ने घर लौट कर भाभी से सारी बात कह दी। देवर भौजाई बड़ी देर तक सलाह करने के बाद इस नतीजे पर पहुँचे कि होमवती खुद जाकर मिले, तो शायद हेतराम को कुछ लज्जा आवे। तदनुसार दोनों पत्रा देख कर हेतराम के घर के लिये रवाना हो गये। हेतराम ने जो दोनों को साथ आते देखा, तो वह कुछ चकराया, पर शीघ्र ही उसने अपना कार्यक्रम तय कर लिया।

मामूली तरीके से खाने पीने के बाद हजारीलाल ने रुपयों और गहनों की बात चलायी। हेतराम ने बिना किसी भूमिका के गालियां देना शुरू किया। हजारीलाल से कुछ न कह कर उसने अपनी बहन से कहा—अपना काला मुंह दिखाते हुये शरम नहीं आयी? जब से तुम्हारी शादी हुई, तब से तुम बराबर अपने देवर से फंसी हुई हो। मैं इसी लिये तुम्हारे यहां अपना हरजा करवा कर रहने गया था कि तुम को पाप से बचाऊं, पर तुम ने तो मेरी ही आंखों के सामने देवर से जहर मंगवा कर पति को मरवा दिया। उस पर भी मैं चुप रहा। अब आयी हो मुझ से गहने मांगने? एक ही ख़सम किया होता, तो ठीक था, जब ये हज़रत जेल चले गये, तब तो तुम पूरी कस्बिन हो गयीं। सब गहने रुपये अपने यारों को खिलाने लगी। तब मैं वहां से भागा। अब इनको बहकाया है कि सब गहने रुपये मैं ले आया हूं। जब हज़ारीलाल अकेले आया

था, तो मैंने सोचा अपनी हो बहन है, उस की क्या बुराई करूं। पर अब तो तुम खुद आ धमकी। मालूम होता है कि अब इस कस्बे में भी मेरा मुंह काला करा कर मानोगी।

इस प्रकार की बातें सुन कर दोनों दंग रह गये। वे अगली गाड़ी से ही वापस चले गये। घर लौट कर होमवती फूट फूट कर रोने लगी। बोली—तुम्हारे साथ जो बेइंसाफी की थी, उसी का यह फल मिला है। अब तो मैं कहीं की भी नहीं रही।

हजारीलाल बोला—यह घर तुम्हारा है। जैसे मैं भैया का सेवक था, वैसे मैं तुम्हारा सेवक हूं। पैसा तो हाथ का मैल है। कोई चिंता मत करो।

अब हजारीलाल ने कर्जा चुकाने की तैयारी की। उस ने किसी से बताया नहीं था, थोड़ा थोड़ा करके ५०० रुपये पंडित जी के पास जमा रक्खा था। इन रुपयों को उसने इस उमंग को लेकर जमा किया था कि कभी गांधी जी इस जिले में आयेंगे, तो अपने हाथों से उन को ये रुपये भेंट करेगा। पर अब ऐसी भयंकर परिस्थिति देखकर उसने पंडित जी से जाकर सारी बात कही। पंडित जी ने उन रुपयों को एक बैंक में जमा रक्खा था, शाम तक निकलवा कर सूद समेत सारे रुपये उसे दे दिये। हजारीलाल ने इन रुपयों में से कुछ रख कर बाकी पावनेदारों में बांट दिये। पावनेदार इस से संतुष्ट हो गये, क्योंकि वे समझ गये कि वह ईमानदारी से बाकी जो थोड़े थोड़े रुपये बचे, उन्हें चुकता कर देगा।

हजारीलाल बैठ कर समय खोनेवाला व्यक्ति नहीं था। उसने जाकर एक सोनार के यहां नौकरी कर ली। दुकान इसलिये नहीं चलायी कि हेतराम सारे अच्छे औज़ार भी ले गया था। वह कुछ कुछ रुपये पावनदारों को भी देता जाता था।

इधर घटनायें बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही थीं। ब्रिटिश सरकार ने समझौता तो कर लिया था, पर वह समझौता केवल जनता के क्रान्तिकारी आवेग को उस समय के लिये उतार देने के लिये था। अब पग पग पर सरकार समझौते की शर्तों को तोड़ रही थी। होते होते परिस्थिति ऐसी हो गयी कि मालूम पड़ा कि शायद गांधी जी लंदन के गोलमेज सम्मेलन में न जा पावें। पर गांधी जी भी समझौते के सम्बन्ध में सरकार की नीयत को परखने के लिये कटिबद्ध थे। वे लार्ड विलिंगडन की ज्यादतियों के बावजूद लंदन चले गये।

हज़ारीलाल दिन भर काम करता, पर समय निकाल कर अख़बार भी पढ़ लेता। अब वह पंडित जी के यहां अख़बार पढ़ने जाया करता था। पंडित जी उसकी पहिले से अधिक इज्ज़त करते थे। कहते थे—भई तुम तो कुछ कर आये, यहां तो ऐसे मायाजाल में फंसा हूं कि नून, तेल, लकड़ी में पड़ा रहता हूं।

एक दिन अपने कस्बे में ही हेतराम दिखाई पड़ गया। न उसने हज़ारीलाल से कुछ कहा और न हज़ारीलाल ने उससे कुछ कहा। हेतराम बहुत व्यस्त दिखायी पड़ रहा था।

इस के तीन चार दिन बाद एक अधेड़ पड़ोसी ने उसे अपने पास इंगित से बुलाया, मानो कोई बहुत ही गुप्त बात करना चाहता हो। बोला—भई बुरा न मानो, तो एक बात कहूं.........

—कहिये, कहिये।

उस व्यक्ति ने हिचकिचाते हुये, गला साफ़ कर के कहा—भई! मैं भी सोनार हूं। तुम्हारे पिता का मित्र हूं। जब तुम्हारी कोई बुराई सुनता हूं तो दुःख होता है। तुम्हारी भौजाई जवान है। अकेले उस के साथ रहना तुम्हारे

लिये उचित नहीं। तुम्हारी ईमानदारी के सब कायल हैं, पर यह बात तुम्हारी बदनामी के लिये मौक़ा दे रही है।

इतना सुनना था कि हज़ारीलाल का तेवर बदल गया, बोला—मैं तो उन्हें मां से एक रत्ती भी कम नहीं मानता। कौन साला ऐसी बात करता है?

वह व्यक्ति बोला—पहले ही मैं कह चुका कि मैं अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कह रहा हूं। और जो तुम जानना ही चाहते हो कि किसने कहा, तो मैं कहूंगा कि सब कह रहे हैं, और तुम्हारी भौजाई का भाई हेतराम भी सब से यही कह गया है।

तब हज़ारीलाल ने हेतराम ने कैसे कैसे क्या क्या किया, यह सब कह सुनाया। सब कुछ सुनकर वह व्यक्ति बोला—यह सब तो ठीक है, पर तुम चाहे मुझे कुछ भी कहो, तुम्हारा और हेमवती का एक साथ रहना अच्छा नहीं। बद अच्छा बदनाम बुरा, यह तो तुम जानते ही हो न?

हज़ारीलाल बिगड़ कर बोला—आप लोग सब जान रहे हैं, फिर भी बदमाशों की बातों में आ जाते हैं। तो क्या मैं अपनी भौजाई को छोड़ दूं? बेवा है, जायगी कहां?

—तुम तो बिगड़ गये। बिगड़ने से कोई काम थोड़े ही बनता है? तरकीब ऐसी करो कि सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे।

—तो आज से दुकान में ही सो रहूँगा।

—दुकान में सोने से काम थोड़े ही बनेगा? तुम घर में तो जाओगे न?

—तो क्या मैं घर ही छोड़ दूं?

उस सोनार ने कहा—नहीं, घर मत छोड़ो घर बसाओ। एक पंथ दो काज हो जायेगा।

हजारीलाल सुन कर दंग रह गया। समस्या से समाधान कहीं अधिक कठिन मालूम पड़ा, बोला—अपने खाने का ठिकाना नहीं, अभी सारा कर्जा चुका नहीं पाये, मुझसे लड़की कौन ब्याहेगा ?

—पर इस के अलाबा कोई चारा नहीं है। अब जो समझ में आये, सो करो, मेरी एक भतीजी है बड़ी गुण वाली है कहो तो तय करा दूं।

हजारीलाल ने फिर भी कहा—मुझे लड़की कौन देगा ?

—अरे तुम राज़ी तो हो जाओ। मैं सब ठीक करा दूंगा। आज ही तुम्हारी भौजाई से मिलूंगा। बस तुम हां कर दो।

हजारीलाल ने आत्मसमपर्ण करते हुये कहा—जो तुम कह रहे हो, वह ठीक ही है। हां के बजाय ना कैसे करूं ? ना कहता हूं तो घर छोड़ना पड़ेगा। इससे तो यही अच्छा है।

हजारीलाल की शादी तय हो गई। जिस भतीजी का जिकर हुआ था, उसका शादी से पहले ही गर्भ रह गया था। घरवाले उसका गर्भ गिराने के बाद जिस किसी को हो सके, उसे सौंप देना चाहते थे। हजारीलाल को यह सब मालूम नहीं था। उसने भौजाई को बचाने के लिये बिना देखे सुने शादी कर ली।

४

गोलमेज़ से गांधी जी अभी लौटे भी नहीं थे कि भारत भर में दमन का दौर दौरा फिर शुरू हो गया। हज़ारीलाल कांग्रेस के दफ्तर में एक सभा में भाग लेते हुये पकड़ा गया। देश एक बार फिर आग में कूद पड़ा। गांधी जी भी गिरफ्तार कर लिये गये। अन्य नेता भी पकड़ लिये गये।

अब की बार हज़ारीलाल को जेल में जाना किसी प्रकार अखरा नहीं। इस बीच जगत के प्रति या घर के प्रति उसका स्नेह कुछ घटा ही था, बढ़ा नहीं था। वह सी क्लास में रक्खा गया था। रामचरित्र बाबू तथा अन्य नेता ए. और बी० क्लास में थे। कभी कभी नेतागण सी० क्लास के राजनैतिक कैदियों के लिये नमक मिर्च, गुड़ आदि भेजवा देते थे। जेल में यही पदार्थ दुर्लभ थे, इस कारण सी० क्लास के कैदी उन्हे बड़े चाव से लेते थे। यहां तक कि वे इन चीज़ों के बटवारे पर आपस में लड़ते भी थे। पर हज़ारीलाल इन चीज़ों को लेता ही नहीं था। यह नहीं कि उसने कभी नहीं लिया, पर एक दो बार लेने के बाद वह ज्योंही समझ गया कि इन के कारण झगड़े होते हैं, तो उसने हिस्सा लेना छोड़ दिया।

एक दिन उसकी भौजाई तथा स्त्री उससे मिलने के लिये जेल में आईं ए० और बी० क्लासवालों की मिलाई दफ्तर में कुर्सी पर बैठ कर होती थी, और सी० क्लासवाले एक पेड़ के नीचे उकड़ू बैठकर अपने रिश्तेदारों से मिलते थे। उस दिन रामचरित्र बाबू की भी मिलाई थी।

जब हज़ारीलाल की मिलाई खतम हो गई, और वह बैरक वापस जाने लगा, तो पीछे से रामचरित्र बाबू भी अपनी मिलाई खतम कर के आ रहे थे। उन्होंने हज़ारीलाल को पीछे से बुला कर बड़े तपाक से भेंट की। भेंट तो बाहर तथा जेल में कई बार होती थी, पर आज वे कुछ विशेष खुशी में थे। बोले—भई! मैंने सुना कि तुम हम लोगों की भेजी हुई चीज़ों को नहीं लेते।

हज़ारीलाल ने कहा—जब और लोग लेते है, तो मैं भी लेता ही हूं।

रामचरित्र बाबू सूखी हंसी हंस कर बोले—यह तो है ही, पर सब लोग मिलकर खाते हैं तो आनंद आता है।

—जी हां—हज़ारीलाल ने इतना ही कहा।

जब रामचरित्र बाबू ने देखा कि इस विषय पर बातचीत जमी नहीं, तो बोले—मिलाई में कौन लोग आये थे?

—भौजाई और घरवाली आई थी।

—अच्छा? तुम्हारी शादी हो चुकी है? मैं तो यही समझता था कि तुम्हारा अभी ब्याह नहीं हुआ।

उस दिन तो इतनी ही बातचीत हुई, पर रामचरित्र बाबू अब मौका पाते ही हज़ारीलाल से मिलकर कुशल प्रश्न पूछने लगे। जेलर से कहकर उन्होंने हज़ारीलाल को चक्की से निकलवा कर मुंशी बनवा दिया। रामचरित्र बाबू को केवल छः महीने की सजा थी, सो वह जल्दी ही खतम हो गई। छूटते समय वे सभी से कह गये कि उन के घरों का कुछ न कुछ प्रबंध करेंगे। सारी

हालत पहले से ही जान चुके थे। हज़ारीलाल को अब भी ढाई साल काटने थे।

अब की बार सरकार पहले से प्रहार के लिये तैयार थी। लार्ड विलिंगडन ने आन्दोलन को दबाने में कुछ उठा नहीं रखा था। हज़ारीलाल को पूरी सज़ा काटनी पड़ी। एक साल तक तो उसकी मिलाईयां होती रहीं, पर बाद को दो साल तक उससे कोई मिलने नहीं आया।

हज़ारीलाल जब छूट कर घर गया, तो उसने देखा कि एक टिमटिमाते दीपक की तरह भौजाई तो मौजद है, पर स्त्री का कुछ पता नहीं। पूछने पर भी भौजाई कुछ बता नहीं सकी। स्वाभाविक रूप से हज़ारीलाल ने यही समझा कि वह अपने मायके गई होगी। इस कारण वह ससुराल पहुंचा, तो बड़े साले ने कहा—तुम जब जेल चले गये, तो मैं ने यही चाहा कि बहन को लाकर अपने पास रक्खूं। पर तुम्हारी भौजाई ने कहा कि वह अकेली रह जायेगी, उसे वहीं रहने दिया जाय। मैंने भी कहा कि ठीक है, अकेली औरत कैसे रहेगी। मैं कुछ खर्च भेजता रहा। उधर कोई कांग्रेसी रामचरित्र जुट गया। वह आया जाया करता था। फिर न मालूम क्या हुआ एक दिन नीला गायब हो गई, और तब से आज तक उसका पता नहीं है। मेरा तो यही ख्याल है कि उसी हरामज़ादे रामचरित्र की ही बदमाशी है।

हज़ारीलाल वहां से उलटे पांव लौटा, और रामचरित्र की कोठी पर पहुंचा। वहां पता चला कि अब वे क़स्बे में बूदोबास उठा कर ज़िले में रहते हैं। तब वह घर लौटा। जब गहराई से सोचा, तब इस नतीजे पर पहुंचा कि जो स्त्री दो साल से ग़ायब है, वह अगर मिल ही जायगी, तो कुछ फ़ायदा नहीं। असलियत यह थी कि हज़ारीलाल की स्त्री का पुराना प्रेमी उसके जेल चले जाने के बाद

आने जाने लगा था। पहले छिपे छिपे आता था, फिर खुल्लमखुल्ला आता था। होमवती इस पर चुप्पी साध गई, क्योंकि हजारीलाल ने ईमानदारी की धुन में एक भी पैसा नहीं बचाया था, सब पावनेदारों को दे दिया था। यह आदमी जो आने लगा, तो घर का खर्च भी चलाने लगा। इतने में रामचरित्र बाबू छूट कर आये, वे हजारीलाल के घर की सारी परिस्थिति समझ गये। उन्होंने उस प्रेमी को तथा उसके साथियों को भगा दिया, और स्वयं उसकी जगह पर हो गये। इस प्रकार कुछ दिन चलता रहा। फिर वे क़स्बा छोड़ कर शहर चले गये। बड़े नेता बनने के लिये क़स्बा छोड़ कर शहर में जाना ज़रूरी था। इसके बाद से हज़ारीलाल की स्त्री का पता नहीं था।

हजारीलाल को पूरी बात कभी मालूम नहीं हुई। उसे जितने मुंह उतनी बात सुनने को मिली। अंत में उसने इस विषय में सोचना ही छोड़ दिया। फिर नौकरी करने लगा। जो कुछ बचता, उसे पावने दारों के हवाले करता। रामचरित्र बाबू के कारण उसका मन कांग्रेस से कुछ फिर गया। अब उसने मन ही मन तय किया कि साधारण व्यक्तियों की तरह जीवन में उन्नति करेगा। भौजाई से उसका सम्बन्ध एकदम टूट गया, फिर भी वह उसका पालन करता रहा।

१९३५ के बाद रामचरित्र बाबू कांग्रेस की ओर से असेम्बली के लिये खड़े हुये। वे उसी क़स्बे की तरफ से खड़े थे। कुछ लोगों ने उनसे कहा कि यदि हजारीलाल उन की तरफ़ से काम नहीं करेगा, तो हिन्दू महासभा ही जीत जायेगी। इस पर रामचरित्र बाबू ने दूत दौड़ाये, पर हज़ारीलाल ने कह दी—रामचरित्र के लिये काम नहीं करूंगा।

वह किसी तरह टस से मस नहीं हुआ। लोगों ने कहा—रामचरित्र बाबू का प्रश्न थोड़े ही है। यह तो कांग्रेस की इज्जत का सवाल है।

हजारीलाल बोला—मैं यह सब कुछ नहीं मानता। कांग्रेस को अगर अपनी इज्ज़त का ख्याल है, तो ऐसे दुष्ट आदमी को अपनी तरफ से खड़ा क्यों करती है?

जब हजारीलाल किसी प्रकार नहीं माना, और लोगों ने देखा कि हिन्दू महासभा जोर पकड़ रही है, तो उन्होंने रामचरित्र बाबू को फिर से सारी बात बतायी। एक दिन हज़ारीलाल सोनार की दुकान में ही था कि उस के सामने रामचरित्र बाबू की मोटर आकर खड़ी हुई। दुकान का मालिक खुद दौड़ पड़ा, आस पास के लोग भी एकत्र हो गये। रामचरित्र बाबू ने दुकान के मालिक की तरफ ध्यान नहीं दिया। एक दम बढ़कर हज़ारीलाल से लिपट गये। बोले—यह बिना मुक़दमे का फैसला कैसे कर दिया? एक दफा मिले तो होते।

आलिंगन के अन्दर ही अन्दर कड़े पड़कर हज़ारीलाल ने कहा—मुझे अब राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं है—कह कर वह रामचरित्र बाबू से बिना आंख मिलाये ही आलिंगन से छूटने की चेष्टा करने लगा, पर छूट न सका। रामचरित्र बाबू काफी तगड़े थे।

रामचरित्र बोला—भला यह कैसे हो सकता है? तुम्हीं लोगों के भरोसे चुनाव लड़ रहा हूं। चलो मोटर पर बैठें। सब सुन लेना फिर जो चाहे सो करना—कहकर वे उसे मोटर की तरफ़ घसीटने लगे, पर हजारी पीछे हटने लगा।

इस पर दुकान मालिक ने कहा—हज़ारी, जाते क्यों नहीं? इतने बड़े आदमी दरवाजे पर खुद आये हैं, और तुम उन्हें निराश कर रहे हो।

रामचरित्र ने बीच में ही टोकते हुये कहा—बड़ा वड़ा कुछ नहीं हूँ। मैं तो सब का एक छोटा सा सेवक हूं। हज़ारीलाल को मैं अपना छोटा भाई मानता हूं। चलो भाई हज़ारी हमलोग चलें।

अंत तक रामचरित्र बाबू ने उसे कह सुन कर मोटर में बिठा ही लिया। और फिर उसे शहर ले जाकर न मालूम कैसे क्या समझाया कि पांच दिनों के अन्दर हज़ारीलाल चुनाव के लिये क़स्बे के घर घर घूमने लगा। हिन्दू महा सभा को उसी पर भरोसा था, सो वह हवा हो गई। वह घर घर जा कर यही कहता—भाइयो। गांधी जी के नाम पर शहीदों के नाम पर रामचरित्र बाबू को वोट दो।

दो एक जगह किसानों ने यह शिकायत की कि यद्यपि सवत्र हरी बेगार आदि बंद हो गया है, फिर भी रामचरित्र की ज़मीन्दारी में यह सब चल रहा है और किसान बहुत दुःखी हैं। अन्य स्थानों के किसान जाकर कांग्रेस में शिकायत करते हैं, पर इनके इलाके के किसानों की कांग्रेस में भी कोई सुनाई नहीं होती। इस पर हज़ारीलाल किसानो से कहता—इस समय रामचरित्र बाबू का सवाल नहीं है। कांग्रेस की इज्जत का सवाल है। गांधी जी की इज्जत का सवाल है। कांग्रेस अगर एक गधे को भी खड़ा कर दे, तो उसे वोट दो। इस व्यक्ति का सवाल नहीं, बल्कि देश का सवाल है।

इसी प्रकार से हज़ारीलाल ने जिले के अन्य नेताओं से जो कुछ सुना था, उसे घर घर जाकर कहा। रामचरित्र बाबू मजे में जीत गये। इसके बाद कांग्रेसी मंत्रिमंडल बना। हज़ारीलाल अपनी सोनारी की दुकान की नौकरी पर लौट गया।

बरसों हो गये, पर मन की बात मन में ही रह गई। हज़ारीलाल ने कर्जे से तो छुटकारा कर लिया, पर इतनी पूंजी इकट्ठी न हो सकी कि फिर से दुकान खोली जा सके। वह दुकान का मजदूर ही रह गया। रही इज्जत सो सब लोग उसे मानते थे, पर रामचरित्र बाबू जहां दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहे थे, वहां हज़ारीलाल की भला क्या गिनती थी।

१६३६ में द्वतीय साम्राज्य वादी महायुद्ध छिड़ा। कांग्रेस ने ब्रिटेन से युद्ध का उद्देश्य पूछा पर कोई उत्तर नहीं मिला। तब वैयक्तिक सत्याग्रह छिड़ा। हज़ारीलाल भी तैयार हो गया। तब लोगोंने उस से कहा—पहले अपनी जायदाद अपने नाम से अलग कर दो। अबकी बार जुर्माने अधिक हो रहे हैं, और न देने पर जायदाद ज़ब्त होती है।

सोच विचार कर हज़ारीलाल ने मकान का अपना हिस्सा भौजाई के नाम लिख दिया। दो एक व्यक्तियों ने मना भी किया कि ऐसा न करो, वह कई बार तुम्हे धोखा दे चुकी है, पर हज़ारीलाल ने यह कह कर उन्हें शान्त कर दिया कि यों भी जायगी, त्यों भी जायगी, अपनी भौजाई के पास बनी रहेगी तो फिर भी अपने ही पास रहेगी। अबकी बार तैयारी के साथ जेल जाना हो रहा था इस कारण हज़ारीलाल अपनी भौजाई को कुछ पूंजी भी दे गया जिससे कि वह निश्चिंत हो कर साल छः महीने खूब मज़े में खा सके।

फिर वह वैयक्तिक सत्याग्रह में जेल चला गया। उसे एक साल की सज़ा हुई थी। छूट कर एक उसने अजीब बात देखी कि हेतराम इस घर में फिर आने जाने लगा था। वह चोरी से आता जाता था, और हज़ारीलाल के सामने नहीं आता था। हज़ारीलाल ने सोचा यह अच्छा ही हुआ, मैं तो जेल जाता हूँ भाई बहन में झगड़ा निपट गया यह ठीक ही रहा। रखवाली के लिये कोई तो होना ही चाहिये।

१६४२ में फिर आन्दोलन छिड़ा। ६ अगस्त को रामचरित्र बाबू रात में हज़ारीलाल से मिले। बोले—देखो भाई। मैं तो पुराने ढर्रेका कांग्रेसी हूँ। वारंट कट चुका है। इस कारण मैं बाहर नहीं रह सकता। अब देश की इज्ज़त तुम नौजवानों के हाथों में है। करो या मरो का नारा है। हिदायत यह है कि सरकार को जिस तरह बन पड़े बेकार कर दो। गिरफ्तार न होना। यह मानना ही मत कि यहां ब्रिटिश सरकार का राज्य है। काश मैं तुम्हारी तरह निहंग

होता, तो मैं भी दिखला देता कि काम किसे कहते हैं। यहां अगर फरार होते हैं तो सैकड़ों समस्यायें उत्पन्न होती हैं।

रामचरित्र अगले दिन स्वयं थाने में टेलीफोन करके गिरफ्तार हो गये। पर हज़ारीलाल उसी रात से फरार हो गया, और सिर पर कफ़न बांध कर तार काटने, पटरी उखाड़ने, पुल तोड़ने आदि में लग गया। दो महीने तक ज़िले में अंग्रेज़ों का राज्य जैसे रहा ही नहीं। पुराने दो एक क्रान्तिकारी भी मिल गये। बड़े जोर से काम होने लगा, और पुलिस तथा फौज के छक्के छुड़ा दिये गये। उन दिनों हज़ारीलाल ज़िले के अन्दर वीर हज़ारीलाल कहलाने लगा।

पुलिसवाले उसे ऐसा समझते थे जैसे कोई हौवा हो। कई बार ऐसा हुआ कि हज़ारीलाल की टुकड़ी के साथ पुलिसवालों की रात में मुठभेड़ हो गई, पर हज़ारीलाल अपनी टुकड़ी सहित बच निकला। सारी जनता उसके साथ थी, इस कारण पुलिसवालों को ठीक ठीक खबर भी नहीं मिलती थी उस की गिरफ्तारी के लिये पांच हज़ार का इनाम घोषित हुआ, पर जनता में अपूर्व जोश होने के कारण वह पकड़ा न जा सका। जनता में एक भी आदमी ऐसा नहीं निकला जो उसे गिरफ्तार कराता। इसके अतिरिक्त वह होशियार भी रहता था। उसकी सोनारी विद्या तार आदि काटने में बहुत सहायक हुई।

जब आन्दोलन नेतृत्व के अभाव में कुचल दिया गया, तो ज़ोरों का दमन शुरू हुआ। पहले से कोई तैय्यारी नहीं थी। न तो सामान ही था, और न कोई कार्य-क्रम। हिंसा, अहिंसा के सवाल ने आन्दोलन को कभी भी स्वस्थ अवस्था में होने नहीं दिया। ऐसी क्रान्ति का असफल होना अनिवार्य था। हज़ारीलाल ने अपने साथियों सहित बुझे हुये दीपक को बार बार जलाया। पर जिस दीये का तेल समाप्त हो चुका था, वह कब तक जलता?

ब्रिटिश सरकार ने दमन के सिलसिले में गांव के गांव जला दिये। स्त्रियों पर बलात्कार किया गया। लोगों को खड़ा खड़ा लूट लिया गया। हज़ारीलाल इन बातों को बैठकर देखनेवाला नहीं था। वह रात की एकान्तता में ऐसे घरों में पहुँचता, जहां लोगों पर अत्याचार हुये, उन्हें सान्त्वना के वाक्य कहता, और जैसा भी कुछ बन पड़ता, उन की सहायता करता। फिर हो सकता तो थाने में जाकर बम डाल देता, या रास्ते में किसी सिपाही को अकेला पा कर उसे मार कर परचा चिपका देता कि नौजवान टोली ने उसे सज़ा दी है।

जिन दिनों आन्दोलन चढ़ती पर था, उन दिनों हज़ारीलाल ने जितनी वीरता दिखलाई, उस से दस गुनी वीरता उसने उन दिनो दिखाई जब कि आन्दोलन उतरती पर था, और अन्त तक वह गिरफ्तार नहीं किया जा सका। ऐसा केवल वह अकेला नहीं था। देश भर में हर ज़िले में दस बीस हज़ारीलाल उन दिनों थे, और काम कर रहे थे।

१९४४ में गांधी जी जेल से छूटे। उन्होंने छूटते ही हिंसामूलक कार्यों की निन्दा की, और फ़रारों से कहा कि वे आत्मसमर्पण कर दें। अब हज़ारी लाल बड़े असमंजस में पड़ गया। रामचरित्र बाबू बहुत पहिले ही किसी बीमारी के कारण छोड़ दिये गये थे।

हज़ारीलाल जा कर चुपके से उनसे मिला, तो वे कहने लगे—समझ में नहीं आता कि किस के हुक्म से तुम लोगों ने यह सब बबाल खड़ा किया। किया तो तुम लोगों ने, और अब जवाब देते देते हम लोगों की मुश्किल होगी। —कह कर उन्होंने मुंह बना लिया मानों कोई बहुत भारी अनर्थ हो गया हो।

हज़ारीलाल ने ध्यान से उनके चेहरे की तरफ़ देखा तो मालूम हुआ कि उस में कोमलता की एक भी रेखा नहीं है। वह चुपचाप रात्रि के अन्धकार में

विलीन हो गया। और किसी पर विश्वास करे या न करे गांधी जी पर उसका पूरा विश्वास था। उसने जाकर फिर एक बार गांधी जी के बयान को पढ़ा। उस में किसी प्रकार द्व्यर्थक बात नहीं थी। कई बार पढ़ा, तो वही मतलब निकला।

वह जा कर गिरफ्तार हो गया।

धीरे धीरे अन्य नेता छूटते गये। आज़ाद हिन्द फ़ौज के लोगों पर मुक़दमे चलने लगे। एक तरफ़ तो यह हुआ, दूसरी तरफ़ समझौते की वार्ता चलने लगी। यद्यपि आन्दोलन दबा दिया गया था, पर जनता का क्रान्तिकारी जोश अब भी बहुत कुछ उसी प्रकार था।

प्रान्तों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बने, और हजारीलाल तथा अन्य राजनैतिक क़ैदी छूट गये। हजारीलाल घर गया तो ज्ञात हुआ कि भौजाई मर चुकी है, और मरने के पहले हेतराम को सारी जायदाद याने वह मकान और दुकान दे गई है। हेतराम ने खुद ही उसे यह खबर बताई। हजारीलाल फिर वहां ठहरा नहीं। अब वह शाब्दिक रूप से सर्वहारा हो चुका था। वह रास्ते में निकल पड़ा। पंडित जी के यहां आश्रय लिया, तो ज्ञात हुआ कि क़स्बे में कुछ लोगों को यह शक है कि हेतराम ने जायदाद के लिये अपनी बहन को मार डाला। जिस हजारीलाल ने प्रबल पराक्रान्त ब्रिटिश साम्राज्यवाद से हर तरह लोहा लिया था, उसने अपने को हेतराम के सम्मुख बिल्कुल असहाय पाया।

हजारीलाल की तबीयत कुछ खराब रहने लगी। पर पंडित जी ने उसकी सेवा शुश्रुषा करके उसे चंगा कर दिया। फ़रारी के ज़माने में भी वह कई बार पंडित जी से चुप चाप मिलता था। जब भी मिलता था तो पंडित जी उसकी

बड़ी आवभगत करते थे। उनका यही कहना था कि वे स्वयं देश सेवा तो कर नहीं पाते, इस कारण देश सेवकों की ही सेवा कर लेते हैं।

सेना और पुलिस में आज़ाद हिन्द फ़ौज का परोक्ष असर इतना अधिक पड़ा था कि ब्रिटिश सरकार अब उस पर विश्वास नहीं कर सकती थी। सरकार यह समझ गई कि अगले क्रान्तिकारी प्रयास में भारतीय सेना तथा पुलिस उसका साथ न देगी। इसलिये काफ़ी सोच विचार के बाद ब्रिटिश सरकार ने समझौता करने का निश्चय किया। इधर कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के नेतागण भी समझौते के लिये तैयार थे। वे १९४२ के आन्दोलन की गति से इस बात को समझ चुके थे कि इसबार तो परिस्थिति सम्हल गई, पर भविष्य में यदि ब्रिटिश विरोधी कोई आन्दोलन उठाना पड़ा, तो वह संभव है कि हमेशा के लिये उन के हाथ से निकल जाय। इसलिये १५ अगस्त को भारतवर्ष को दो स्वराज्यप्राप्त भागों में बांट दिया गया। जाते जाते भी ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने हमेशा के लिये यहां की प्रगति पर एक ब्रेक सा लगा दिया। यह भारत के लिये ब्रिटिश साम्राज्यवाद की अन्तिम भेंट थी। पता नहीं जाते समय झाड़ी गई इस दुलत्ती की चीस कभी दूर होगी या नहीं, कौन जाने।

१५ अगस्त को कांग्रेस की आज्ञा से सारे देश में अपूर्व उत्सव मनाया गया। युग-युग की गुलामी की जंजीर जिस दिन झनझना कर टूट गई, उस दिन उत्सव होना स्वाभाविक था। रात को ऐसी रोशनी हुई कि दीवाली भी उसके सामने मात हो गई। गरीबों को खाना बंटा, स्कूली बच्चों को मिठाइयां बंटीं। सबों के चेहरों पर खुशी झलक रही थी।

हज़ारीलाल का मन भी इसी उत्सव के स्वर में बंधा हुआ था, वह अपना कस्बा छोड़ कर उत्सव देखने के लिये सदर पहुंचा। वह कांग्रेस के दफ्तर में गया, पर वहां कुछ देर तक उद्देश्यहीन रूप से बैठने तथा खड़े होने के बाद

उसे ऐसा अनुभव होने लगा कि उस की वहां कोई आवश्यकता नहीं है। किसी ने उस को पूछा नहीं। सब लोग अपने अपने काम में व्यस्त थे। वे आपस में जो बात कर रहे थे, उस की भाषा ठीक ठीक उसकी समझ में नहीं आई।

कई बार रामचरित्र बाबू दफतर में जल्दी जल्दी आये और निकल गये। दो एक बार हजारीलाल से उनकी मुठभेड़ भी हो गई, पर उन्होंने उससे बात तक नहीं की। हजारीलाल ने देखा कि केवल उसकी ही नहीं उसके साथ आन्दोलनों में काम करने वाले कई व्यक्तियों की यही दशा थी। हां उसके साथियों में कुछ ऐसे लोग भी थे जो कांग्रेस के दफ्तर में उसी तरह विचरण कर रहे थे जैसे पानी में मछली करती है। वे लोग, ताज्जुब की बात तो यह है, उसी भाषा में बात कर रहे थे जिसे हजारीलाल अच्छी तरह समझ नहीं पा रहा था। ये लोग भविष्य को केवल शक्ति तथा पद प्राप्ति के रूप में देख रहे थे। हजारीलाल के मन में कुछ और ही सपने थे।

कांग्रेस के दफ्तर में जी नहीं लगा, तो हजारीलाल शहर की सड़कों में घूमने लगा। ऐसे ही उद्देश्यहीन रूप से करीब करीब पागलों की तरह इधर से उधर दिन भर घूमता रहा। घूमता फिरता हुआ वह एक आलीशान हवेली में पहुँचा। यह शहर की हवेलियों में सर्वश्रेष्ठ थी। अंग्रेजों के जमाने में जब भी लाट साहब इस शहर में पधारते थे, तो यहां उनके सम्मान में एक बहुत बड़ी दावत होती थी, जिस में शहर के सभी गण्यमान्य व्यक्ति तथा अफसर बुलाये जाते थे। लाट साहब की रुचि के अनुसार उत्सव का आयोजन होता था। एक लाट साहब अंग्रेज होते हुये भी, भारतीय तवायफों का गाना सुनना बहुत पसंद करते थे। इसलिये उनके मनोरंजन के लिये सेठ अमींचन्द लखनऊ तथा कलकत्ते से तवायफें बुलवाते थे।

पर आज यह हवेली जिस प्रकार सजी थी, वैसी कभी नहीं सजी थी

हवेली के ऊपर रेशम का तिरंगा झंडा लगा हुआ था, जिस के लहराने की आवाज़ नीचे तक सुनाई पड़ती थी। इस के अलावा सैकड़ों झंडे और थे। प्रधान झंडे के नीचे ही गांधी जी की एक भव्य मूर्ति थी। बिजली के बल्बों का एक चर्खा उस के सामने इस प्रकार से फिट कर दिया गया था कि नीचे से यही मालूम होता था कि गांधी जी चर्खा कात रहे हैं। इस के अतिरिक्त और भी पचासों अद्भुत चित्र, दृश्य तथा घटनायें इसी रूप में प्रस्तुत की गई थीं।

सेठ जी ने ब्रिटिश सरकार को लड़ाई के जमाने में कुल मिलाकर सवा पांच लाख रुपये चन्दे में दिये थे। पर एक व्यापारी होने के नाते वे कांग्रेस की बढ़ती हुई संभावनाओं को खूब समझते थे, और इस कारण यदि वे दाहिने हाथ से ब्रिटिश सरकार को एक लाख देते थे, तो बायें हाथ से कांग्रेस को भी हजार दो हजार दे देते थे। और कहावत के अनुसार वे एक हाथ से जो दान करते थे, [illegible] उसे दूसरे हाथ को जानने नहीं देते थे। जिन दिनों हजारीलाल वीर हजारी[illegible]। उन दिनों वह भी सेठ आसीचन्द के खद्दरधारी सेक्रेटरी से सौ सौ [illegible] पचास रुपये ले जाता था। सेठ जी के सूट-बूट धारी सेक्रेटरी भी थे। जै[illegible]म निकालना होता था, उसी के अनुसार वे उस का भार अपने विशेष सेक्रेटरी को देते थे। कांग्रेस के मोर्चे को सम्हालने के लिये जो सेक्रेटरी था, वह खद्दरधारी था, और वीर हज़ारीलाल का उसी से साबका पड़ता था। रामचरित्र बाबू तो स्वयं सेठ जी से ही मिलते थे, और शायद उनका कुछ व्यापारिक सम्बन्ध भी था।

सेठ जी यह नहीं चाहते थे कि स्वतंत्रता प्राप्त होने से उन्हें जो खुशी हुई थी, उसे केवल धनियों तथा भद्र लोगों तक ही सीमित रक्खें, वे उसे गरीबों में भी बांटना चाहते थे। इसलिये जहां उन्होंने एक तरफ़ अपने धनी तथा भद्र मित्रों के लिये एक वृहत हाल में बहुत पुरतकल्लुफ़ अगणित कोर्सों की पार्टी का

आयोजन किया था, उसी प्रकार से उन्होंने ग़रीबों के लिये तेल की चार चार पूरियों तथा एक एक मुट्ठी बुंदिया की व्यवस्थाँ की थी।

कहना चाहिये कि सेठ अमीचन्द की हवेली ही इस समय शहर के सारे उत्सवों का केन्द्र स्थल था। हज़ारीलाल दिन भर का थका मांदा इसी हवेली के पास पहुँच गया। उसे हवेली की सजावट देख कर, विशेष कर रेशमी झंडे के नीचे महात्मा गांधी को चर्खा कातते देख कर उसे पहली बार बहुत खुशी हुई। वह अपनी थकावट और भूख प्यास भूल गया। बड़ी देर तक वह बिजली के बल्बों के उस चर्खे को और उसके सामने मंद मंद हंसती हुई गांधी जी की मूर्ति को देखता रहा। उसके मन में यह भरोसा हुआ कि कुछ भी हो यह व्यक्ति धोख़ा नहीं देगा। रामचरित्र बाबू या अन्य छोटे मोटे रामचरित्र तो उस के सामने कुछ नहीं हैं।

जब हाते के बाहर से उस चित्र को देखते देखते उस के पांव थक गये, तो वह अन्य लोगों के साथ हवेली के हाते में प्रवेश करने लगा। पर उसे फाटक पर रोक दिया गया। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि कई आदमी भीतर जा रहे थे, और उन्हें कोई नहीं पूछता था। फाटक के ऐन उस पार रामचरित्र बाबू रेशम की शेरवानी तया चूड़ीदार पायजामे में दिखलाई पड़े। वे सेठ जी की तरफ़ से लोगों का स्वागत कर रहे थे। जब हज़ारीलाल फाटक पर रोक दिया गया, तो शायद उन्होंने देखा, पर मुंह फेर लिया।

फाटक पर रोके जाने पर भी हज़ारीलाल आधे मिनट तक फाटक के सामने खड़ा रहा। इस पर उस व्यक्ति को दया आ गई जिसने उसे रोका था, या क्या बात हुई, पता नहीं, उसने कहा—तीन नम्बर फाटक से भीतर आओ।

हज़ारीलाल की समझ में नहीं आया कि इस फाटक और उस फाटक में क्या फ़रक है। पर वह बताये हुये फाटक से भीतर गया तो देखा तो ज़मीन

पर बैठे लोग खा रहे थे। न मालूम कहां कहां के लोग इकट्ठे थे। कोढ़ी, लंगड़े, लूले, अपाहिज इतनी बड़ी संख्या में हो सकते हैं, यह तो उसे आज ही मालूम हुआ। वहां बहुत से लोग हट्टे कट्टे और संडे मुसंडे भी इन लोगों में खाते पीते दिखाई पड़े।

ऊपर ही वह हाल था जिस में दावत का इंतज़ाम था। अभी दावत की तैयारियां हो रही थी। प्लेटों, कांटों, छुरियों को इधर से उधर रखने की आवाज़ मालूम हो रही थी। उसी हाल से या और कहीं से गाने की आवाज़ आ रही थी। हज़ारीलाल ने कान लगाये, यह रेडियो नहीं किसी स्त्री के गाने की आवाज़ थी। हां, साथ में सारंगी और तबला भी बज रहा था। गाना समाप्त हुआ तो बड़े ज़ोर की हंसी हुई। हजारीलाल ने सोचा ओ हो! ये लोग इतने ज़ोर से हंसते हैं, इनके फेफड़े फट नहीं जाते? क्यों न हंसें? ठीक तो है। आज न हंसेंगे, तो कब हंसेंगे? आज़ादी जो आयी है।

शायद हजारीलाल भी हंसा। इस पर किसी ने उसकी धोती के खूंट को पकड़ कर खींचा और एक प्रकार जबरदस्ती से बिठाते हुये कहा—'अबे! पागल है क्या? खड़ा खड़ा ताकता क्या है?'—

हज़ारीलाल बैठने पर मजबूर हुआ। वह बैठ भी नहीं पाया था कि एक आदमी ने आकर 'ले ले हाथ पसार' कहता हुआ उस के हाथ में चार तेल की पूड़ियां और मुट्ठी भर बुंदिया रख दी। वह इसके लिये बिल्कुल प्रस्तुत नहीं था, और न इस के लिये इच्छुक था। वह असमंजस में पड़ गया। इतने में बगल के उस आदमी जिस ने उसे पकड़ कर बैठाया था, बोला—खा, खा यह जगन्नाथ जी है। आज कोई जात पांत नहीं। हज़ारीलाल ने मुंह में बुंदिया रक्खी, तो उसे मीठी नहीं, बल्कि कड़वी सी लगी। उसका सारा अस्तित्व कड़ुवापन से भर गया था। पर यह कड़ुवापन उस के मुक़ाबिले में कुछ भी नहीं था, जो उसमें तब होता जब कि उसे इस समय मालूम होता कि ऊपर जो तवायफ़ सब का मनोरंजन कर रही थी, वह उसी की भूतपूर्व स्त्री थी।

मर्दुमखोर

केन्द्रीय जेल के कैदियों में उस दिन एक खबर से बड़ी सनसनी फैल गई। जेल में रोज़ नये नये कैदी जाते रहते थे, उन्हीं परिचित जुर्मों में—चोरी, डकैती, राहजनी, उठाईगीरी, बलात्कार इत्यादि। समय समय पर कुछ राजनीतिक कैदी भी आते रहते थे। अब भी दो-चार बम-पार्टी के लोग जेल में पड़े ही थे। कांग्रेसी आते थे और फिर साल छः महीने में छूटकर चले जाते थे। हां, बम पार्टीवाले कुछ टिकते थे।

खैर यह जो आदमी जेल में आया था, उसके सम्बध में लोगों ने जो कुछ सुना, उससे सभी कैदी आश्चर्य में पड़ गये। ऐसा तो कभी नहीं सुना गया। बंजू फाटक से सीधे यहीं आया था। उसने चिल्ला-चिल्लाकर अपने मेल के तीन कैदियों से कहा—'सुना बलखंडी, एक कैदी आया है जो मर्दुमखोर है।......

बैजू पक्का जानता था कि इस शब्द को कोई कैदी नहीं समझेगा, इसलिए जान-बूझकर इस शब्द का प्रयोग किया था। स्वयं वह भी घंटा भर पहले इस शब्द को नहीं जानता था। नायब साहब ने उस कैदी का टिकट देखकर कहा था '—अरे' यह तो मर्दुमखोर है। फिर स्पष्टीकरण करते हुये कहा था—यह आदमी खाता है!

बैजू पक्का ने तभी याद कर लिया था मर्दुमखोर। उस ने बलखंडी से कहा —'एक मर्दुमखोर पकड़कर आया है।'

बलखंडी ने पास आते हुए अनुनय के स्वर में कहा—मर्दुमखोर क्या?

बैजू के लिये यही तो मौका था सब कैदियों पर अपनी सर्वज्ञता का रोब बैठाने का। आत्मश्लाघा की हंसी हंसते हुये बोला—यही तो बात है। भई,

वह जो आया है न, वह आदमी खाता था।

यह बात कहना था कि आस पास के सब कैदी अपना अपना काम छोड़कर उसके पास आ गये। एक छोटी सी भीड़ इकट्ठी हो गई। सबके चेहरे पर उत्तेजना थी। रामदास नामक एक बूढ़े कैदी ने कहा—'जाओ बैजू, तुम हम लोगों को बना रहे हो। आदमी भी कोई खाने की चीज है। दुनिया में इतनी चीजों के रहते हुये आदमी को कौन खायेगा?'

एक बाईस साल की उम्र का पाकेटमार मीरसिंह बीच में बोल पड़ा—'पर मैंने सुना है कि आदमी का गोश्त बड़ा मीठा होता है।'

बैजू ने उसे डांटते हुये कहा—'चुप रह बे बेकार में बकता है। बाबा की बात पहले सुन तो ले।'

रामदास अपने जमाने में एक प्रसिद्ध डाकू था। वह इस जेल का सबसे पुराना कैदी था, सब कैदी उसकी इज्जत करते थे, बोला—मुझे जेलमें रहते तेईस साल हो गये कई जेल देख चुका पर ऐसा कोई कैदी तो नहीं देखा था।

सबने बूढ़े की बातों का समर्थन किया। अब सब लोग बैजू पक्का को उस कैदी के विषय में पूछने लगे—देखने में कैसा है क्या पहने है इत्यादि? यहाँ तक कि बैजू उकता गया। वह एकाएक भीड़ में से निकलते हुये बोला—अभी थोड़ी देर में यहीं आता होगा जी भरकर देख लेना। मैं जाता हूं फाटक पर, मेरी उधर ही ड्यूटी है।

बैजू तो चला गया पर कैदी उसी के सम्बन्ध में आलोचना करने लगे। मीरसिंह पाकेटमार ने सबको सुनाते हुये कहा—भई मैं तो अब यहां नहीं रहने का बीमार बनकर अस्पताल चला जाऊंगा कहीं वह मर्दुमखोर रात को मुझी को खा जायगा तो?

सभी यही बात सोच रहे थे। पर कई कैदी बड़े अकड़खां होते हैं। ऐसा ही एक १० साल की सजा पाया हुआ कैदी सहदेव बोला—हां तू ही एक खूबसूरत

है कि तुझे ही खायेगा। और अस्पताल तो तेरी ससुराल है कि मुंह से बात निकली और तू वहां गद्दे पर लेटा हुआ नज़र आयेगा। बेटा यह जेलखाना है जेलखाना!'

मीरसिंह ने कहा—खैर, अस्पताल न सही कोठरी में जाना तो अपने बस में है। जिस दिन वार्डर को गाली दे दी कोठरी पहुँच जाऊंगा।

सहदेव बोला—कोठरी कोई नवाबी थोड़े ही है चार दिन में सब रग-पट्ठे ढीले हो जायेंगे।

—हो जाएँ पर सही सलामत जिन्दा तो रहूंगा। यहां किसी दिन रात को उसे भूख लगी और उसने मुझे खाना शुरू किया तो बस कहीं का न रहूँगा। अभी तो चाचा कुछ खेला खाया है नहीं। तुम्हारी तरह कब्र में पांव लटकाये थोड़े ही बैठा हूं कि चलो मरने का कोई न कोई बहाना होगा ही—मर्दुमखोर खा जाय तो क्या हर्ज है? कुछ पुण्य ही होगा कि एक भूखे का पेट तो भरेगा।

सहदेव की उम्र ऐसी कोई अधिक नहीं थी, अधिक से अधिक ४५ थी। इस लिए कब्रमें पांव लटकाने की बात सुनकर उसे बड़ा क्रोध आया। बोला—मरना जीना तो भगवान के हाथ में है। सैकड़ों बूढ़े बैठे रहते हैं, और कल के लौंडे मर जाते हैं। पर मुझे यह पसन्द नहीं कि कोई कायरपन दिखावे। मर्दुमखोर है तो क्या कोई नाहर थोड़े ही है। खा गया होगा किसी अपाहिज को अकेले में पाकर। यहां तो दोनों जून डंड पेलते हैं। मर्दुमखोर तो मर्दुमखोर एक दफे शेर भी आजाय तो उसको भी मार गिराऊं।

कहने को तो वह ऐसा कह गया पर भीतर से उसका हृदय भी धकुर पुकुर कर रहा था! कौन भला यह पसन्द कर सकता था कि उसे खा डाला जाय। यों तो ये कैदी निडर थे पर मर्दुमखोर के नाम से सभी कुछ न कुछ घबरा रहे थे।

आखिर दो घंटे में वह मर्दुमखोर बैरक में आ भी गया। बैजू पक्का और वार्डर साथ में थे। सब कैदी एक होकर उसे घेरकर खड़े हो गये। वार्डर ने बहुतेरा

कहा—जाओ सब अपने अपने काम पर यहां खड़े होने का कोई काम नहीं।

इस पर कैदी कुछ पीछे हट गये। वृत्त और बड़ा हो गया, पर कोई हटा नहीं। सब लोग मर्दुमखोर को आखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे। पर उसे देखकर सब लोग निराश हुये। कहां, इसमें तो कोई भी बात अनोखी नहीं थी। साधारण मनुष्यों की तरह आंख, कान, नाक। हां, दाढ़ी कुछ बढ़ी हुई थी। पर ऐसी तो कई कैदियों की रहती है। खास बात क्या है? उसे सब लोग देख रहे थे, वह किसी को नहीं देख रहा था सिर नीचे किये हुये था। पलकें भी धीरे-धीरे गिर रही थीं। पीला इतना था कि मालूम होता था, चिता पर से किसी मुर्दे को लाकर खड़ा कर दिया गया हो। पर आंखें अजब तरीके से अलसाई हुई, बुझी हुई सी, पर खूँख्वार थीं, जैसी मशान के कुत्तों की होती हैं।

बैजू ने सब कैदियों पर अपना रोब गालिब करने के लिये उन्हीं शब्दोंको उन्हीं लहज़ों में कहा, जिनको जिस लहजे में नायब साहब ने अभी थोड़ी देर हुये बैजू तथा अन्य पक्कों और वार्डरों से कहा था। बोला—देखो जी, इसके टिकट पर न मालूम क्या क्या खुराफात लिखा है, इसे आदमियों में न रक्खा जाय, इस पर दिन रात देखरेख रक्खी जाय, वगैरह वगैरह। पर यहां इससे कौन डरता है इसे मामूली कैदी की तरह रक्खा जाय।

वार्डर ने देखा कि वह मुलाजिम है, पक्का कैदी होकर भी उससे बाज़ी मार रहा है। इस लिए उसने कहा—जहां इससे दस दिन अच्छी तरह चक्की पिसाई, इसका दिमाग ठिकाने आ जायगा। मर्दुमखोरी वर्दुमखोरी सब भूल जायगी। यहां कई ऐसे देख चुके।

वार्डर की बात सुनकर मर्दुमखोर ने धीरे से आंख उठाकर उसकी तरफ देखा, पता नहीं, उस दृष्टि में क्या बात थी। वार्डर यंत्रचालित की तरह एक कदम पीछे हट गया।

बैजू ने कहा—डाक्टर ने तो इसे चक्की के लिये पास नहीं किया, बान बटेगा।

वार्डर बोला—'हां, बान ही बटे, कुछ तो करना पड़ेगा।' मर्दुमखोर को बैरक के छुट्टीवान के सुपुर्द कर वार्डर चला गया। पक्के को तो इधर ही रहना था, वह यहीं रहा।

छुट्टीवान ने मर्दुमखोरको बता दिया कि यह तुम्हारे सोने की जगह है, और एक कब्र-सा चबूतरा उसे दिखा दिया। मर्दुमखोर उस कब्रनुमा चबूतरे को देखकर जैसे कुछ हँसा, पर कुछ बोला नहीं। उसने देखा कि बैरक में सौ से ऊपर इस तरह की कब्रें हैं। वह बताये हुये चबूतरे पर बैठ गया।

छुट्टीवान तथा एक बदलती हुई भीड़ उसके साथ लगी रही पर उसने किसी की तरफ ध्यान नहीं दिया। आंखें मूँद लीं और ऊँघने लगा। छुट्टीवान ने चाहा कि उससे कुछ बात करे। बोला—ए जी, सुनते हो, तुम्हारा नाम क्या है?

कुछ उत्तर नहीं।

—ए जी मर्दुमखोर, तुम्हारा नाम क्या है? तुम अभी से ऊँघते क्यों हो?

मर्दुमखोर शब्द से वह व्यक्ति चौंक पड़ा। फिर उसने आंखें खोली, पर पूरी आखें खुलने के पहले ही उसने फिर बन्द कर लीं। और पहले की तरह ऊँघने लगा, जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

सब कैदी सब तरकीबें करके हार गये, पर कोई मर्दुमखोर को बुलवा न सका। कैदियों ने इस पर यह सिद्धान्त रखा कि यह गूँगा है, पर दूसरे लोगों ने कहा कि यह गूँगा हर्गिज़ नहीं है, किसी कारण से नहीं बोलता। यद्यपि वह बोलता नहीं था, पर उसे जो कुछ भी कहा जाता था, उसका ठीक पालन करता था। काम के समय काम करता, खाने के समय खाता, सोने के समय सोता।

क़ैदी उससे बहुत कुछ बातों की आशा करते थे, पर वे निराश हुये। फिर भी सब चौकन्ने रहते थे। मीरसिंह सचमुच अस्पताल चला गया था।

पर सहदेव-जैसे लोग कहने लगे थे—बिल्कुल गौ आदमी है। किसी दारोगा ने नामवरी के लिये इसका झूठ-मूठ चालान कर दिया होगा। यह साला आदमी क्या खायेगा? इसे बाहर छोड़ दिया जाय, तो गाँव के कुत्ते उल्टे इसे ही खा जायँगे।

एक सिद्धान्त यह भी बना था कि यह अघोरी या कोई सिद्ध है। ऊँघता नहीं, बल्कि कालीमाई का ध्यान करता है। जो कुछ भी हो, उसके सम्बन्ध में तरह-तरह के मत बन गये थे। उसका नाम तो लोगों ने मर्दुमख़ोर रख ही दिया था। इसी नाम से लोग उसका उल्लेख करते थे। यों टिकट पर उसका कोई और नाम भी था।

क़ैदियों ने इस बात को मान-सा लिया था कि मर्दुमख़ोर कभी बोलेगा नहीं। उसके गूँगे होने के सम्बन्ध में भी वे कुछ निश्चित-से हो चुके थे। उसके विषय में क़ैदियों की दिलचस्पी कुछ घटती सी जा रही थी। अब उससे कोई डरता नहीं था। अवश्य मीरसिंह (जो अस्पताल से लौट आया था) जैसे आदमी अब भी कहे जा रहे थे कि एक-न-एक दिन यह गुल खिलायेगा, देखते रहो। पर इन बातों पर कोई ध्यान नहीं देता था। मर्दुमख़ोर को लोग एक सीधा सादा क़ैदी समझते थे।

पर एक दिन एक अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना हुई। बैरक में एक नया क़ैदी आया था। लोगों ने देखा कि बैरक के हाते के एक किनारे खड़े होकर मर्दुमख़ोर उस नये क़ैदी से बातें कर रहा है। बातें भी क्या अपनी हिन्दी में। पहले एक ने देखा, उस ने दो चार को बुलाया। इस प्रकार पास ही एक छोटी सी भीड़ जमा हो गई। यहाँ तक कि वार्डर भी आ गया, मानो बात करना कोई अप्राकृतिक बात हो। जब मर्दुमख़ोर ने यह कैफ़ियत देखी, तो उसने बात बन्द कर दी और वह एक तरफ़ को चला गया।

लोगोंने चाहा था कि मर्दुमखोरसे कुछ पूछें, पर वह तो बिना किसी की बात सुने ही चला गया, मानो वह बहरा हो। तब लोगों ने उस नये क़ैदी को पकड़ा। सहदेव ने आगे बढ़कर पूछा—क्यों सुलतान, तुम इसे बाहर से जानते हो?

—नहीं—उस क़ैदी ने कहा।

सब लोग उसे सन्देह की दृष्टि से देखने लगे। सहदेव ने चिढ़कर पूछा—तो फिर तुमसे बात क्या कर रहा था?

सुलतान बोला—मैं तो इसे नहीं जानता, पर यह मुझे जानता है। बातों से मालूम होता है कि यह हमारी ही तरफ का है।

सुलतान के इस वक्तव्य से क़ैदियों को बड़ी निराशा हुई। एक सुराग़ हाथ लगकर भी निकला जा रहा था! सब ने बारी बारी से उससे पूछ ताछ की, पर कोई नई बात मालूम नहीं हुई। तब वे निराश होकर बैठ गये। एकरस क़ैदी जीवन वैसे ही चलने लगा।

क़ैदियों में यह आशा थी कि शायद मर्दुमखोर फिर सुलतान से बात करे, पर उसने इस विषय में लोगों को निराश किया। क़ैदियों के सिखाने पर सुलतान ने खुद जाकर उससे बात करने को चेष्टा की, पर मर्दुमखोर ने, जैसा कि उसकी आदत थी, मुड़कर भी उसकी तरफ़ नहीं देखा। सुलतान ने पूछा—बाबा तुम कौन हो? बातचीत से मालूम होता है, हमारी ही तरफ़ के कोई हो।

यह प्रश्न सुनकर मर्दुमखोर के चेहरे पर क्रोध की रेखाएँ प्रकट होकर विलीन हो गईं, पर अन्त तक वह कुछ बोला नहीं। लोगों ने उसके सम्बन्ध में जानने की इच्छा छोड़ दी।

जब नये आदमी को आये हुये दो महीने हो रहे थे, उस समय एक

घटना हुई। मर्दुमख़ोर ने सुलतान को मार डाला था और उसका सिर उधड़ा हुआ सारे पाखाने में फैला था। मर्दुमख़ोर के मुंह से खून निकल रहा था। उसकी आँखें लाल लाल हो रही थीं। उसके हाथ में एक छोटा सा चाकू था। यह दृश्य देखकर कई कैदियों को तो गश आ गया।

फौरन पगली बजी, और बड़े से लेकर छोटे तक सब जेल कर्मचारी, जो जिस हालत में थे, उसी हालत में दौड़ आये। बैरक का ताला खोला गया। कैदी जोड़े जोड़े बैठाये गये और मर्दुमखोर पकड़ लिया गया। उसने ज़रा भी प्रतिवाद नहीं किया, सीधे से गिरफ्तार हो गया। उसकी तलाशी ली गई, पर कुछ नहीं निकला। वह छोटी सी छुरी तो सामने ही पड़ी थी।

फौरन उस बैरक को ख़ाली कर कैदियों को अन्य बैरकों में बाँट दिया गया। सुलतान की लाश जहाँ की तहाँ पड़ी रही। पुलिस के आने की प्रतीक्षा में लाश को वैसा ही छोड़ दिया गया। मर्दुमखोर को पीछे से हथकड़ी डालकर एक खाली कोठरी में बन्द कर दिया गया।

सवेरे जब पुलिस आयी, तो पुलिसवाले जेलर को दोष देने लगे कि मर्दुमखोर को कोठरी में रखना चाहिये था। जेलर कह रहा था—मैं क्या करता साहब, इसके टिकट पर जहाँ यह लिखा था कि यह आदमी का गोश्त खाने के कारण कैद किया गया है, वहीं यह भी तो लिखा था कि हवालात में इसने तीन बार खुदकशी की कोशिश की है। ऐसे झुकाववाले कैदी को मैं कोठरी में कैसे रखता?

मर्दुमखोर को बुलाया गया। उसके मुंहपर अभी लाल खून लगा हुआ था। चेहरा देखकर डर मालूम होता था। हथकड़ियां खोल दी गईं। अब उसकी पूछ-ताछ शुरू हुई। दारोगाजी वहीं थे, जिन्होंने उसे सज़ा कराई थी। बोले—यहाँ भी आकर पाजीपनसे बाज़ नहीं आये?—कहकर दूसरी तरफ़ देखते हुये जेलर से बोले—मालूम होता है, आदमी का गोश्त बहुत अच्छा होता है। जिसके मुंह लग गया, उससे छूटता नहीं।

जेलर ने कहा—हाँ, कुछ ऐसा ही मालूम देता है।

दारोगा ने फिर मर्दुमखोर से कहा— पर बाहर तो तुम मुर्दों का गोश्त खाते थे, यहाँ आकर कौन सी नई लत पाल ली ? यहाँ तो तुमने जिन्दे आदमी को खा डाला।

दारोगा मर्दुमखोर से कुछ उत्तर की आशा नहीं रखते थे ; पर यह क्या मर्दुमखोर हिला और बोला—हुजूर, मुर्दे खाकर इसी की आदत डाल रहा था।

सब लोग दंग रह गये। एक तो मर्दुमखोर कभी बोलता नहीं था, वह बोला ; दूसरे उसने ऐसी बात कही, जिससे सब चक्कर में आ गये। दारोगा ने एक पान जेलर को बढ़ाते हुये और एक खुद खाते हुये कहा—काहे की आदत, साफ-साफ कहो ?

—यही आदमी खाने की आदत।

—आदमी भी कोई खानेकी चीज़ है ?

मर्दुमखोर ने बिना कुछ प्रयास के ही उत्तर दिया—क्यों नहीं हुजूर ? अगर जानवरों में कोई खाने लायक है, तो वह आदमी ही है। बकरा, मुर्गा या मछली किसका क्या नुकसान करते हैं ; पर हुजूर आदमी न कर सके, ऐसा बुरा काम नहीं।

इतना कहकर मर्दुमखोर अप्रत्याशित रूप से सिसकने लगा। जब उसकी सिसकियां बन्द हुई, तो उसने धीरे-धीरे अपने सम्बन्ध में जो रोमांचकारी कहानी बताई, वह यों है :

मर्दुमखोर का असली नाम रामतेज था। वह वर्षों से सपरिवार बम्बई में रहता था। वहाँ कोई छोटी-मोटी दुकान थी। वर्षों के बाद सोचा कि अपने गाँव जाकर देखे कि वहां क्या हो रहा है। इसके अलावा इच्छा थी कि गंवई-गाँव में कुछ जमीन खरीदकर एक छोटा-सा पक्का मकान बनावे। इसी टोह में था

उसके परिवार में उसके अलावा उसकी स्त्री और दो छोटे-छोटे बच्चे थे।

एक दिन वह अपनी स्त्री के साथ अपने पुराने घर के सामने खड़ा था कि सामने से एक नौजवान गुज़रा। वह बहुत अच्छे कपड़े पहने हुये था—रेशम का बुशशर्ट और धोती। उसके पैरों में कीमती जूते थे। उसके पीछे पाँच-छै लट्ठधारी व्यक्ति थे। एक के पास शायद पिस्तौल भी थी। बाद को मालूम हुआ कि यह व्यक्ति उधर का जमींदार था। खैर, कोई बात नहीं। बम्बई में उसकी दुकान के सामने से बड़े-बड़े सेठ और साहब रोज़ ही निकलते थे। उसने परवाह नहीं की।

पर थोड़ी ही देर में जमींदार का एक कारिन्दा आया, तो उसका माथा ठनका। कारिन्दे ने बिना किसी भूमिका के कहा—तेरा ही नाम रामतेज है? चल तेरा बुलौवा है।

रामतेज कुछ सोचने लगा कि जाय या नहीं; पर उस कारिन्दे ने रुखाई के साथ कहा—चल, इधर-उधर क्या देखता है? सीधे से चल, नहीं तो बाँधकर ले चलूँगा। मेरा नाम कल्लन है।

रामतेज अकड़ गया, बोला—कोई चोर-बदमाश थोड़े ही हूं, नहीं जाता। तू बड़ा बना है तीसमारखाँ! गवर्मेण्ट का राज है या तेरा?

इसपर कहा-सुनी हो गई। कल्लन उसे मारने के लिये आगे लपका। गाँववाले आ गए। बीच-बचाव हो गया। यह तय हुआ कि कल्लन चला जाय, रामतेज अभी खुद जमींदार के यहाँ पहुँचेगा। यही हुआ। रामतेज खुद गया। उसने जाकर जमींदार को सलाम किया।

जमींदार ने कुछ नहीं कहा, पर कल्लन बोला—हुजूर, यह बम्बई से कुछ रुपये कमा कर आया है, इसपर इसे बड़ा ग़रूर हो गया है। एकदम सरकश हो गया है। आज जब बुलाने गया, तो लगा हुजूर की शान में गुस्ताखी के अलफ़ाज़ बकने।

रामतेज ने कहा—मैंने तो कुछ नहीं कहा ।

ज़मींदारने न कल्लन की बातों पर ध्यान दिया, न रामतेज की सचाई पर । नशे में उसकी आँखें लाल हो रही थीं । बोला—असली बात पर आओ ।'

कल्लन गला साफ करके बोला—और हुजूर, यह बम्बई से एक मुसम्मात को भगाकर लाया है, वह बहुत हसीन है, कोई सेठानी है ।...

रामतेज ने बहुतेरा कहा कि वह स्त्री सेठानी नहीं, इधर के ही एक गाँव की लड़की है और उसकी शादी में इस गाँवके कई आदमी—जैसे लाखनपाल, हरनाम, सुखई पाँडे—मौजूद थे ; पर किसी ने उसकी बात नहीं सुनी । उसे पकड़कर बगल के एक अँधेरे कमरे में बन्द कर दिया गया । थोड़ी देर में उसकी स्त्री अपने बच्चोंके समेत पकड़ मँगाई गई । वह बेचारी बच्चों के साथ घबराई हुई आई । दुष्टों ने उससे आकर कहा था—तुम्हारे पति बेहोश हो गये हैं, जल्दी चलो, वे तुम्हें और बच्चों को देखना चाहते हैं । वह आकर कहने लगी—कहाँ हैं वे ?

पर वहाँ उसकी बातों का उत्तर कौन देता ? रामतेज अपनी कैद से यह सारी बात देख रहा था, पर क्या करता । जमींदार ने कल्लन से इशारा किया । वह रामतेज की स्त्री से बोला—देखो हमें पता लगा है, तुम बम्बईकी सेठानी हो और रामतेज तुम्हें भगा लाया है ।

वह बेचारी बोली—नहीं, नहीं, मैं कोई सेठानी नहीं हूं । वे कहां हैं ?

वे कहते रहे, यह सेठानी है, और वह कहती रही, वह सेठानी नहीं है । अन्त में कल्लन बोला—जब तुम उसके साथ रह सकती हो, तो हुजूर के साथ भी रह सकती हो । देखो, हुजूर कितने अच्छे हैं, तुमको मालामाल कर देंगे ।

रामतेज की स्त्री समझ गई कि गुण्डों से पाला पड़ा है । वह घर जाने के लिये कहने लगी । पर वहाँ उसे घर कौन जाने देता ? वह पकड़ ली गई, और दुष्टों ने उसे तथा जमींदार को बगल के एक दूसरे कमरे में बन्द कर दिया । बच्चे बुरी तरह रोने लगे । थोड़ी देर में जमींदार कमरा खोलकर हाँफता हुआ

निकला, बोला—कल्लन, इसने तो मेरे हाथ दाँतों से काट लिये, राक्षसी है, कोई तरकीब करो।

कल्लन बोला—हजूर, अभी करता हूं। बदमाश औरत है, उसी पेंच से कब्ज़े में आयगी। कहकर उसने रामतेज की स्त्री को बाहर निकाला। फिर उसके छोटे बच्चेका गला दाबता हुआ बोला—अभी इसे मारता हूं, नहीं तो हुजूर की बात पर राज़ी हो जा।

रामतेज की स्त्री बच्चे को बचाने दौड़ी, पर पकड़ ली गई। इतने में एक दूसरे कारिन्दे ने शायद यह दिखाने के लिये कि वह कल्लन से पीछे नहीं है, लपका, और उसने बड़े बच्चे का गला उसी तरह दबाया। दोनों बच्चों की आखें निकल-सी आईं। रामतेज की स्त्री बुरी तरह चिल्ला रही थी।

कल्लन बोला—राज़ी हो जा, तो बच्चे छोड़ दिये जायंगे, नहीं तो अभी मार डालता हूं।

स्त्री बोली—हां, हां, छोड़......

कल्लन बोला—ठीक बोल, कहीं फिर बदमाशी तो नहीं करेगी ?'

स्त्री रोकर बोली—नहीं

स्त्री उसी कमरे में गई। पीछे-पीछे डरते हुये ज़मींदार साहब गए। इधर जब वे लोग चले गये, तो मालूम हुआ कि छोटा बच्चा तो मर गया। तब कल्लन बोला—यह तो बड़ा बुरा हुआ। फिर सोचकर बोला—कोई बात नहीं। अभी तो कइयों को मारना पड़ेगा।

इतने में उस कमरे से ज़मींदार साहब ने शराब मँगवाई। शराब उसी कमरे में रहती थी, जिसमें रामतेज बन्द था। एक आदमी जल्दी से शराब की बोतल निकालकर चला गया। उसने रामतेज को नहीं देखा। गड़बड़ में दरवाजा बाहर से बिना बन्द किये वह चला गया। अब रामतेज दरवाजे के पास खड़ा होकर सोच रहा था कि उसे क्या करना चाहिये।

कल्लन कह रहा था—अब यह मर गया, तो इस बड़े लड़के को भी मारना पड़ेगा, नहीं तो यह बाद को गवाह बनेगा। फिर सोचकर बोला—मेरी तो राय यही है कि बाकी तीनों को मार डालो। उस सुसरी को चार-छै दिन रखकर पर इसे और उसका क्या नाम है, रामतेज है, उसे अभी खत्म करो। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। कह देंगे, सब बम्बई चले गये।

सब कारिन्दों ने दाद दी, बोले—वाह भई, क्या खूब कही, बम्बई चले गये। कोई शक भी नहीं करेगा। चलो फिर काल करे, सो आज कर......

वे लोग दूसरे बच्चे को मारने में टूट पड़े। रामतेज समझा कि अब उसकी बारी है वह दरवाज़ा खोल कर भाग निकला।

इतने में लोग रामतेज जिस कमरे में था, उसमें पहुँचे। पर उसमें से उसे भगा हुआ पाकर वे लोग उसे खोजने बाहर निकले। रामतेज अभी दो सौ क़दम भी नहीं जा पाया था कि उसने पीछे हल्ला सुना। वह क़ब्रिस्तान के पास था। उसे क्या सूझा कि लपक कर एक बड़े पेड़ पर चढ़ गया। खोजनेवाले हल्ला करते हुये निकल गये; पर वह डर के मारे पेड़ से नहीं उतरा। ख़ैरियत यह थी कि पेड़ बहुत ऊँचा और घना था और क़ब्रिस्तान होनेके कारण कोई उधर से जाता नहीं था।

सात दिन तक रामतेज पेड़ पर बना रहा। इस बीच में उसने देखा, क्यों कि वहाँ से चारों तरफ एक मील तक अच्छी तरह दिखाई देता था कि कल्लन उसी रात को बच्चों की लाशों को नदी में डाल आया। फिर चार पाँच दिन बाद वे रातके अँधेरे में एक बड़ा-सा कुछ ले जा कर नदी में छोड़ आया। वह निश्चय ही उसकी स्त्री थी। वह सब कुछ-देखता रहा, पर जैसे किसी बात से उसका कुछ सम्बन्ध नहीं रह गया था। वह पेड़पर रहता और अपने को एक भूत समझता। जब भूख लगती, तो पत्ता आदि चबा लेता। अन्त में एक दिन उसने सोचा कि अब उतर चलना चाहिये।

सन्ध्या समय कुछ लोग मुर्दा गाड़ने आए। ऊपर से उसने देखा, जो लोग आए हैं, उनके साथ कुछ खाने की चीज है। वे ऐन पेड़ के नीचे थे। उसे शरारत सूझी, उसने एक डाल तोड़कर फेंक दी। नीचे के लोग चौंके। तब उसने एक और डाल फेंकी, फिर उसने खाँसा। खाँसी सुनकर नीचेके लोग चिल्ला-चिल्ला कर कुरान के मंत्र पढ़ने लगे। तब उसने फिर खाँसा। नीचे के लोग जैसे-तैसे मुर्दे पर थोड़ी मिट्टी डालकर भाग गये। जाते हुये एक ने कहा—मैंने कहा था न, रातको मत आओ, यहाँ जिन रहते हैं।

जब सब लोग चले गये, तो रामतेज उतरा और चारों तरफ खाना ढूँढ़ने लगा। पर कहीं कुछ नहीं मिला, तो उसने मुर्दे को खोज कर देखा कि वहाँ उसके साथ शायद कुछ हो। मुर्दे को टटोलते-टटोलते उसके हाथ नरम-सा कुछ लगा। *चलो डबल रोटी है। मुसलमान इसे बहुत खाते हैं। पर हाथ में क्यों* नहीं आ रही है। क्या टाँके लगा कर जोड़ गए हैं। शायद। अच्छा तो जोर लगाया जाय। पर यह तो बहुत बुरी तरह टँका है। अच्छा तो एक, दो, तीन। हाथ में कुछ हिस्सा आया। उस ने उसे मुंह में रखा। स्वाद अच्छा नहीं था। पर साथ दिन की भूख में स्वाद कौन देखता है? वह खाता गया एक कौर, दो कौर, तीन कौर। जब वह पेट भर खा गया,तो उसे पता चला कि वह अब तक जो खा रहा था, वह डबल रोटी नहीं, मुर्दे के शरीर को ही नोंच-नोंच कर खा रहा था।

जब खा चुका, तो खा चुका। घृणा उसमें रह नहीं गई थी। वह फिर पेड़ पर चढ़ गया। भूत या जिन बनकर रहना उसे पसन्द था, पर मनुष्यों की बस्ती में लौटते हुये अच्छा नहीं मालूम होता था। जब हिम्मत बढ़ी, तो एकाध दिन नदी में पानी पीने भी निकल गया। धीरे-धीरे उसका रंग काला पड़ गया और कपड़े फट गये। तब उसने एक मुर्दे का कपड़ा ले लिया। उसके मनमें बस एक तमन्ना थी कि जमींदार को पावे, तो मार डाले, पर उसे जब भी देखा, एक मण्डली में। फिर भी वह प्रतीक्षा करता रहा। उधर मुर्दे खानेका कार्यक्रम चलता

रहा । एक दिन वह रात के समय मुर्दा खाकर नदी में पानी पीने गया था, तो वहाँ शक में गिरफ्तार हो गया। तलाशी लेने पर उसकी जेब से मनुष्यकी हड्डी निकली। इसी पर उसे मर्दुमखोरी में सजा मिल गई। तब से वह जेल में था।

अपनी कहानी का उपसंहार करते हुये उसने कहा—जमींदार को तो मैं मार न सका, पर मुझे खुशी है कि कल्लनको मैं सजा दे सका।'

पुलिस के दारोगा ने पूछा—कल्लन कौन ?

—यही सुलतान। इसने अपना नाम बदलकर सुलतान कर लिया है। अफसोस है कि मैं जमींदार को मार नहीं सका !

दारोगा ने कहा—हाँ, मैं भूल गया। इसका एक नाम कल्लन भी है। मुझे बताना तो नहीं चाहिये, पर वह जमींदार मर गया है कैसे मरा, पता नहीं ; पर बताया यही गया कि शिकार में गया हुआ था, वहाँ से नहीं लौटा। लोग यह शक करते हैं कि शेर खा गया। पर खुदा जाने। वह मर गया, तभी तो कल्लन को सजा हो सकी। खैर।

फिर भी रामतेज पर मुकदमा चला और यथासमय फाँसी की सजा हुई। मर्दुमखोर समाज के न्याय का यही रूप था !